* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

04 अगस्त, 2023
सावन, कृष्ण पक्ष, तृतीया
संवत 2080
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

रांची
शुक्रवार, वर्ष 08, अंक 285

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

प्याज की बदबू के कारण एअर इंडिया का विमान लौटा, कोच्चि से शारजाह जा रहा था, 175 यात्रियों को दूसरी फ्लाइट से भेजा गया

विधानसभा का मानसून सत्र : नकल पर नकेल कसने की तैयारी

झारखंड प्रतियोगिता परीक्षा विधेयक पास

- विधायकों के आग्रह पर दो संशोधन किये गये
- सत्ता पक्ष और विपक्ष के सदस्यों ने रखी अपनी बात

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के पांचवें दिन गुरुवार को सदन से झारखंड प्रतियोगिता परीक्षा विधेयक 2023 पारित हो गया। इससे पूर्व सत्ता पक्ष और विपक्ष के सदस्यों ने इस विधेयक पर अपने-अपने विचार रखे। विपक्ष ने इसे हड़बड़ी में लाया हुआ विधेयक बताया और प्रवर समिति को सौंपने की बात कही। सत्ता पक्ष की तरफ से दो संशोधन की बात रखी गयी। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और संसदीय कार्य मंत्री आलमगीर आलम ने विधेयक पर सरकार का पक्ष रखा। इसके बाद दो संशोधन करते हुए विधेयक को पारित कर दिया गया।

क्या है विधेयक में : विधेयक में मूल रूप से राज्य में प्रतियोगिता परीक्षा में होने वाली गड़बड़ी पर नकेल लगाने का प्रावधान किया गया है। इसमें परीक्षार्थी, एजेंसी, परीक्षा लेने वाली संस्था आदि सभी का अलग-अलग दायित्व दिखाया गया है। इसमें किसकी क्या जिम्मेदारी है, कानूनन वह किस दायरे में आयेंगे, इसकी व्याख्या की गयी है। नियम का उल्लंघन करने पर दंड का प्रावधान किया गया है। यह प्रावधान राज्य लोक सेवा आयोग, कर्मचारी चयन आयोग और भर्ती एजेंसियों द्वारा आयोजित होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं, राज्य सरकार के लोक उपक्रमों द्वारा आयोजित परीक्षा के अलावा निगमों और निकायों द्वारा आयोजित होने वाली परीक्षाओं में लागू होगा।

विधेयक पर पक्ष और विपक्ष का तर्क : विपक्ष ने विधेयक पर चर्चा के दौरान इसमें कई खामियां गिनायीं और प्रवर समिति को सौंपने की मांग रखी। इस पर विनोद सिंह, अनंत ओझा, डॉ लंबोदर महतो, अमर बाउरी, नवीन जायसवाल और अमित मंडल ने अपना तर्क दिया। डॉ लंबोदर महतो ने कहा कि राज्य में झारखंड परीक्षा संचालन अधिनियम 2001 है, तो इसकी आवश्यकता क्यों। झारखंड प्रतियोगिता परीक्षा विधेयक 2023 को काला कानून कहते हैं। अमर बाउरी ने कहा कि कानून बनाने के पीछे की मंशा जरूर अच्छी होगी। इसका विषय छात्रों को डराने के लिए है। इसमें जो प्रावधान है, उसके अनुसार सजा ऐसी है, जैसा मर्डर में नहीं होता। नवीन जायसवाल ने इसे हड़बड़ी में लाया हुआ विधेयक कहा। अमित मंडल ने कहा कि यह विधेयक अंग्रेजों के रोलैट एक्ट की तरह है। प्रदीप यादव ने भी इस विधेयक में संशोधन करने की बात कही। उन्होंने कहा कि छात्रों के लिए कठोर कानून बनाये गये हैं। सजा का इतना कठोर प्रावधान नहीं होना चाहिए।

विधेयक हड़बड़ी में नहीं, बल्कि सोच विचार कर लाया गया: हेमंत सोरेन

रांची (आजाद सिपाही)। सदन में सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि इस विधेयक पर सदन की भावना से असहमत नहीं हूं और समझता भी हूं। विधेयक को लेकर विपक्ष सवाल खड़े कर रहा है। सरकार की यही सोच है कि यही डर और भय संस्थाओं में हो, छात्रों में हो, जो इसमें शामिल होते हैं। किसी एक की वजह से लाखों क्यों परेशान हों। हम कोई भी फैसला लेते हैं, साधारण चीजों में भी, जैसे अगर हम पुराना कंप्यूटर बदलकर नया लाते हैं, तो हमारे मन में कई सवाल होते हैं। नया सॉफ्टवेयर कैसा होगा, हम काम कर पायेंगे या नहीं, लेकिन समय के साथ आप सामंजस्य बना लेते हैं और काम करते हैं। यह विधेयक हम सिर्फ लेकर नहीं आये हैं, बल्कि दूसरे राज्यों में भी है। यह विधेयक हड़बड़ी में नहीं लाया गया है, बल्कि सोच-विचार कर लाया गया है। हम नौजवानों के भविष्य को सोच कर कानून बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि पहले यहां की नौकरियों में 75 फीसदी सीटों पर बाहरी आ जाते थे। अब यहां के युवाओं को इससे अधिक मौका मिलेगा। यह विधेयक केवल झारखंड ही नहीं, भाजपा शासित राज्यों में भी लाया गया है। सदन में विधेयक का विरोध कर रहे भाजपा के विधायकों को नसीहत देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि विपक्षी विधायकों को भी उन प्रावधानों को भी पढ़ना चाहिए। हमलोगों ने तो कड़ी सजा को बहुत कम किया है। राज्य में 20 सालों तक भाजपा का राज रहा। इन्होंने नौजवानों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया। इस विधेयक में सरकार ने ऐसा प्रावधान किया है कि परीक्षा संचालन में लगी एजेंसी, छात्र, जो भी कदाचार में शामिल होगा, उसके खिलाफ कार्रवाई होगी। एक परीक्षार्थी कदाचार करता है और उसका असर लाखों के भविष्य पर पड़ता है। झारखंड गठन के बाद पहली बार यहां के छात्रों के हित में इतना अहम विधेयक लाया गया है। इससे यहां के छात्रों के अधिकार का संरक्षण होगा।

आलमगीर आलम ने रखी सरकार की बात

विधेयक को प्रवर समिति में भेजे जाने की बात का जवाब संसदीय कार्यमंत्री आलमगीर आलम ने दिया। उन्होंने कहा कि इस विधेयक का उद्देश्य राज्य के बच्चों को अवसर देने के लिए है। परीक्षा के दौरान जो गलत प्रैक्टिस होता है, उसे इस तरह के कड़े कानून से ही रोका जा सकता है। यह सरकार का सराहनीय कदम है। यह विधेयक केवल छात्रों के लिए नहीं, बल्कि इससे जुड़ी तमाम एजेंसियों को ध्यान में रख कर लाया गया है। परीक्षा के दौरान गलत प्रैक्टिस को नहीं रोका गया, तो यहां के बच्चों के हितों की रक्षा नहीं हो सकेगी। उन्होंने कहा कि इसके दायरे में परीक्षा एजेंसी से लेकर कोचिंग संस्थान तक आते हैं, जिन्हें दंड दिया जायेगा। इस विधेयक पर विचार सत्र न्यायालय के द्वारा किया जायेगा। इसमें सभी बातों को ध्यान में रखा गया है। संशोधन पर विचार किया जायेगा। ऐसे में इस विधेयक को प्रवर समिति को न भेज कर इसे पारित किया जाये। इसके बाद तमाम संशोधनों पर विचार करने के बाद विधानसभा अध्यक्ष ने बिल को संशोधन के साथ पास किया।

विधेयक की मुख्य बातें

- चोरी करने या करवाने में पकड़े जाने पर एक साल की सजा होगी। चोरी करने वाले परीक्षार्थियों को दी जाने वाली सजा का प्रभाव इतना अधिक होगा कि उनकी नौकरी करने की उम्र सीमा ही खत्म हो सकती है। पांच लाख रुपये तक का दंड लगाया जा सकता है। दंड की रकम नहीं चुकाने पर अतिरिक्त नौ महीने की सजा तक हो सकती है।
- परीक्षार्थी के दूसरी बार पकड़े जाने पर तीन साल की सजा होगी। परीक्षार्थी के खिलाफ कोर्ट में आरोप पत्र दायर होने के बाद वे दो से पांच साल तक परीक्षा में शामिल नहीं हो सकेंगे। न्यायालय द्वारा सजा होने पर संबंधित परीक्षार्थी 10 साल तक प्रतियोगी परीक्षा में शामिल नहीं हो सकेगा।
- परीक्षा में शामिल कंपनी या एजेंसी द्वारा परीक्षा की गोपनीयता भंग करने, प्रश्न पत्र लीक करनेवालों को कम से कम 10 साल और अधिकतम आजीवन कारावास की सजा होगी। एक करोड़ से लेकर दो करोड़ तक दंड लगेगा। दंड की रकम नहीं चुकाने पर अतिरिक्त तीन साल के कारावास तक सजा हो सकती है।
- इस विधेयक के दायरे में परीक्षार्थी के अतिरिक्त परीक्षा प्रक्रिया में शामिल होने वाली एजेंसियां, सरकारी कर्मचारियों के द्वारा प्रश्न पत्र लीक करने या परीक्षा की गोपनीयता भंग करने वाली जानकारी को सार्वजनिक करने वाले आयेंगे।
- परीक्षा डयूटी में शामिल कर्मचारियों, उनके पारिवारिक सदस्यों, रिश्तेदारों को धमकी देने और परीक्षा के संबंध में गलत सूचना प्रचारित करने या अफवाह फैलाने वाले भी इसके दायरे में आयेंगे।

आलमगीर ने इरफान अंसारी के बयान पर सदन में मांगी माफी

- इरफान के बाबूलाल पर दिये बयान को लेकर विपक्ष ने किया हंगामा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के पांचवें दिन गुरुवार को दोपहर 12 बजे जब सदन शुरू हुआ, तो भाजपा विधायकों ने जोरदार हंगामा किया। मुश्किल से 10 मिनट तक चली सदन की कार्यवाही में संसदीय कार्य मंत्री आलमगीर आलम ने इरफान अंसारी के उस बयान पर माफी मांगी, जिसमें उन्होंने कहा था कि बाबूलाल मरांडी आदिवासी हैं, इतना तेज कैसे हो सकते हैं। इस क्रम में आलमगीर आलम ने भाजपा विधायकों द्वारा सदन में किये जा रहे अमर्यादित आचरण की जांच की मांग भी की।

इसी क्रम में आलमगीर आलम ने कहा कि मध्यप्रदेश में आदिवासी युवक के साथ भाजपा नेता के पुत्र ने जो किया, मणिपुर में महिलाओं के साथ जो घटनाएं हुईं, उस पर भी भाजपा विधायक जवाब दें। मंत्री बन्ना गुप्ता ने भी भाजपा पर आरोप लगाते हुए कहा कि इरफान अंसारी और आलमगीर आलम ने माफी मांग ली है, फिर भी इस पर राजनीतिक रोटी सेंकी जा रही है।

भाजपा विधायक भानु प्रताप शाही ने कहा कि बुधवार को सदन में इरफान अंसारी ने जो कहा, उससे पूरे देश का आदिवासी समाज आहत हुआ है। राष्ट्रपति जैसे शीर्ष पद पर आदिवासी महिला पहुंच चुकी हैं। बावजूद इसके इरफान ने आदिवासी समाज को जलालत भरे शब्दों में आहत किया है। स्पीकर ने इस बात को खत्म करने की अपील की, लेकिन भाजपा विधायक इसे अनसुना करते रहे।

इरफान अंसारी ने भी खेद जताया

रांची (आजाद सिपाही)। विधायक इरफान अंसारी ने अपने उस बयान के लिए खेद जताया, जिसमें उन्होंने कहा था कि आदिवासी स्मार्ट कैसे हो सकता है। सफाई देते हुए उन्होंने कहा कि दो दिन पहले डिबेट के दौरान आदिवासियों के संबंध में उनके मुंह से जो कुछ निकला, उसे सदन ने एक्सपंज कर दिया था। उन शब्दों के लिए वह खेद व्यक्त करते हैं। उनकी ऐसी भावना नहीं थी। वे आदिवासी समाज के बड़े हितैषी हैं। उल्लेखनीय है कि अनुपूरक बजट पर कटौती प्रस्ताव पर सदन में चर्चा के क्रम में इरफान ने बाबूलाल मरांडी को टारगेट करते हुए कहा था कि कोई आदिवासी इतना स्मार्ट कैसे हो सकता है। इस बयान के बाद राजनीतिक हंगामा खड़ा हो गया था।

शशिभूषण मेहता के आचरण पर सदन में गुस्सा गये स्पीकर

- सीट से खड़े हो गये, मार्शल से बाहर कर देने को कहा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। विधानसभा सत्र के पांचवें दिन सदन में भाजपा विधायकों ने जोरदार हंगामा खड़ा किया। भाजपा विधायक इरफान अंसारी के उस बयान का जबरदस्त विरोध कर रहे थे, जिसमें उन्होंने कह दिया था कि आदिवासी इतना स्मार्ट कैसे हो सकता है। हंगामा के क्रम में भाजपा विधायक शशिभूषण मेहता हाथ उठा-उठा कर बोलने लगे। उनके

इस आचरण को लेकर स्पीकर काफी नाराज हो गये। वह काफी गुस्से में आ गये। उन्होंने मार्शल को शशिभूषण मेहता को सदन से बाहर किये जाने तक को कह दिया। इस क्रम में वह बार-बार भाजपा विधायकों से सीट पर जाने की अपील करते रहे। स्पीकर ने मेहता के आचरण पर नाराजगी जताते हुए कहा कि सदन कोई अखाड़ा नहीं है। उन्होंने कहा कि सदन में सदस्य हाथ उठा कर बात कर रहे हैं, जो ठीक नहीं। सदस्य बांह मोड़ कर चले जाते हैं। वह आसन को चुनौती दे रहे हैं। उन्हें अपनी जगह पर बैठना चाहिए। गलत आचरण को बर्दाश्त करने की उनकी आदत नहीं है। बार-बार शोरगुल के बीच 11.25 पर स्पीकर ने सदन को 12 बजे तक के लिए स्थगित कर दिया। संसदीय कार्य मंत्री आलमगीर आलम और विधायक प्रदीप यादव ने भी शशिभूषण के इस आचरण पर विरोध जताया।

न्यूज रील्स

राजीव गौबा को एक साल का सेवा विस्तार, कैबिनेट सचिव बने रहेंगे

नयी दिल्ली। मोदी सरकार में कैबिनेट सचिव राजीव गौबा को एक साल का कार्यकाल विस्तार मिला है। वह 2024 चुनाव तक इस पद पर रहेंगे। गौबा अभी भी सेवा विस्तार पर ही चल रहे हैं। मोदी सरकार ने गौबा को साल 2019 में भारत का कैबिनेट सचिव बनाया था।

नूंह-पलवल में दुकानों और धार्मिक स्थलों पर आगजनी

नूंह। हरियाणा के नूंह में हुई हिंसा के तीसरे दिन भी राज्य के चार जिलों में हालात तनावपूर्ण बने हुए हैं। चारों जिलों में पैरामिलिट्री फोर्सेज की 20 कंपनियां तैनात की गयी हैं। हिंसा में मरनेवालों की संख्या बढ़ कर सात हो गयी है। नूंह में बुधवार देर रात कर्फ्यू के दौरान तावडू इलाके में कुछ लोगों ने दो धार्मिक स्थलों पर आगजनी की। पलवल में बुधवार रात तीन दुकानों, दो धार्मिक स्थलों और एक टेंपो में आग लगा दी गयी।

लैपटॉप, टैबलेट और पीसी के इंपोर्ट पर सरकार की रोक

नयी दिल्ली। भारत सरकार ने लैपटॉप, टैबलेट और पर्सनल कंप्यूटर के इंपोर्ट पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। सरकार ने एक नोटिफिकेशन जारी कर इस बात की जानकारी दी है। किसी प्रोडक्ट के इंपोर्ट पर बैन लगाने का मतलब है कि विदेशों से उन प्रोडक्ट्स को लाने के लिए लाइसेंस या सरकार की अनुमति जरूरी होगी। इससे सरकार के मेक इन इंडिया प्रोग्राम और लोकल मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

राजस्थान में नाबालिग को भट्ठी में जलाया, गैंगरेप की आशंका

भीलवाड़ा। राजस्थान के भीलवाड़ा में 14 साल की नाबालिग को कोयला भट्ठी में जला दिया गया। आशंका जतायी जा रही है कि इससे पहले उसके साथ गैंगरेप भी हुआ था। मामला जिले के कोटड़ी थाना क्षेत्र के एक गांव का है। पुलिस ने मामले में तीन आरोपियों को हिरासत में लिया है।

सीएम की कुर्सी पर बैठे डिप्टी सीएम, विस अध्यक्ष ने स्टीकर हटाया

मुंबई। महाराष्ट्र में मुंबई के नरीमन पॉइंट इलाके में गुरुवार को एक कार्यक्रम में डिप्टी सीएम अजित पवार, सीएम एकनाथ शिंदे की कुर्सी पर बैठ गये। खुद महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने शिंदे की कुर्सी से उनके पद का स्टीकर हटाया और अजित को वहां पर बैठाया। अजित की बगावत के बाद महाराष्ट्र में राजनीतिक समीकरण बदल गये हैं।

हाइकोर्ट ने मुस्लिम पक्ष की याचिका खारिज की

ज्ञानवापी का आज से होगा एएसआइ सर्वे

आजाद सिपाही संवाददाता

प्रयागराज। इलाहाबाद हाइकोर्ट ने गुरुवार को ज्ञानवापी परिसर के एएसआइ सर्वे की इजाजत दे दी। हाइकोर्ट ने अंजुमन इंतजामिया मस्जिद कमेटी की याचिका खारिज करते हुए सेशन कोर्ट के आदेश का तत्काल पालन करने, यानी सर्वे शुरू करने का आदेश दिया। चीफ जस्टिस प्रीतिंकर दिवाकर की एकल पीठ ने यह फैसला सुनाया। फैसले के बाद वाराणसी में एएशआइ टीम और जिला प्रशासन की बैठक हुई। डीएम एस राजलिंगम ने बताया कि शुक्रवार से दोबारा सर्वे शुरू होगा।

अदालत ने सर्वे पर रोक लगाने से इनकार करते हुए कहा है कि न्याय के लिए यह सर्वे जरूरी है। कुछ शर्तों के साथ इसे लागू करने की जरूरत है। सर्वे करिये, लेकिन बिना खुदाई किये। गौरतलब है कि पिछली सुनवाई में हाइकोर्ट ने एसएसआइ से सुनवाई खत्म होने तक मस्जिद का सर्वे शुरू नहीं करने को कहा था। जुलाई के अंतिम सप्ताह में कोर्ट में दोनों पक्षों की तरफ से लगातार दो दिन बहस चली थी। कोर्ट ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद 27 जुलाई को अपने फैसले को रिजर्व कर लिया था।

सुप्रीम कोर्ट पहुंचा मुस्लिम पक्ष, हिंदू पक्ष ने कैविएट अर्जी दी : अंजुमन इंतेजामिया मस्जिद कमेटी ने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है। शीर्ष कोर्ट में दाखिल याचिका में एएसआइ को ज्ञानवापी मस्जिद परिसर का वैज्ञानिक सर्वेक्षण करने की अनुमति देने वाले इलाहाबाद हाइकोर्ट के आदेश को चुनौती दी गयी है। मस्जिद कमेटी के वकील ने सुप्रीम कोर्ट में मामले का जिक्र करते हुए कहा कि एएसआइ को सर्वे की इजाजत न दी जाये। इससे पहले काशी विश्वनाथ मंदिर-ज्ञानवापी मस्जिद मामले में हिंदू याचिकाकर्ताओं में से एक ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट में कैविएट अर्जी दायर की।

दिल्ली सेवा बिल लोकसभा से पास

- आइएनडीआइए गठबंधन का वॉकआउट

आजाद सपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार (संशोधन) विधेयक 2023 (दिल्ली सेवा विधेयक) गुरुवार को लोकसभा में पारित हो गया। इस बिल के पारित होते ही विपक्षी सांसदों ने विरोध स्वरूप सदन से वॉकआउट किया। यह बिल मंगलवार को गृह मंत्री अमित शाह ने संसद में पेश किया था। बता दें कि दिल्ली सेवा विधेयक मौजूदा अध्यादेश की जगह लेगा जो दिल्ली सरकार को अधिकांश सेवाओं पर नियंत्रण देने वाले सुप्रीम कोर्ट के आदेश को रद कर देता है।

दिल्ली अध्यादेश को लेकर अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी और केंद्र के बीच प्रमुख टकराव रहा है। केंद्र ने 19 मई को अध्यादेश जारी किया था जो दिल्ली में ग्रुप ए अधिकारियों के स्थानांतरण और पोस्टिंग के लिए प्राधिकरण से संबंधित है। यह अध्यादेश सुप्रीम कोर्ट के फैसले के कुछ दिनों बाद लाया गया था कि दिल्ली की निर्वाचित सरकार का कानून और व्यवस्था, पुलिस और भूमि के मामलों को छोड़कर अन्य सेवाओं पर नियंत्रण है। इससे पहले सदन में बिल को लेकर अमित शाह ने कहा था कि सेवाएं हमेशा केंद्र सरकार के पास रही हैं। सुप्रीम कोर्ट ने दी व्याख्या. 1993 से 2015 तक किसी मुख्यमंत्री ने नहीं लड़ी लड़ाई। कोई लड़ाई नहीं हुई क्योंकि जो भी सरकार बनी उसका लक्ष्य लोगों की सेवा करना था। अगर सेवा करनी है तो लड़ने की जरूरत नहीं है। लेकिन अगर वे सत्ता चाहते हैं तो वे लड़ेंगे।

आप सांसद निलंबित

बिल को पारित करने के दौरान आम आदमी पार्टी सांसद सुशील कुमार रिंकू द्वारा वेल में आकर कागज फाड़कर आसन पर फेंकने के कारण उन्हें मानसून सत्र की बची हुई अवधि के लिए निलंबित कर दिया गया है।

आप सांसद के व्यवहार के कारण स्पीकर ने उन्हें नामित किया, संसदीय कार्य मंत्री जोशी ने निलंबन का प्रस्ताव रखा और उसे सदन ने मंजूर कर दिया।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
189200 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
1 Channel
Subscribe NOW

सर्राफा
सोना (बिक्री) 55,900 रु./10 ग्राम
चांदी 74,000 रु./प्रति किलो

आजाद सिपाही
रांची, शुक्रवार, 04 अगस्त, 2023
www.azadsipahi.in
02

मध्यप्रदेश की सत्ता की चाबी है आदिवासी वोटरों के पास

■ भाजपा और कांग्रेस, दोनों तरफ से इन्हें साधने की हो रही भरपूर कोशिश

■ 84 सीटों पर है निर्णायक संख्या, 47 सीटें हैं जनजातियों के लिए आरक्षित

साल के अंत में विधानसभा चुनाव के मैदान में उतरनेवाले मध्यप्रदेश में सियासी समीकरण साधने का जतन तेज हो गया है। सत्ता में बरकरार रहने का भाजपा का लक्ष्य हो या सत्ता में वापसी की कांग्रेस की कोशिशें, दोनों के लिए उम्मीदों का सूरज आदिवासी क्षेत्रों से ही उदित होना है। यानी आदिवासी वोट बैंक जिसके साथ चल देगा, सत्ता के दरवाजे उसी के लिए खुलेंगे। इसका असर इन दिनों राज्य की राजनीति और चुनावी तैयारियों पर भी भरपूर देखा जा रहा है। भाजपा और कांग्रेस, दोनों आदिवासी समुदाय को अपने साथ जोड़ने की जबरदस्त कवायद कर रहे हैं। राज्य में आदिवासी वर्ग की भूमिका सरकार बनाने और बिगाड़ने में महत्वपूर्ण रही है। यही कारण है कि 2003 के 15 वर्ष बाद जब आदिवासी वोट ने करवट ली, तो 2018 में भाजपा की सरकार चली गयी। उस साल भाजपा की सीटें 32 (एक निर्दलीय) से घटकर आधी यानी 16 बचीं। कांग्रेस के पास 2013 में 15 आदिवासी सीटें थीं, जो 2018 में बढ़कर 30 हो गयीं। राज्य में वैसे तो 47 सीटें आदिवासियों के लिए अरक्षित हैं, लेकिन राज्य की 230 विधानसभा सीटों में से 87 पर आदिवासी वोटर निर्णायक संख्या में हैं। इस बार दोनों ही पार्टियां आदिवासियों को अपनी ओर खींचने में लगी हुई हैं। भाजपा की तरफ से आदिवासियों को साधने के लिए पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और फिर जेपी नड्डा के अलावा अमित शाह राज्य का दौरा कर चुके हैं, जबकि कांग्रेस के चुनावी रणनीतिकार भी आदिवासी समुदाय को लुभाने के लिए कई स्तर पर काम कर रहे हैं। कांग्रेस विपक्ष के तौर पर जहां आदिवासी वर्ग के मुद्दे उठाकर सरकार को घेरने की कोशिश कर रही है, वहीं योजनाओं को जाति-वर्ग में बांटने की बजाय सभी के लिए घोषित करते हुए आदिवासी वर्ग को भी साथ जोड़ रही है। मध्यप्रदेश के आदिवासी वोटरों को साधने की इन कोशिशों का परिणाम क्या होगा, यह तो अभी नहीं पता, लेकिन इसके कारण चुनावी रण में नया रंग भर रहा है। इस नये चुनावी रंग का विश्लेषण कर रहे हैं आजाद सिपाही के **विशेष संवाददाता राकेश सिंह।**

आजाद सिपाही विशेष

राकेश सिंह

मध्यप्रदेश में साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में राज्य के आदिवासी प्रादेशिक राजनीति का केंद्रबिंदु बन गये हैं। भाजपा ने फिर से सत्ता हासिल करने के लिए पूरा फोकस आदिवासी क्षेत्रों पर शिफ्ट कर दिया है। सीएम शिवराज एक के बाद एक घोषणाएं करते हुए नजर आ रहे हैं। इसी बात को भांपते हुए अब कांग्रेस ने भी अपना फोकस जनजातीय क्षेत्रों पर केंद्रित कर दिया है। मध्यप्रदेश में सरकार में बरकरार रहने का भाजपा का लक्ष्य हो या फिर सत्ता में वापसी की कांग्रेस की कोशिश, दोनों ही पार्टियों की उम्मीदें आदिवासी क्षेत्रों से होकर निकलती हैं। जिस तरफ आदिवासी वोट बैंक का पलड़ा झुकेगा, सत्ता उसी के करीब होगी। दूसरे शब्दों में कहा जाये, तो मध्यप्रदेश की सत्ता की चाबी आदिवासी वोटरों के पास है। इसलिए इन दिनों प्रदेश की राजनीति और चुनावी तैयारियों में आदिवासियों का भरपूर ध्यान रखा जा रहा है। दोनों ही दल इस समुदाय को अपने साथ जोड़ने की कवायद में जुटे हुए हैं। आदिवासी मतदाताओं पर पकड़ मजबूत करने के लिए सत्तारूढ़ भाजपा और प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस के बीच सियासी खींचतान तेज हो गयी है।

भाजपा की कोशिशें तेज, संघ भी सक्रिय

भाजपा सरकार ने आदिवासियों को साधने के लिए योजनाओं और घोषणाओं की बौछार कर दी है। भाजपा बैठकों के जरिये कार्यकर्ताओं को आदिवासियों के बीच पार्टी की बात रखने की ट्रेनिंग दे रही है। इसके अलावा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी आदिवासियों को लेकर तैयारी शुरू कर दी है। मिशन 2023 को ध्यान में रखते हुए संघ बीते एक साल से आदिवासी इलाकों में विशेष अभियान चला रहा है। सूबे के आठ आदिवासी बहुल जिलों में संघ की शाखाओं को दोगुना करने का टारगेट रखा है। धर्मांतरण रोकने के लिए इन क्षेत्रों में जन जागरूकता और संस्कारशालाएं भी बढ़ायी गयी हैं। संघ ने आने वाले दिनों कई छोटे-

बड़े कार्यक्रम और सभाएं इन्हीं जिलों में आयोजित करने की योजना बनायी है। यही नहीं, आदिवासियों को अपने पाले में फिर से मिलाने के लिए भाजपा हरसंभव प्रयास कर रही है। चुनाव को ध्यान में रखते हुए पार्टी और सरकार ने अपना पूरा फोकस आदिवासी वोटरों पर शिफ्ट कर दिया है। आदिवासियों को लेकर भाजपा का आउटरीच प्रोग्राम हो या सरकार की ओर से योजनाओं की शुरुआत, आदिवासी अस्मिता से जुड़ी बिरसा मुंडा और टंट्या मामा जैसी विभूतियों का सम्मान हो या राजा शंकर शाह और रघुनाथ शाह के शहीदी दिवस पर आयोजन, भोपाल के हबीबगंज रेलवे स्टेशन का रानी कमलापति के नाम पर नामकरण, भाजपा का आदिवासी और आदिवासी प्रतीकों पर फोकस साफ नजर आया है। प्रदेश की शिवराज सरकार ने आदिवासी समुदाय के बीच भगवान का दर्जा रखने वाले बिरसा मुंडा के नाम पर बिरसा मुंडा स्वरोजगार योजना, टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना, मुख्यमंत्री जनजाति कल्याण योजना जैसी योजनाएं शुरू कीं। इसके अलावा आदिवासियों के लिए पशुधन योजना भी शुरू की गयी है।

कांग्रेस इस तरह साध रही आदिवासियों को

दूसरी तरफ कांग्रेस के चुनावी रणनीतिकार भी आदिवासी समुदाय को लुभाने में जुट गये हैं। कांग्रेस सड़क से लेकर विधानसभा तक आदिवासी वर्ग के मुद्दे उठाकर सरकार को घेरने की कोशिश कर रही है, वहीं योजनाओं को जाति-वर्ग में बांटने की बजाय सभी के लिए घोषित करते हुए आदिवासी वर्ग को भी साथ जोड़ रही है। हाल ही में हुए सीधी पेशाब कांड को पार्टी ने आदिवासी वर्ग के अपमान का मुद्दा बनाकर आदिवासी स्वाभिमान रैली भी निकाली। कांग्रेस के पदाधिकारियों का कहना है कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने आदिवासी नेताओं और विधायकों को आदिवासी क्षेत्रों का दौरा करने और आदिवासियों के साथ संवाद स्थापित करने के निर्देश दे दिये हैं। पार्टी ने अगले छह माह के लिए प्लान ऑफ एक्शन भी तैयार किया है। इसके तहत पार्टी लगातार आदिवासी अंचल में पड़ने वाली विधानसभा सीटों पर मेहनत-मशक्कत करेगी। पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आदिवासी बहुल क्षेत्र शहडोल दौरा हुआ था। अब कांग्रेस नेता राहुल गांधी भी उसी जिले में ब्यौहारी में जनसभा करने आ रहे हैं। 2018 में कांग्रेस को जिताने में आदिवासी वोट बैंक का बड़ा रोल रहा था। 2018 के विधानसभा चुनावों में आदिवासी वर्ग के लिए आरक्षित 47 सीटों में से कांग्रेस को 30 सीटों पर जीत मिली थी।

जयस संगठन की एंट्री से भाजपा-कांग्रेस परेशान

इस बीच मध्य प्रदेश में अब तक कांग्रेस को समर्थन देने वाले जय आदिवासी युवा शक्ति संगठन जयस ने इस बार अपने दम पर चुनाव लड़ने का एलान कर दिया है। संगठन फिलहाल 80 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े करेगा। ये वो सीटें हैं, जहां आदिवासी वोटर निर्णायक हैं। जयस के अकेले चुनाव लड़ने के एलान से कांग्रेस में बेचैनी पैदा हो गयी है। वहीं भाजपा भी घबरा रही है। जयस जिन 80 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारने वाला है, उनमें वे सीटें भी शामिल होंगी, जो कांग्रेस के कब्जे वाली आदिवासी सीटें हैं।

मध्यप्रदेश में आदिवासी सीटों का गणित

मध्य प्रदेश में आदिवासियों की बड़ी आबादी होने से 230 विधानसभा में से 84 सीटों पर उनका सीधा प्रभाव है। यूं कहा जाये कि इन सीटों पर आदिवासी वोटर निर्णायक संख्या में हैं। 2013 के विधानसभा चुनाव में आदिवासी वर्ग के लिए आरक्षित 47 सीटों में से भाजपा ने 31 सीटें जीती थीं, जबकि कांग्रेस के खाते में 15 सीट आयी थी। 2018 के चुनाव में भाजपा 47 में से सिर्फ 16 पर ही जीत दर्ज कर सकी थी, जबकि कांग्रेस ने 30 सीटें जीतीं और भाजपा सत्ता से बाहर हो गयी थी। इसलिए दोनों पार्टियां जानती हैं कि 2023 के चुनावों में सत्ता के शीर्ष तक पहुंचने के लिए आदिवासियों का साथ बेहद जरूरी है। यही वजह है कि भाजपा हो या कांग्रेस, दोनों अपने-अपने तरीकों से आदिवासियों को रिझाने में कोई कोर कसर छोड़ना नहीं चाहती हैं।

विधायक लोबिन हेंब्रम को अपनी ही सरकार में खनन माफिया से जान का खतरा: बाबूलाल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ विधायक लोबिन हेंब्रम को अपनी ही सरकार में खनन माफिया से जान का खतरा है। उन्होंने विधानसभा में यह खुलासा करते हुए कहा कि उनकी सरकार ने हाउस गार्ड तक हटा कर उन्हें और खतरे में डाल दिया है। उन्होंने कहा है कि 15 दिनों में उनकी जान बचाने की फरियाद नहीं सुनी गयी तो वह दिल्ली जाकर केंद्र सरकार से मदद की गुहार लगायेंगे।

मरांडी ने गुरुवार को ट्वीट के माध्यम से कहा कि भाई लोबिन आपकी इस सरकार और खनन माफियाओं से खतरा सिर्फ आपको ही नहीं है। खतरा तो पूरे संताल और आदिवासी समाज को भी है, जिनका अस्तित्व और पहचान ये माफिया मिटा रहे हैं। खतरा आपके जैसे पक्ष-विपक्ष के उन सारे लोगों को है, जो गलत कार्यों और लूटपाट का विरोध करते हैं।

लोबिन जी, आप तो सोरेन परिवार के वफादार सदस्य रहे हैं, हेमंत के चाचा समान हैं। कभी पूछिये हेमंत जी से कि जो लोग झारखंड को लूटने के आरोप में जेल गये हैं और जा रहे हैं वे कौन हैं? उल्लेखनीय है कि झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के चौथे दिन बुधवार को सदन में लोबिन हेंब्रम ने अपनी ही सरकार में अपनी जानमाल की सुरक्षा का मामला उठाया था।

झारखंड पुलिस खरीदेगी 10 इंटरसेप्टर वाहन

गाड़ियों की गति पर लगेगा ब्रेक

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सड़कों पर गति सीमा यानी स्पीड लिमिट को नियंत्रित करने के लिए झारखंड पुलिस 10 इंटरसेप्टर वाहन खरीदेगी। इसे लेकर झारखंड पुलिस मुख्यालय ने आदेश जारी किया है। इससे पहले साल 2018 में झारखंड पुलिस की ओर से छह इंटरसेप्टर गाड़ियां खरीदी गयी थीं। इनमें दो गाड़ियां रांची के लिए, एक-एक गाड़ी जमशेदपुर, धनबाद, हजारीबाग और बोकारो को दी गयी हैं।

स्पीड लिमिट को तोड़ने वाले वाहनों को उपकरणों में कैद किया जाता है : इंटरसेप्टर वाहन के जरिए स्पीड लिमिट को तोड़ने वाले वाहनों के फोटो उपकरणों में कैद किया जाता है। फिर उन्हें ई-चालान भेजा जाता है, लेकिन सड़क पर वाहनों की अधिकतम स्पीड क्या होगी, इसका निर्धारण अब तक नहीं किया जा सका है। ऐसे में पुलिसकर्मी इसका इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं। इसका सही तरीके से इस्तेमाल नहीं होने से करोड़ों के इंटरसेप्टर वाहन बेकार पड़े हैं। रांची की बात की जाये, तो वर्तमान में दो इंटरसेप्टर वाहन हैं। दोनों में स्पीड मापने वाले यंत्र भी लगे हैं, लेकिन ये किसी काम के नहीं हैं। सड़कों पर इंटरसेप्टर वाहन घूमते हुए नजर आते हैं।

इंटरसेप्टर वाहन पर लगा रहता है स्पीड गन कैमरा : इंटरसेप्टर वाहन पर स्पीड गन कैमरा लगा रहता है, जो अपने आसपास में तेज गति से गुजरने वाले वाहनों की स्पीड को कैच कर लेता है। यदि स्पीड से ज्यादा वाहन की गति हुई, तो वाहन चलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाती है। इसमें ऑटोमेटिक चालान कट जाता है। इसके अलावा तेज गति से वाहन चलाने वालों के खिलाफ उनके रजिस्टर्ड मोबाइल पर यह मैसेज भी भेज दे दिया जाता है, जिसमें लिखा होता है कि आपने वाहन को काफी तेज गति से चलाया है। इसलिए फाइन भरना होगा। अगर यह गलती तीन बार हो जाती है, तो उनका ड्राइविंग लाइसेंस भी कैंसल किया जा सकता है।

सुरेश महली और काजल के शव अरगोड़ा में रेलवे ट्रैक से बरामद

रांची (आजाद सिपाही)। अरगोड़ा स्टेशन से सटे रेलवे ट्रैक के पास से बुधवार को युवक और युवती का शव बरामद हुआ था। दोनों की मौत ट्रेन से कटने की वजह से हुई थी। दोनों की पहचान गुरुवार को हुई। दोनों आपस में पति-पत्नी थे। दोनों की पहचान सुरेश महली और उसकी पत्नी काजल के रूप में हुई। दोनों लोहरदगा के रहने वाले थे। दोनों की पहचान होने के बाद लोहरदगा से परिजन रिम्स पहुंचे। पोस्टमार्टम के बाद दोनों शव परिजनों को सौंप दिये गये। जानकारी के अनुसार, दोनों ने पारिवारिक समस्या के कारण आत्महत्या कर ली। पुलिस परिजनों से जानकारी जुटा रही है कि लोहरदगा से रांची में आकर दोनों ने आत्महत्या क्यों कर ली।

लापता बैंककर्मी संतोष का सुराग नहीं

रांची (आजाद सिपाही)। बैंककर्मी संतोष कुमार के लापता होने के तीन दिन बाद भी सुराग नहीं मिल पाया है। इस मामले को लेकर बैंककर्मी संतोष कुमार की पत्नी मनीषा भारद्वाज ने बुधवार को लालपुर थाना में शिकायत दर्ज करायी है। दर्ज शिकायत में कहा गया है कि इनके पति बीते 31 जुलाई को लालपुर स्थित अपने बैंक से दिन के करीब तीन बजे निकले थे। उस समय उन्होंने कॉल करके कहा कि ऑफिस के काम से ओरमांझी जा रहे हैं। मेरे मोबाइल की बैटरी डाउन है, इस वजह से मोबाइल ऑफ हो सकता है। इसके बाद से मेरे पति से कोई संपर्क नहीं हो पाया है और ना ही वह अभी तक घर आये हैं। उन्होंने कहा है कि संतोष कुमार का मोबाइल भी बंद आ रहा है। इस संबंध में लालपुर थाना प्रभारी ममता कुमारी ने गुरुवार को बताया कि बैंककर्मी का लास्ट लोकेशन बूटी मोड़ मिला है। मामले की जांच की जा रही है।

संजीवनी बिल्डकॉन फर्जीवाड़ा मामले में झारखंड हाइकोर्ट ने खारिज की तीन याचिकाएं

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड हाइकोर्ट ने संजीवनी बिल्डकॉन फर्जीवाड़ा मामले में रांची के नगड़ी अंचल के तत्कालीन दो सर्किल ऑफिसर (सीओ) ओम प्रकाश यादव और कृष्ण कुमार की अलग-अलग दायर तीन याचिकाओं को खारिज कर दिया है। हाइकोर्ट के जस्टिस एसके द्विवेदी की कोर्ट ने मामले में गुरुवार को अपना फैसला सुनाया है। कोर्ट ने पूर्व में सभी पक्षों को सुनने के बाद मामले में फैसला सुरक्षित रख लिया था। इन दोनों तत्कालीन सर्किल ऑफिसर पर आरोप था कि इन्होंने अपने सीइओ पद का दुरुपयोग करते हुए रकबा से ज्यादा जमीन का म्यूटेशन किया। साथ ही संजीवनी बिल्डकॉन को फायदा पहुंचाया। सीबीआइ ने इनके खिलाफ एक ही मामले में तीन- तीन प्राथमिकी दर्ज की थीं। इन दोनों तत्कालीन सीओ की ओर से हाइकोर्ट में याचिका दायर कर अपने खिलाफ दर्ज तीनों केस को निरस्त करने का आग्रह किया गया था। कृष्ण कुमार और ओम प्रकाश यादव के तीन-तीन केस पर बहस हुई थी। सीबीआइ की ओर से वरीय अधिवक्ता अनिल कुमार ने पैरवी की थी। कृष्ण कुमार की ओर से अधिवक्ता राजेंद्र कृष्ण, कृष्ण कुमार एवं जयशंकर तिवारी ने पैरवी की थी।

आदिवासी समाज का अपमान करना कांग्रेस के डीएनए में शामिल है : आशा लकड़ा

सोनिया गांधी और राहुल गांधी के इशारे पर कांग्रेस विधायक कर रहे आदिवासी समाज का अपमान

कोई आम आदमी ऐसी टिप्पणी करता, तो उस पर एसटी/एससी एक्ट लगता

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा की राष्ट्रीय मंत्री और रांची की निवर्तमान महापौर डॉ आशा लकड़ा ने कांग्रेस पार्टी पर जम कर हमला बोला। आशा लकड़ा ने आदिवासी समाज और बाबूलाल मरांडी पर विधायक इरफान अंसारी द्वारा विधानसभा में दिये गये बयान पर प्रेसवार्ता के माध्यम से प्रतिक्रिया दी। आशा लकड़ा ने कहा कि झारखंड आदिवासियों के त्याग और बलिदान का प्रतिफल है, लेकिन जामताड़ा से कांग्रेस विधायक इरफान अंसारी आदिवासियों के प्रति ओछी सोच रखते हैं। वह कहते हैं कि आदिवासी इतना तेज

कैसे हो गये हैं, हमको समझ नहीं आता। कहा कि विधायक इरफान अंसारी के इस बयान से पूरा आदिवासी समाज मर्माहत है। कांग्रेस पार्टी के डीएनए में ही जनजातीय समाज के प्रति विरोध है। झारखंड में अब तक आदिवासी समाज से चार मुख्यमंत्री चुने गये। कहा कि वर्तमान मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन भी आदिवासी हैं, लेकिन वे आदिवासी को 'बोका' समझते हैं। कहा कि झारखंड का इतिहास गवाह है कि आदिवासियों ने विभिन्न क्षेत्रों में सफलता हासिल कर इस राज्य का नाम रोशन किया है। आदिवासी समाज का गौरवशाली इतिहास रहा है। भगवान बिरसा मुंडा, चांद-भैरव, फूलो-झानो, सिदो-कान्हू, तिलका माझी जैसे महापुरुषों ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और जेएमएम न तो आदिवासियों के हितैषी थे और ना ही हो सकते हैं। ये आदिवासियों को सिर्फ वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल कर अपना हित साधते हैं। कहा कि कांग्रेस पार्टी के नेता ने प्रथम आदिवासी महिला राष्ट्रपति को भी अपनी असंसदीय टिप्पणी से अपमानित किया। उन्होंने कहा कि राज्य में आदिवासियों की जमीन लूटी जा रही है। कहा कि विधायक इरफान अंसारी का यह बयान कि उन्हें हिंदू वोट नहीं देंगे, तब भी जीत जायेंगे। यह अहंकार नहीं तो और क्या है। आशा लकड़ा ने कहा कि ऐसी टिप्पणी अगर कोई सामान्य व्यक्ति करता तो उसके खिलाफ एसटी/एस सी एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज होता, लेकिन क्या कांग्रेस पार्टी बतायेगी कि उसने इरफान अंसारी पर इस अभद्र टिप्पणी के खिलाफ क्या अनुशासनात्मक कार्रवाई की।

पूर्व मंत्री के पीएस संजय कुमार की अग्रिम बेल पर इडी कोर्ट में हुई सुनवाई

रांची (आजाद सिपाही)। पूर्व मंत्री और मनी लॉन्ड्रिंग केस में सजायफ्ता हरिनारायण राय के पीएस (पर्सनल सेक्रेटरी) रहे संजय कुमार की अग्रिम जमानत याचिका पर रांची सीबीआइ की विशेष कोर्ट में सुनवाई हुई। सुनवाई के बाद अदालत ने सीबीआइ को जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। अब संजय कुमार की अग्रिम बेल पर अगली सुनवाई के लिए कोर्ट ने 7 अगस्त की तिथि तय की है।

बता दें कि संजय कुमार के खिलाफ सीबीआइ ने आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने के मामले में कांड संख्या आरसी-04-2010 दर्ज किया है। पिछले महीने इनके खिलाफ पीड़क कार्रवाई पर रोक के आदेश को हाइकोर्ट ने हटा दिया था। उसके बाद अब संजय कुमार पर गिरफ्तारी की तलवार लटक रही है। इन पर हरिनारायण राय के मंत्रित्व काल में विभागीय फाइल और दस्तावेज गायब करने का भी आरोप है।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
189200 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	24.4 ℃	22.2 ℃
सूर्यास्त (आज)	:	18.31 बजे
सूर्योदय (कल)	:	05.20 बजे

आजाद सिपाही
रांची, शुक्रवार, 04 अगस्त, 2023
www.azadsipahi.in

प्रतियोगिता परीक्षा विधेयक 2023 के विरोध में पुतला फूंका

छात्र विरोधी है यह काला विधेयक : आजसू

प्रतियोगी परीक्षाओं में भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने पर बिना एफआइआर जेल में डाल देगी सरकार : नीतीश सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। प्रतियोगिता परीक्षा विधेयक 2023 के विरोध में अखिल झारखंड छात्र संघ (आजसू) ने फिरायालाल चौक पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सरकार का पुतला फूंका। इस मौके पर आजसू छात्र संघ के नीरज राम ने इस विधेयक को छात्र विरोधी बताते हुए कहा कि छात्र कदाचार मुक्त परीक्षा तो चाहते हैं, लेकिन ये नहीं चाहते कि जब प्रतियोगिता परीक्षा में गड़बड़ी हो, तो इस कानून के डर से वो आवाज भी ना उठा सकें। इस विधेयक के माध्यम से सरकार छात्रों की आवाज को लाठी-डंडे के बल पर दबाना चाहती है। छात्र हित के विपरीत आये इस विधेयक का अखिल झारखंड छात्र संघ पुरजोर विरोध करती है।

उन्होंने इस कानून की खामियां बताते हुए कहा कि इस कानून से सरकार छात्र से विरोध करने के हक को छीन रही है। पहले भी राज्य में कई प्रतियोगिता परीक्षाओं में हुई गड़बड़ियों के खिलाफ हमने आवाज उठायी है और नतीजन उन परीक्षाओं के परीक्षाफल या नोटिफिकेशन में सुधार, बदलाव यहां तक कि परीक्षा रद्द भी हुई है, लेकिन इस विधेयक के लागू होने से अब कोई छात्र किसी भी तरह का विरोध नहीं कर पायेगा। अगर यह कानून कुछ महीने पहले लागू हो जाता, तो न जाने कितने छात्र आज जेल में होते।

आजसू के नीतीश ने कहा कि सरकार को प्रतियोगिता परीक्षा में सीटों की बंदरबांट करने में सुविधा हो और फिर उसके खिलाफ कोई आवाज नहीं उठाये, इसलिए यह कानून लाया गया है। इस कानून के अनुसार बिना एफआइआर दर्ज किये आवाज उठाने वाले छात्र पर केस दर्ज करने और उसे गिरफ्तार करने की छूट है। इस राज्य में कई आंदोलन सोशल मीडिया के माध्यम से शुरू हुए और इसके आधार पर बड़े बदलाव भी हुए हैं। लेकिन इस कानून के अनुसार झूठा और भ्रामक खबर फैलाने के आरोप में भी केस दर्ज होने की बात है, इसका असर यह होगा कि अब कोई भी युवा प्रतियोगिता परीक्षा में हुई गड़बड़ी के खिलाफ जेल जाने के डर से सोशल मीडिया में भी कुछ नहीं लिख पायेगा। जिस भी विद्यार्थी पर केस दर्ज होगा, वो दो साल से पांच साल तक परीक्षा में शामिल नहीं हो पायेगा और सजा होने पर दस साल तक परीक्षा से दूर कर दिया जायेगा। इस कानून के आने के बाद छात्र को जेल जाने के साथ साथ आर्थिक दंड का भी समाना करना पड़ेगा। कानून से सरकार की युवाओं के प्रति नियत का पता चलता है, सरकार तानासाही पर उतर आयी है। इस अवसर पर नीरज, नीतीश, अभिषेक, राहुल, रोहित, विशाल, प्रवीण, विक्रम, रूपेश, मजीत के अलावा कई सदस्य मौजूद थे।

हाइकोर्ट में सजायाफ्ता पूर्व मंत्री बंधु की अपील पर बहस 17 को

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड हाई कोर्ट में आय से अधिक संपत्ति मामले में सजायाफ्ता मांडर के पूर्व विधायक विधायक और झारखंड कांग्रेस नेता बंधु तिर्की की ओर से सीबीआई कोर्ट द्वारा सुनायी गयी सजा के खिलाफ दायर क्रिमिनल अपील की आंशिक सुनवाई के बाद मामले की अगली सुनवाई 17 अगस्त निर्धारित की। मामले में हाई कोर्ट के जस्टिस सुभाष चंद्र की कोर्ट में मामले की सुनवाई हुई। पिछली सुनवाई में हाइकोर्ट ने लोअर कोर्ट रिकॉर्ड (एलसीआर) की फोटो कॉपी की प्रति प्रार्थी एवं सीबीआइ को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया था। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता निलेश कुमार ने पैरवी की जबकि सीबीआइ की ओर से वरीय अधिवक्ता अनिल कुमार ने पैरवी की। हाइकोर्ट के आदेश के आलोक में मामले में निचली अदालत से लोअर कोर्ट रिकॉर्ड आ चुका है।

सीबीआइ के विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की कोर्ट ने 28 मार्च, 2022 को बंधु तिर्की को दोषी करार देते हुए तीन साल की सजा सुनाई थी। साथ ही उन पर तीन लाख रुपये जुर्माना भी लगाया था। जुमार्ने की राशि अदा नहीं करने पर उन्हें छह महीने की अतिरिक्त सजा भुगतने का निर्देश दिया था।

सीबीआइ की विशेष अदालत ने छह लाख 28 हजार आय से अधिक रुपये अर्जित करने के मामले में बंधु तिर्की को सजा सुनायी थी। सीबीआइ ने बंधु तिर्की के खिलाफ पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा कांड में 11 अगस्त, 2010 को आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने के मामले में आरसी 5/2010 दर्ज की थी। 16 जनवरी, 2019 को आरोप गठित किया गया था।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

मेष कठिन परिश्रम-प्रयत्न से महत्वपूर्ण कार्य में सफलता मिलेगी। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होगा।

वृष नौकरी-व्यापार में सफलता मिलेगी। प्रभावशाली व्यक्ति के सहयोग से काम बनेगा।

मिथुन आजीविका की स्थिति में सुधार। बकाये रकम की प्राप्ति। वस्त्र-आभूषण, धन-द्रव्य की प्राप्ति।

कर्क प्रशंसनीय कार्य करने का अवसर मिलेगा। नौकरी में बदलाव होने का संभावना है।

सिंह क्रोध-जोश-उतावलेपन में वृद्धि होगी। वाणी पर नियंत्रण रखें। वाहन सावधानी से चलायें।

कन्या नौकरी में स्थानातंरण-पदोन्नति। महत्वपूर्ण कार्य पूरा होगा। आर्थिक लाभ होगा।

तुला परिवार में मांगलिक कार्य होगा। स्वजन-मित्रों का सहयोग। नौकरी में बदलाव।

वृश्चिक संतान पक्ष से सुखद समाचार की प्राप्ति होगी। व्यवसाय की स्थिति में सुधार।

धनु इच्छित कार्य सफल होगा। महत्वपूर्ण समाचारों की प्राप्ति होगी। विरोधियों पर विजय।

मकर आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। रोग-ऋण-शत्रुबाधा का शमन। सुख-शांति का वातावरण।

कुंभ स्वास्थ्य बाधा। दिमागी तनाव। इष्ट-मित्रों-स्वजनों से मार्मिक पीड़ा। आवश्यक काम पूरा होगा।

मीन आयु-आरोग्य की रक्षा होगी। बकाये रकम की प्राप्ति। रोजी-रोजगार में उन्नति होगी।

आदिवासी समाज को अपमानित करने वाली कांग्रेस पार्टी माफी मांगे : अमित

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र का पांचवा दिन है। ऐसे में सदन की कार्यवाही शुरू होने से पहले भाजपा के विधायक सत्ता पक्ष पर हमलावर हो गये हैं। सदन के बाहर भाजपा विधायकों की तरफ से लगातार कांग्रेस विरोधी नारे लगाए जा रहे हैं। दरअसल जामताड़ा से कांग्रेस के विधायक इरफान अंसारी का एक वीडियो सामने आया है। जिसमें वह आदिवासियों को लेकर टीका-टिप्पणी करते नजर आ रहे हैं। भाजपा ने आज उसी टिप्पणी को मुद्दा बनाया है और लगातार इरफान अंसारी को माफी मांगने को कह रहे हैं। गोड्डा से भाजपा के विधायक अमित मंडल ने कहा है कि आदिवासियों पर इस तरह की टीका टिप्पणी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जो भी उनकी अस्मिता के साथ खिलवाड़ करेगा भाजपा उसके खिलाफ बोलेगी।

उन्होंने कहा कि इरफान अंसारी जानबूझकर ऐसी बयानबाजी करते हैं, क्योंकि जो उनके दिल में होता है वही उनके जुबान पर आ जाता है। आदिवासी समाज को अपमानित करने वाली कांग्रेस पार्टी को माफी मांगना होगा। अब सफाई देने का कोई मतलब ही नहीं है। यह खेदपूर्ण है कि जिस आदिवासी के वोट से वह जीतते हैं, जिसके बीच रहते हैं उनको ही नीचा दिखाने का काम करते हैं। सबसे बड़ी बात है कि सत्ता पक्ष के लोग भी कुछ नहीं बोलते हैं। मनोबल खुद सत्ता पक्ष के लोग बढ़ा रहे हैं। आगे उन्होंने कहा कि सदन में बोलने की आजादी है लेकिन ऐसी अभिव्यक्ति की आजादी नहीं है कि आपकी वजह से समाज में कोई गलत मैसेज जाए।

अमित मंडल ने बातचीत के दौरान कहा कि आदिवासी ही झारखंड की पहचान है, लेकिन इरफान अंसारी ने उनकी अस्मिता पर सवाल उठा दिया। आदिवासियों पर इस तरह की टिप्पणी बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जाएगी। ऐसे टीका टिप्पणी से उनको बचना चाहिए। बार-बार एक ही इंसान से गलती कैसे हो जाती है। वह जानबूझकर ऐसे बयान देते हैं क्योंकि उनकी मंशा ही होती है यहां के आदिवासी मूलवासी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। अब उनको माफी मांगनी होगी। इधर इरफान अंसारी का कहना है कि उनके वीडियो को क्रॉप करके चलाया गया है। बीजेपी के लोग जब राहुल गांधी को नहीं छोड़ते हैं तो मुझे क्या बख्शेंगे। जिस तरह राहुल गांधी के आलू डालो सोना निकलेगा वाला वीडियो चल रहा है उसी तरह मुझे फसाया जा रहा है। मैं आदिवासियों का सदैव हितैशी रहा हूं।

अनंत ओझा ने 849061 किसानों के लंबित भूमि सत्यापन का मामला उठाया

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के पांचवें दिन गुरुवार को विधायक अनंत ओझा ने झारखंड में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि को लेकर भूमि सत्यापन के लंबित मामलों का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि करीब नौ लाख किसानों के भूमि सत्यापन का मामला लंबित है, जिसके कारण उन्हें प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि का लाभ नहीं मिल रहा है। सिर्फ साहिबगंज जिले में 34219 किसानों के लैंड रिकॉर्ड वेरिफिकेशन का सत्यापन लंबित है। इस पर सरकार की ओर से जवाब दिया गया कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत राज्य के कुल 849061 किसानों के भूमि अभिलेख का सत्यापन लंबित है, जबकि साहिबगंज जिला में कुल 34219 किसानों की भूमि के डॉक्यूमेंट का सत्यापन नहीं हुआ है।

विधायक ढुल्लू महतो ने अवैध कोयला खनन की सीबीआइ जांच की मांग की

रांची (आजाद सिपाही)। बाघमारा से बीजेपी विधायक ढुल्लू महतो ने धनबाद में हो रहे करोड़ों रुपये के कोयला खनन की जांच सीबीआइ या ईडी से कराने की मांग को लेकर विधानसभा के बाहर प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि धनबाद जिले में राष्ट्रीय संपत्ति की लूट माफियाओं द्वारा की जा रही है और अवैध खनन धड़ल्ले से हो रहा है। इस मामले में सरकार किसी भी स्तर से जल्द से जल्द जांच कराये।

पेसा मामले को लेकर धरना पर बैठे लोबिन हेंब्रम

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड विधानसभा में गुरुवार को झामुमो विधायक लोबिन हेंब्रम पेसा कानून को लागू करने की मांग को लेकर सदन के बाहर धरना पर बैठे। उन्होंने 24 दिसंबर 1996 के पेसा एक्ट को मूल रूप में लागू करने, धारा 3, 4 और 5 के तहत राज्यों को संवैधानिक अधिकार देने और 26 जुलाई को प्रकाशित गजट अधिसूचना को रद्द करने की मांग की।

जिला स्कूल में लगी आग फायर ब्रिगेड ने पाया काबू

पुरानी थी वायरिंग, शॉट सर्किट हो सकती है कारण, बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाला गया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राजधानी रांची के जिला स्कूल में अचानक आग लग गयी। स्कूल के पीछे वाले भवन में आग लगी। प्राथमिक सूचना के मुताबिक स्कूल की वायरिंग काफी पुरानी है। शॉर्ट सर्किट की वजह से भीषण आग लगने की बात कही जा रही है। आग लगते ही क्लास रूम में मौजूद बच्चों को बाहर निकाला गया। वहीं स्कूल में बच्चों की छुट्टी कर दी गयी। मौके पर दमकल की दो गाड़ियां पहुंचीं। सुबह 10 बजे से आग बुझाने की कोशिश में लगी फायरब्रिगेड की गाड़ियों ने आग पर काबू पा लिया।

जानकारी के अनुसार जिस क्लास रूम में आग लगी, वहां क्लास छह के बच्चे पढ़ाई करते हैं। शिक्षकों ने बताया कि जैसे ही क्लास रूम में धुआं उठने जैसा लगा, हमने बच्चों को बाहर निकाला। जिस वक्त क्लास रूम में आग लगी, लगभग 30 से अधिक बच्चे पढ़ रहे थे। बगल में तीन कमरों में धीरे-धीरे आग फैल गयी। फॉल सीलिंग आग की वजह से जलने लगा। स्कूल के स्टाफ ने इन कमरों में मौजूद बेंच, डेक्स, कंप्यूटर, बैटरी आदि को हटा दिया। फायर ब्रिगेड के कर्मचारी अपने काम में लगे रहे। रांची का यह सबसे पुराना स्कूल है। इसे हाल ही में सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस बनाया गया है। स्कूल ऑफ एक्सीलेंस में तमाम तरह की सुविधाओं की बात कही गयी है, जो किसी भी निजी स्कूल में होती है। दूसरी तरफ यह भवन काफी पुराना है। इसकी छत खपड़ैल की है। क्लास रूम में नीचे से प्लाईवुड की फॉल सीलिंग की गयी है। इस वजह से आग तेजी से फैली। इस अगजनी में कितने का नुकसान हुआ है, इसका आकलन किया जायेगा।

श्री श्याम मंडल के तत्वावधान में महाशिवपुराण व्याख्यान का तीसरा दिन

प्राणवाक्षर सदाशिव ही पूर्ण ब्रह्म हैं : स्वामी परिपूर्णानंद

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। अग्रसेन पथ स्थित श्री श्याम मंदिर रांची भव्य दरबार में गुरुवार को श्री श्याम मंडल द्वारा आयोजित महाशिवपुराण व्याख्यान के तीसरे दिन निर्धारित समय से पहले ही भक्तों की अपार भीड़ संपूर्ण वातावरण को शिव महामंत्र का जाप कर शिवमय बना दिया तथा पूरे मंदिर परिसर भोले शंकर के जयकारों से गूंज रहा था। शाम 4 बजे स्वामी परिपूर्णानंद के व्यास पीठ का पारंपरिक पूजन वंदन के बाद स्वामीजी ने व्यख्यान को आगे बढ़ते हुए कहा कि प्राणवाक्षर सदाशिव ही पूर्ण ब्रह्म हैं। महाशिवरात्रि शिव के दिव्य स्वरूप का प्राकट्य दिवस है। अतः महाशिवरात्रि के शुभ दिन शिवलिंग का शृंगार - पूजन - वंदन अत्यंत श्रेष्ठकारी है। स्वामीजी कहते हैं - शिव ही एकानन हैं। शिव ही पंचानन हैं और शिव ही गुरुपुराण हैं। संसार में अत्यंत सुलभ एवं अविनाशी देव शिव ही हैं। अतः ॐ नमः शिवाय दिव्य मंत्र का निरंतर जाप अत्यंत फलदाई है। साथ ही भक्ति ज्ञान वैराग्य इन तीनों की प्राप्ति से ही जीवन रसमय ही सकता है तथा सत्संग ही प्रभु दर्शन का मार्ग है। साथ ही शिवलिंग स्वरूप निराकार है, जिस पर शिव अनुग्रह करते हैं, वो मोक्ष को प्राप्त करता है। स्वामीजी ने आगे व्याख्यान में बताया कि तीर्थ क्षेत्र में दान करनेवालों को शिवजी पापों से मुक्ति देकर सभी बंधनों से मुक्त करते हैं। शिवजी की आंख से प्रगट रुद्राक्ष शिवजी को अत्यंत प्रिय है। महादेव श्रृष्टि का उत्पनकर्ता - पालनकर्ता एवं संघहारकर्ता हैं। उनका स्वरूप निर्विकार है। ईश्वर सबमें अंतर्यामी बन कर विद्यमान हैं। ईश्वर को प्रपंच, अहंकार पसंद नही हैं। ये सब छोड़ कर जो उनकी शरण में जाते हैं, उन्हें भक्ति पुरुस्कार में मिलती है। महाशिवपुराण के व्याख्यान समाप्ति के बाद श्री ज्योति बजाज एवं उनके परिवार द्वारा शिवपुराण की महाआरती निवेदित की गयी। साथ ही प्रसाद वितरण के साथ आज के तृतीय दिवस का कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में विजय शंकर साबू, ज्ञान प्रकाश बागला, अमित जलान, गौरव शर्मा, सुमित महलका, राकेश सारस्वत, महेश शर्मा, सुनील मोदी, प्रदीप अग्रवाल, विनोद शर्मा का योगदान रहा।

माओवादियों और आपराधिक गिरोहों को हथियार देनेवाला बिहार से गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड में माओवादियों और संगठित गिरोह के अपराधियों को हथियार और गोली सप्लाई करने वाले प्रभाकर को एटीएस ने बिहार के नालंदा जिला स्थित पावापुरी से गिरफ्तार किया है। इससे पहले एटीएस ने 13 जनवरी 2023 को प्रभाकर से हथियार और गोली खरीद कर झारखंड में सप्लाई करने वाले रवि प्रजापति को 150 राउंड जिंदा गोली के साथ गिरफ्तार किया था।

सप्लायर रवि प्रजापति हजारीबाग के बरही बस स्टैंड स्थित हजारीबाग रोड का निवासी है। इसी केस के अनुसंधान के क्रम में प्रभाकर को एटीएस ने गिरफ्तार किया है।

अन्य साथियों की जानकारी जुटाने में लगी थी एटीएस की टीम : एटीएस ने हथियार सप्लायर रवि प्रजापति को 13 जनवरी 2023 को रात करीब नौ बजे कोडरमा के बाघीटांड़ चेकपोस्ट के पास बस से उतरते वक्त गिरफ्तार किया था। उसके पास से 7.65 एमएम के 150 कारतूस और एक मोबाइल बरामद हुआ था। उसके बाद एटीएसकी टीम हथियार सप्लाई करने वाले सिंडिकेट में शामिल उसके लोगों की गिरफ्तारी में जुटी हुई थी।

ब्रह्मकुमारी निर्मला ने राज्यपाल को रक्षा सूत्र बांधा

रांची (आजाद सिपाही)। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से गुरुवार को रांची के प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ब्रह्मकुमारी निर्मला बहन ने राजभवन में मुलाकात की। निर्मला बहन ने इस दौरान राज्यपाल को रक्षा सूत्र बांधा तथा उनके उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना की। दूसरी ओर राज्यपाल ने गुरुवार को डॉ अरुण मिश्रा द्वारा रचित पुस्तक थैंक यू कैंसर के द्वितीय संस्करण का राजभवन में विमोचन किया। लेखक डॉ अरुण मिश्रा स्वयं एडवांस स्टेज कैंसर मरीज रहे हैं।

बिरसा मुंडा जेल में सुसाइड करनेवाले कैदी के तीन बच्चों को मिलेगा मुआवजा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। बिरसा मुंडा जेल में आत्महत्या करने वाले छोटू तिवारी के तीन छोटे बच्चों को मुआवजा मिलेगा। इसे लेकर गृह सचिव अविनाश कुमार ने रांची डीसी राहुल सिन्हा को आदेश दिया है। गृह सचिव द्वारा डीसी को दिये आदेश में कहा गया है कि मृत विचाराधीन बंदी छोटू तिवारी के तीन बच्चे पलक कुमारी को 1.66 लाख, अदिति कुमारी 1.66 लाख और दिपांसी कुमारी को 1.66 लाख आर्थिक सहायता राशि का भुगतान किया जाये।

पत्नी की हत्या के आरोप में गया था जेल : दरअसल होटवार जेल में बंद छोटू तिवारी ने 8 अप्रैल 2020 की दोपहर अपने सेल में ही गमछा के सहारे फांसी लगा कर आत्महत्या ली थी। उसको 28 मार्च 2020 को पंडरा थाने की पुलिस ने पत्नी की हत्या के आरोप में गिरफ्तार करके जेल भेजा था। छोटू तिवारी मूल रूप से नगड़ी का रहने वाला था और वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ किराये के घर में पंडरा स्थित पाहन टोली में रहता था।

विधायक ने सड़क चौड़ीकरण की मांग की

जयनगर (आजाद सिपाही)। बरकट्ठा विधायक अमित कुमार यादव ने शून्यकाल के दौरान विधानसभा में क्षेत्र के ज्वलंत समस्याओं को लेकर अपना विचार रखा। कोडरमा जिला अंतर्गत एनएच 33 चंदवारा से काको, शमार्टांड, लतबेधवा, चुटियारो होते हुए जयनगर तक और तिलैया डैम से तुर्कबाद, बेडोकला, घोरबंदा होते हुये चलकुसा (जिला हजारीबाग) तक ग्रामीण विकास विभाग रोड को पथ निर्माण विभाग में अधिग्रहित करते हुए चौड़ीकरण और मजबूती करण कार्य कराने की मांग सदन और सरकार से की है।

सड़क हादसे में युवक की मौत

मरकच्चो (आजाद सिपाही)। गुरुवार को नवलशाही थाना अंतर्गत नवलशाही चौक के समीप एक ट्रक की चपेट में आने से एक युवक की दर्दनाक मौत घटना स्थल पर ही हो गई। मृतक की पहचान पिंटू ठाकुर (उम्र 27 वर्ष पिता महेंद्र ठाकुर ग्राम भिमेडीह पंचायत बच्छेडीह) के रूप में किया गया। जानकारी के अनुसार युवक अपने घर से सामान लेने कह कर नवलशाही चौक आया हुआ था। वही गिरिडीह कोडरमा मुख्य रोड से दक्षिण से उत्तर की ओर सड़क पर करने के क्रम में एक ट्रक जे एच 02ए एफ 4230 ने बरियाडीह से कोडरमा की ओर जाने के क्रम में युवक को अपने चपेट में ले लिया। जिससे युवक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। इस घटना से परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है। जानकारी के अनुसार मृतक अत्यंत गरीब था सिर्फ वही एक कमाऊ व्यक्ति था।

बिरसा हरित ग्राम योजना में पौधरोपण का शुभारंभ

सतगावां (आजाद सिपाही)। प्रखंड में गुरुवार को महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम के अंतर्गत संचालित बिरसा हरित योजना में पौधा रोपण अभियान का शुभारंभ किया गया। प्रखंड विकास पदाधिकारी बैद्यनाथ उरांव ने ग्राम पंचायत अंबाबाद के ग्राम महथाडीह में कुल पांच एकड़ भूमि पर पौधा रोपण कर पौंधा रोपो अभियान का शुभारंभ किया। जिसमें संचालित आम बागवानी के लाभुकों को 4200 उन्नत नस्ल के आम का पौधा उपलब्ध कराया गया। इस मौके पर प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी राहुल कुमार, ग्राम रोजगार सेवक राजेंद्र प्रसाद यादव, दिवाकर यादव, सभी लाभुक और अन्य लोग उपस्थित थे।

झासा के शिष्टमंडल ने उपायुक्त का किया स्वागत

कोडरमा (आजाद सिपाही)। गुरुवार को झारखंड राज्य स्वास्थ्य सेवा संघ (झासा) के चिकित्सकों ने नव पदस्थापित उपायुक्त मेघा भारद्वाज को बुके दे कर स्वागत और अभिनंदन किया। संगठन के प्रतिनिधि मंडल में झासा के राज्य उपाध्यक्ष सह दंत चिकित्सा पदाधिकारी डॉ शरद कुमार, जिला यक्ष्मा पदाधिकारी डॉ रमण कुमार, सदर अस्पताल के प्रभारी उपाधीक्षक डॉ मनोज कुमार, चिकित्सा पदाधिकारी डॉ कुलदीप कुमार मौजूद थे। सभी चिकित्सकों ने उपायुक्त को भरोसा दिलाया कि उनके मार्गदर्शन में जिले के सभी चिकित्सक, उनके निर्देशानुसार आमजनों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने का प्रयास रहेगा। उपायुक्त द्वारा भी चिकित्सकों से कहा गया कि आप बेहतर कार्य करें और जो भी समस्या आयेगी उसके निराकरण का प्रयास किया जायेगा।

सभी राशन डीलर दुकानों पर लगाया जा रहा आयुष्मान कार्ड बनाने का कैंप

कोडरमा (आजाद सिपाही)। जिले में 570423 लोगों का कार्ड आयुष्मान बनाने का लक्ष्य निर्धारित है। आयुष्मान कार्ड उन्ही लोगों का बन सकता है जो झारखंड राज्य के राशन कार्ड (लाल, पीला, हरा) धारक हैं। इस योजना के तहत 5 लाख तक का मुफ्त इलाज किसी भी सरकारी या निजी अस्पताल में जाकर कराया जा सकता है। अभी तक लक्ष्य में 3,17, 452 लाभार्थियों का आयुष्मान कार्ड बनाया जा चुका है। शेष बचे 2,52,971 लोगों का आयुष्मान कार्ड विभिन्न शिविर या प्रज्ञा केंद्र के माध्यम से बनाया जा रहा है। जिले के सभी राशन कार्ड धारक (लाल, पीला, हरा राशन कार्ड धारक) से अपील की गयी है। कि अपने राशन डीलर से संपर्क कर के सभी लोग अपना आयुष्मान कार्ड बना ले ताकि उनको जरुरत के समय इसका लाभ मिल सके।

उपायुक्त ने की शिक्षा विभाग की बैठक

कोडरमा (आजाद सिपाही)। गुरुवार को समाहरणालय सभागार में उपायुक्त मेघा भारद्वाज की अध्यक्षता में शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक हुई। बैठक में उपायुक्त द्वारा उत्कृष्ट विद्यालय में शिक्षकों का प्रतिनियोजन, छात्रों का नामांकन, समग्र शिक्षा के रूआर कार्यक्रम इत्यादि कार्यक्रमों की समीक्षा किया गया। उन्होंने जिला शिक्षा अधीक्षक और प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी को शिक्षा व्यवस्था को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि विद्यालय से संबंधित कार्यों का निष्पादन ससमय करें। निरंतर विद्यालय का भ्रमण करते हुये निरीक्षण करने का निर्देश दिया और निरीक्षण प्रतिवेदन उपलब्ध कराने की बात कही। उन्होंने सभी प्रखंड शिक्षा प्रचार पदाधिकारी और बीपीओ, बीआरसी, सीआरपी को हफ्ते में तीन दिन क्षेत्र में रहने का निर्देश दिया। बैठक में मुख्य रूप से जिला शिक्षा अधीक्षक सह जिला शिक्षा पदाधिकारी नयन कुमार, एडीपीओ शिव मल्लिक, सभी प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी, सभी बीपीओ, बीआरसी, सीआरपी व अन्य मौजूद रहे।

सड़क पर बने गड्ढे हादसों को दे रहे आमंत्रण

मरकच्चो (आजाद सिपाही)। बरियारडीह मरकच्चो मुख्य मार्ग स्थित इंडियन ऑयल पंप नावाडीह 1 के समीप सड़क पर बना गड्ढा मौत को दावत दे रहा है। आये दिन कई घटनाएं घट रही है। स्कूल जाने वाले बच्चों को गड्ढे में बने कीचड़ को पार कर जाना पड़ता है। गड्ढे में भरे पानी को समतल सड़क समझ कर सरपट भागने की कोशिश जान लेवा हो सकती है। बरियारडीह मरकच्चो चर्चित सड़क की हालत वैसी नहीं हैं। कारण गड्ढे में सड़क है, या फिर सड़क में गड्ढे यह पता भी नहीं चलेगा। इनमें कुछ तो डेंजर जोन के रूप में मुंह बायें खड़ी है। हालत ऐसी है कि सड़क पर कभी घर का पानी जमा रहता है, तो कभी बारिश का। ऐसे में इस गड्ढे की हालत ऐसी बन चुकी है कि सावधानी हटी तो दुर्घटना घटी। हास्यास्पद तो यह कि इस सड़क पर बना गड्ढा जिला प्रशासन को दिखाई दे रहा है और ना ही प्रखंड प्रशासन को। लाखों खर्च कर बनाई इस सड़क की दशा और दुर्दशा को देखने वाला कोई नहीं है। दिन के समय में तो फिर भी गनीमत है, पर रात का सफर तो बिल्कुल जानलेवा है। स्थानीय मुखिया बैजन्ती देवी तथा स्थानीय जनप्रतिनिधियो ने जिला प्रशासन से अनुरोध किया है कि इस सड़क पर बने गड्ढे को जल्द से जल्द भरवा दिया जाता तो राहगीरों तथा स्कूली बच्चों को कीचड़ होकर पार नहीं होना पड़ता।

हाथियों के झुंड ने किया नुकसान, लोगों में दहशत

जयनगर (आजाद सिपाही)। प्रखंड के गोहाल पंचायत अंतर्गत ग्राम मकतपुर तुलसी सिंगा पलाश जंगल से बुधवार बीते शाम लगभग 7 बजे वन विभाग कोडरमा के द्वारा हाथियों के झुंड को हटाया गया। हटाने के पश्चात हाथियों का झुंड कमार्टांड़ टोला पंचायत भवन घौरंजा और नवसृजित प्राथमिक विद्यालय और अगल-बगल घर पर हाथियों के झुंड ने तोड़फोड़ की, मध्यान भोजन के चावल वगैरह खा गए। तत्काल जिला परिषद सदस्य केदारनाथ यादव ने वन विभाग के रेंजर, थाना प्रभारी को इसकी सूचना 9 बजे रात्रि को दिया, तो हाथियों को भगाने का दस्ता दल लगभग 12 बजे रात्रि कमार्टांड़ पहुंचा। हाथियों का दल वहां से मुसौवा जगदीश चौधरी के मकान पर धावा बोला और मकान को ध्वस्त कर दिया। घनी आबादी क्षेत्र होने के कारण लोगों में दहशत व्याप्त है। प्रशासन के द्वारा हाथियों को भगाने पर पहल नहीं किया जा रहा है।

स्वतंत्रता दिवस की तैयारी में जुटा प्रशासन

मुख्य समारोह स्थल कर्जन ग्राउंड में 9:05 बजे होगा झंडोतोलन

क्रॉस कंट्री रेस, प्रभात फेरी, फैंसी फुटबॉल खेल का आयोजन समेत संध्या में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी होगा आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। 15 अगस्त के तैयारियों के मद्देनजर उपायुक्त नैंसी सहाय की अध्यक्षता में गुरुवार को समाहरणालय सभाकक्ष में जिला स्तरीय बैठक आयोजित की गयी। बैठक मे स्वतंत्रता दिवस समारोह को भव्य व आकर्षक रूप से मनाने पर चर्चा हुई। उन्होंने कहा पूर्व के आयोजन के अनुसार ही इस बार भी झंडोत्तोलन का कार्यक्रम मुख्य आयोजन स्थल कर्जन ग्राउंड में आयोजित किए जायेंगे।

झंडोत्तोलन के अवसर पर परेड, राष्ट्रीय ध्वज को सलामी सम्मान सार्जेंट मेजर द्वारा की जायेगी। परेड में झारखंड सैन्य पुलिस, बीएसएफ मेरु और सीआरपीएफ के एक एक प्लाटून बल रहेंगे तथा जिला सशस्त्र बल के 2 प्लाटून रहेंगें। पार्टी बैंड की व्यवस्था बीएसएफ मेरु कैंप के स्तर से की जायेगी। स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या में सेना के जवानों द्वारा फुल ड्रेस रिहर्सल परेड का आयोजन किया जायेगा। मौके पर पुलिस अधीक्षक मनोज रतन चोथे ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मीडिया एकादश तथा प्रशासन एकादश के बीच एक फैंसी फुटबॉल मैच का आयोजन किया जायेगा। वहीं 15 अगस्त की संध्या स्थानीय विधालय के बच्चों व कलाकारों के द्वारा देश भक्ति पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। उपायुक्त ने कर्जन ग्राउंड की वर्तमान स्थिति से अवगत होते हुए साफ सफाई और रंग रोगन आदि कार्यो को ससमय पूर्ण करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा की स्वतंत्रता दिवस पर जिला के स्वतन्त्रता सेनानियों व उनके आश्रितों को जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित किया जायेगा। साथ ही उन्होंने कहा कि इस स्वतंत्रता दिवस के मौके पर राज्य अथवा राष्ट्रीय स्तर पर खेल के क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करने वाले जिले के खिलाड़ियों, रक्तदान शिविर में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने वाले लोगो तथा जिला के आंदोलनकारियों को भी सम्मानित किया जायेगा। मौके पर उपविकास आयुक्त प्रेरणा दीक्षित, अपर समाहर्ता राकेश रोशन, प्रशिक्षु आईएएस सुलोचना मीणा, सदर एसडीओ विद्याभूषण कुमार, एसडीओ बरही पुनम कुजूर, जिलास्तरिय पदाधिकारी, विभिन्न क्षेत्रों के कलाकार, एनजीओ के प्रतिनिधि व अन्य मौजूद थे।

सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड
एक मिनीरत्न कम्पनी
(कोल इंडिया लिमिटेड की एक अनुषंगी कम्पनी)

सूचना

सामग्री, कार्यों एवं सेवाओं के खरीद हेतु सीआईएल एवं इसकी अनुषंगी कंपनियों द्वारा जारी सभी निविदाएँ कोल इंडिया लिमिटेड की वेबसाइट **www.coalindia.in/** संबंधित अनुषंगी कंपनी (सीसीएल,**www.centralcoalfields.in**) सीआईएल ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल **https://coalindiatenders.nic.in** एवं सेंट्रल पब्लिक प्रोक्योरमेंट पोर्टल **https://eprocure.gov.in** पर उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त जीईएम पोर्टल **https://gem.gov.in** के माध्यम से भी खरीद की जाती हैं।

बिना सरकारी अनुमति के सार्वजनिक स्थलों पर पोस्टर बैनर लगाने पर होगी कार्रवाई: सीओ

बरही (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत सार्वजनिक स्थलों, सरकारी स्थल, भवन, चौक चौराहों पर बिना सक्षम पदाधिकारी के अनुमति के बगैर पोस्टर बैनर लगाना पूर्ण रूप वर्जित है। इस संबंध में अंचल अधिकारी बरही ने आम नागरिकों को पत्र के माध्यम से अपील करते हुये कहा कि प्रायः देखा जाता है कि बरही चौक में विभिन्न दल, संप्रदाय, धर्म विशेष तथा व्यक्तिगत पोस्टर, बैनर , फ्लैक्स, झंडा बिना सक्षम पदाधिकारी के अनुमति के लगाया जा रहा जिसमें समय समय पर शांति भंग होने की समस्या उत्पन्न हो जाती है। उन्होंने कहा कि सभी संबंधित राजनीतिक दल, संप्रदाय, धर्म विशेष, व्यक्ति विशेष और संबंधित पक्षों को निर्देशित किया गया कि बिना सक्षम पदाधिकारी के अनुमति बगैर लगाने पर कानूनी कार्रवाई की जायेगी। वहीं उन्होंने कहा कि सार्वजनिक स्थलों पर लगायें गए सभी पोस्टर बैनर को अविलंब हटाया जायें।

मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लागू हो: डॉ आरसी मेहता

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। देश को शर्मसार करने वाला मणिपुर की घटना है। विगत 4 महीनों से जातीय हिंसा में मणिपुर जल रहा है, जिसमें मणिपुर की सरकार विफल है। इसके बावजूद केंद्र सरकार मूकदर्शक बनी हुई है। राष्ट्रपति द्रोपति मुर्मू से निवेदन है कि स्वयं संज्ञान में लेकर मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लागू करें। यह बातें हजारीबाग विधानसभा महागठबंधन के पूर्व प्रत्याशी डॉ आरसी प्रसाद मेहता ने अपने कार्यालय में कहा। उन्होंने कहा कि मणिपुर में भीड़ द्वारा आदिवासी महिलाओं को नंगा कर उसके शरीर को नोच खरोच कर शर्मसार किया जा रहा है, जिससे विश्व में भारत की छवि धूमिल हो रही है। यह चिंता का विषय है। न्यायालय दोषियों को फास्ट्रेक कोर्ट के द्वारा तत्काल फांसी की सजा दे। जातीय हिंसा के कारण सैकड़ों नागरिक को जान गंवानी पड़ी है। हजारों की संख्या में लोग राहत शिविरों में जी रहे हैं। इसके बावजूद केंद्र सरकार धृष्टराष्ट्र बनी हुई है। मणिपुर हिंसा रोकने में नाकाम वीरेंद्र सरकार को अविलंब बर्खास्त किया जाये। तत्पश्चात राष्ट्रपति शासन लागू कर कानून व्यवस्था बहाल किया जाये।

ओमान में फंसे मजदूरों के वेतन को लेकर मांडू विधायक ने विदेश मंत्री को लिखा पत्र

विष्णुगढ़/कुजू (आजाद सिपाही)। राज्य के हजारीबाग बोकारो और गिरिडीह जिले के 6 प्रवासी मजदूर ओमान के मस्कट में फंसे है। उन्हें वतन वापसी को लेकर मांडू विधायक जय प्रकाश भाई पटेल ने विदेश मंत्री भारत सरकार एस जयशंकर को पत्र लिखा है। मांडू विधायक ने पत्र में कहा है कि 6 मजदूर ओमान के मस्कट में बुरी तरह से फस गये है ये सभी मजदूर मोबाइल टावर खड़ी करने वाली कंपनी में काम करने गये थे जहां पिछले छः माह से वेतन नही दिया जा रहा है। जिसके कारण खाने पीने को मोहताज हो गये है। टावर कंपनी द्वारा मजदूरों का पास्पोर्ट भी जप्त कर लिया गया है। झारखंड के रहने वाले इनके परिजन बहुत ही भयभीत व आशंकित है। फंसे मजदूरों में विष्णुगढ़ नरकी के संजय महतो, उचाघाना के महादेव महतो, अंबाडीह के दिनेश महतो, बगोदर माहुरी के अर्जुन महतो, किशोर महतो, पोखरिया पेंक युगल महतो का नाम शामिल हैं। मांडू विधायक जय प्रकाश भाई पटेल ने पत्र की प्रति मुख्यमंत्री झारखंड, विदेश सचिव भारत सरकार व मुख्य सचिव झारखंड को भी दी है।

इंद्रधनुष कार्यक्रम को लेकर हुई बैठक

बरकट्ठा (आजाद सिपाही)। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरकट्ठा में राष्ट्रीय फाइलेरिया उन्मूलन और मिशन इंद्रधनुष कार्यक्रम को लेकर अधिकारी और जनप्रतिनिधियों की बैठक हुई। अध्यक्षता चिकित्सा प्रभारी डॉ रत्ना रानी कुंज ने की संचालन एमटीएस रूपलाल कुमार ने किया। मौके पर प्रखंड प्रमुख रेणू देवी, उपप्रमुख सूरजी देवी, प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष प्रदीप प्रसाद, सीओ श्रीकांत लाल मांझी, बीइइओ किशोर कुमार, सांसद प्रतिनिधि रघुवीर प्रसाद मौजूद थे। डॉ रत्ना रानी ने कहा की आगामी 10 से 25 अगस्त तक अभियान चलेगा। बताया की 10 अगस्त को 193 बूथ पर तथा 11 से 25 अगस्त तक घर-घर जाकर फाइलेरिया दवा खिलाया जाना है। जिसमें स्वास्थ्य विभाग की टीम और सहिया दीदी घर-घर पहुंचेगी। बताया गया कि पानी जमाव को रोकने का काम किया जाये। इस अवसर पर बैठक में भाजपा मंडल अध्यक्ष टुकलाल नायक, आंगनबाड़ी पर्यवेक्षिका संयुक्ता कुमारी, प्रधान लिपिक सोनी रविदास, बीपीएम रंजीत कुमार सिंह, हेल्थ मैनेजर पंकज कुमार, भवेश कुमार, विशाल कुमार, एमपीडब्ल्यू अनील कुमार, संजय कुमार समेत कई लोग उपस्थित थे।

वन विभाग की छापेमारी में लोकाइ और सलइडीह से 112 बोरा ब्लूस्टोन जब्त

आजाद सिपाही संवाददाता

कोडरमा। कोडरमा वन प्रक्षेत्र के लोकाई में गुरुवार को वन विभाग ने ब्लू स्टोन के अवैध उत्खनन पर कार्रवाई की है। वन प्रक्षेत्र पदाधिकारी रामबाबू के नेतृत्व में वन विभाग की पुलिस टीम और कर्मियों ने संयुक्त रूप से अवैध उत्खनन को लेकर कार्रवाई किया। जिसमें 8 बोरा ब्लूस्टोन जब्त किया गया है। इस दौरान अवैध उत्खनन वाले स्थान से एक मोटरसाइकिल को भी जब्त किया गया है। वन विभाग के द्वारा जब्त किये गए ब्लूस्टोन और मोटरसाइकिल को वन विभाग के कार्यालय में रखा गया है। फिलहाल इस अवैध उत्खनन के मामले में किसी की गिरफ्तारी नहीं हो पायी है। वन विभाग अवैध उत्खनन से जुड़े लोगों पर प्राथमिकी दर्ज करने की तैयारी में है। इधर इंदरवा के पास स्थित सलईडीह में भी छापेमारी की गयी, जहां राजेंद्र यादव (पिता डेगन यादव) के पुराने घर से 104 बोरा ब्लू स्टोन बरामद किया गया। गुप्त सूचना के आधार पर जिला खनन पदाधिकारी दारोगा राय के नेतृत्व में जिला टास्क फोर्स की टीम ने छापेमारी की।

दलितों की जमीन में जबरन चलायी गयी जेसीबी मशीन
पूर्व विधायक लोकनाथ महतो की पहल पर बंद कराया गया काम

आजाद सिपाही संवाददाता

बड़कागांव। बड़कागांव हजारीबाग रोड स्थित पंकरी बरवाडीह के पास बिना सूचना दिये हुए 18 दलितों के भूमि पर एनटीपीसी के कुछ अधिकारियों द्वारा पुलिस बल का भय दिखाकर जेसीबी मशीन चला कर जबरन अधिग्रहण करने का प्रयास किया। अपने जमीन में घर मरम्मती करने वाले वीर मनु पासवान देखा तो विरोध किया और भूमि के दलित मालिकों को बुलाया। दलितों द्वारा एनटीपीसी के अधिकारियों से कहा गया है कि यह जमीन हमारा उपजाऊ है। हम अपनी जमीन कंपनी को नहीं दिए हैं। इसके बावजूद भी कंपनी द्वारा जबरदस्ती जेसीबी मशीन चला कर अधिकरण क्यों कर रही है।

दलितों ने पूर्व विधायक लोकनाथ महतो को इसकी सूचना दी। सूचना पाते ही पूर्व विधायक लोकनाथ महतो घटनास्थल पर पहुंचकर कंपनी के अधिकारियों से वातार्लाप किया और जेसीबी मशीन से रुकवाया। इस दौरान दलितों ने जमीन के कागजात दिखाया। जमीन के खाद्यान्न और रसीद को देखकर पूर्व विधायक लोकनाथ महतो ने सुझाव दिया कि दलित भू स्वामियों के साथ बैठकर उक्त समस्या का समाधान निकाला जाये। इधर सुरेंद्र कुमार तुरी और बीर मनु पासवान ने बताया कि जमीन का खाता नंबर 2, प्लॉट नंबर 399 रकवा 11.87 डिसमिल है। दलितों ने जानकारी दिया कि उक्त जमीन में वीर मनु पासवान, कोयली देवी, जितेंद्र पासवान, शिव सागर राम, रावण गंझु, सोहर दुसाध, डोमन डोम, नागो डोम टहल दुसाद, महावीर राम, महादेव भुईया, लाला तुरी, गणेश राम, समेत 18 दलितों की 50-50 डिसमिल जमीन है। एनटीपीसी के कुछ अधिकारियों ने जेसीबी मशीन चला कर कोयली देवी की जमीन में ट्रेंस काट दिया है, जो असंवैधानिक है।

प्लस टू विद्यालय में बाल विवाह और यौन शोषण पर कार्यक्रम

आजाद सिपाही संवाददाता

बड़कागांव। जन सेवा परिषद, कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रेन फाउंडेशन और चाइल्डलाइन 1098 के संयुक्त तत्वावधान में प्लस टू हाई स्कूल बड़कागांव के बच्चे और बच्चियों के बीच चाइल्डलाइन के टीम लीडर और सीएसडब्ल्यू रंजीत कुमार चौबे द्वारा बाल विवाह, बाल मजदूरी, बाल यौन शोषण पर कार्यक्रम किया गया, तथा बच्चियों को जागरूक किया गया। रटीम लीडर ने कहा कि जिस तरह से उगता हुआ सूरज अपने प्रकाश से धरती के अंधेरा समाप्त कर प्रकाश ले आता है, उसी तरह से आप बच्चे आने वाले समय में भारत में उजाला फैलाने का काम करेंगे। आप में से ही आने वाले भविष्य में कोई बच्चे आइएएस, आईपीएस, डॉक्टर, इंजीनियर, बीडीओ, सीओ इत्यादि पदों पर जाकर भविष्य निर्माण करेंगे। लेकिन वहां तक पहुंचने के लिए हमें बाल विवाह, बाल मजदूरी और बाल यौन उत्पीड़न से बचना होगा। जोकि हमारे समाज में कोड के रूप में फैली हुई है। कार्यक्रम में रंजीत चौबे के नेतृत्व में सभी ने शपथ लिया की भविष्य में अगर किसी बच्ची के साथ या फिर उनके आसपास इस तरह की समस्या दिखती हो या घटती हो तो तुरंत चाइल्ड लाइन के टोल फ्री नंबर 1098 और स्थानीय पुलिस पदाधिकारी को सूचना देंगे। मौके पर उपस्थित लोगों में मुख्य रूप से में मध्य पंचायत पंचायत समिति सदस्य रितेश ठाकुर, प्रभारी प्रधानाध्यापक कृष्ण कुमार कन्हैया, शिक्षक अशोक राम, सूरज निरव, राजेश रंजन गुप्ता, कुलेश्वर महतो, मेघनाथ महतो, मनीष चंद्र पांडे, मदन कुमार, सुधा कुमारी, रूपा स्वपन, निखत उस्मानी, कुंती कुमारी, तसलीमा खातून के अलावा छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

आंगनबाड़ी सेविका को कार्यशैली में सुधार लाने का निर्देश: महेश प्रसाद

केरेडारी (आजाद सिपाही)। प्रखंड के पचड़ा पंचायत के जोरदाग गांव स्थित आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 1 में स्थानीय ग्रामीणों की एक बैठक आयोजित की गई, इस बैठक में मुख्य रूप से आंगनबाड़ी सेविका माधुरी देवी की कार्यशैली पर विशेष रूप से चर्चा किया गयां। पचड़ा पंचायत के मुखिया महेश प्रसाद साव ने बताया की आंगनबाड़ी सेविका माधुरी देवी के खिलाफ विगत एक वर्ष से कई शिकायतें सामने आ रही थी। बैठक में जनप्रतिनिधियों ने इन्हें अपनी कार्यशैली में सुधार लाने का निर्देश भी दिया। वही आंगनबाड़ी सेविका माधुरी देवी ने भी मौजूद लोगों को अपनी कार्यशैली में सुधार का आश्वासन दिया, मौके पर प्रमुख सुनीता देवी, पचड़ा मुखिया महेश प्रसाद साव, सुपरवाइजर मंजू देवी, उप मुखिया कौलेशवर महतो, वार्ड सदस्य कन्हाय माली, कालु राम सहित कई लोग मौजूद थे।

नेशनल पार्क जंगल में मिला युवक का धड़, भीम सिंह के रूप में हुई पहचान
पैसे की लालच में की थी सगे भाई की हत्या

हत्यारों ने धड़ को इचाक के लोटवा जबकि सर को पदमा थाना क्षेत्र में फेंका

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। इचाक थाना क्षेत्र के नेशनल पार्क स्थित पोखरिया लोटवा जंगल से एक अज्ञात व्यक्ति का सर कटा लाश 9 जुलाई को बरामद हुआ था। जिस पर इचाक थाना में कांड संख्या 130 / 23 दर्ज किया गया था। बरामद अज्ञात शव का सत्यापन कर दोषी पर अविलंब कार्रवाई करने हेतु अनुसंधान प्रारंभ किया गया। अनुसंधान के क्रम में अज्ञात व्यक्ति के शव के संबंध में हजारीबाग जिला अंतर्गत सभी थानों और अगल-बगल के जिला और राज्यों से संपर्क स्थापित कर अज्ञात व्यक्ति के शव के संबंध में पता लगाया जाने लगा। अनुसंधान के क्रम में पता चला कि मृतक भीम सिंह उम्र करीब 41 वर्ष पिता -स्व विक्रमा सिंह ग्राम-साया, थाना-नवीनगर जिला-औरंगाबाद (बिहार) गत 8 जुलाई को रात्री साढ़े आठ बजे टण्डवा थाना क्षेत्र, जिला-औरगाबाद (बिहार) से अपहरण कर हत्या करने के उपरांत मृतक के सर को पदमा ओपी क्षेत्र और धड़ को इचाक थाना क्षेत्र अन्तर्गत पोखरिया लोटवा जंगल में फेंक दिया गया था। इचाक थाना पुलिस के सहयोग से टंडवा थाना जिला - औरंगाबाद (बिहार) के द्वारा इस घटना में संलिप्त चार अभियुक्तों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। गिरफ्तार अभियुक्तों में शालीग्राम सिंह पिता विशिष्ट सिंह ग्राम पिपरा थाना- नवीनगर, अर्जुन सिंह पिता विक्रमा सिंह ग्राम साया थाना-नवीनगर, आरती देवी पति अर्जुन सिंह ग्राम साया थाना-नवीनगर तीनो जिला औरंगाबाद और रंजीत कुमार सिंह पिता सुरेश सिंह ग्राम समहुता थाना नगर जिला रोहतास के रूप में हुई है। अर्जुन सिंह, मृतक भीम सिंह का अपना भाई हैं। पैसों के लालच और भीम सिंह की किसी और जाती की महिला से विवाह करने के इच्छा जताने के पश्चात अर्जुन सिंह क्रोधित हो गए। अर्जुन सिंह ने अन्य तीन अभियुक्तों के साथ षड्यंत्र रच कर भीम सिंह की हत्या औरंगाबाद में कर दी और पदमा ओपी क्षेत्र में भीम सिंह का कटा सिर और इचाक क्षेत्र ने नेशनल पार्क के लोटवा में धड़ को फेक दिया था।

विद्यालय में फाइलेरिया को लेकर कार्यशाला

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार के तत्वावधान में चलाये जा रहे फाइलेरिया रोग की रोकथाम के लिए सिकरी उत्क्रमित हाइ स्कूल में कार्यशाला आयोजित की गयी। इसका नेतृत्व चिकित्सा प्रभारी डॉ बीएन प्रसाद ने किया। कार्यशाला में पिरामल फाउंडेशन हजारीबाग के रितेश कुमार,स्वास्थ्य विभाग बड़कागांव के मनोज प्रभाकर बच्चों को फलेरिया के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। शिक्षकों व बच्चों को बताया गया कि फलेरिया कैसे होता है, इसके बचाव क्या है, फाइलेरिया से निजात पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए, इन सब बातों को विस्तार पूर्वक बताया। मौके पर प्रबंधन समिति के अध्यक्ष राजेंद्र कुमार, शिक्षक पंकज कुमार दास, अरुण गुप्ता, हरिश्चंद्र कुमार, रामजी प्रसाद सिंह, बालेश्वर महतो, अशोक कुमार, कार्तिक राम, पीओटी टीचर शिल्पी रानी, एंजेल मिंज समेत अन्य मौजूद थे।

गोला पुलिस ने कुएं से शव किया बरामद

गोला (आजाद सिपाही)। गोला पुलिस ने गुरुवार की सुबह को हेसा पोड़ा पंचायत अंतर्गत कोरांबे गांव के एक कुवें से शव बरामद किया है। शव की पहचान सीता प्रसाद उम्र 60 वर्ष के रूप में की गयी। घटना के संबंध में बताया गया कि सीता प्रसाद मूल रूप से बिहार गया जिला के निवासी थे। वे पिछले 28 जुलाई को कोराबें से घर जाने के लिए निकले थे। इसके बाद उनकी खोजबीन की जा रही थी। बताया गया कि वो पिछले आठ दस वर्षों से अपने ससुराल कोरांबे गांव में रहते थे। उनका खाद्य बीज का अपना दुकान था। शव में कई चोट के निशान है। जिससे मौत संदेहास्पद बताया गया है। हालांकि पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है। परिजन इसे आत्महत्या मान रहे है।

पेट्रोल पंप कर्मी से नगद और मोबाइल की लूट

हंटरगंज/ चतरा (आजाद सिपाही)। प्रखंड के डुमरी गांव के सोवा दाग जिया पेट्रोल पंप में बुधवार की रात्रि 2 बजे एक लूट की घटना को अंजाम दिया गया। जिसमें दो अपाची मोटरसाइकिल से सवार होकर पांच अपराधी आये। सभी अपराधी हेलमेट पहने और मुंह बांधे हुये थे। जिसमें दो अपराधी के हाथ में देसी कट्टा था। अपराधियों ने पेट्रोल पंप में घुसते ही नोजल मैन शालिग्राम सिंह, पप्पू यादव और संतोष सिंह को अपने कब्जे में ले लिया और उनके साथ मारपीट करने लगे। जिसके बाद नोजल मैन शालिग्राम सिंह का मोबाइल और 39,610 रूपया नगद लूट कर चलते बने।

ऐतिहासिक होगा हल्ला बोल कार्यक्रम: रोशन लाल चौधरी

पतरातू (आजाद सिपाही)। धरना प्रदर्शन हल्ला बोल कार्यक्रम 4 अगस्त को पतरातू प्रखंड सह अंचल कार्यालय परिसर में आजसू पतरातू प्रखंड कमिटी द्वारा आयोजित किया जायेगा। हल्ला बोल कार्यक्रम ऐतिहासिक कार्यक्रम होगा। यह कार्यक्रम झारखंड सरकार और स्थानीय विधायक के नाकामियों के खिलाफ किया जा रहा है जिसकी तैयारी पूरी कर ली गयी है। पीटीपीएस आवासीय कार्यालय से प्रेस जारी कर पार्टी के केंद्रीय महासचिव सह बड़कागांव विधानसभा प्रभारी रोशन लाल चौधरी यह जानकारी पत्रकारों को दी। मौके पर केंद्रीय सचिव विजय कुमार साहू, प्रखंड अध्यक्ष गंगाधर महतो, जिला उपाध्यक्ष राजू कुमार, जिला संगठन सचिव अशोक, पाठक जिला प्रवक्ता वीरेंद्र झा, प्रखंड कार्यकारी अध्यक्ष बृजेश सिंह, जिला सह सचिव अजय रवि, संतोस सिंह, वरीय नेता राहुल कुमार, गणेश करमाली, लक्ष्मीकांत, सुधीर कुमार, छोटू करमाली, विजेंद्र मुंडा, मनोज राम, राकेश विश्वकर्मा आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मुखिया ने बिजली की समस्या को ले पीओ को सौंपा पत्र

भुरकुंडा (आजाद सिपाही)। बिजली का पोल व तार दुरुस्त करने की मांग को ले गुरूवार को स्थानीय मुखिया अजय कुमार पासवान ने भुरकुंडा पीओ मनोज कुमार पाठक को पत्र सौंपा है। सौंपे गये पत्र में कहा गया है कि भुरकुंडा पंचायत क्षेत्र में बिजली की पोल व तार की स्थिति काफी जर्जर हो गई है। साथ ही कई जगहों पर बिजली के तार पेड़ों के संपर्क में भी हैं। जिसके कारण बारिश के मौसम में पेड़ों में भी करंट आने की संभावना बनी रहती है। जिससे अप्रिय घटना की आशंका बनी रहती है। ज्ञापन में कहा गया है कि जर्जर बिजली पोलों की स्थिति ऐसी है कि वे कभी भी गिर सकता है। मुखिया अजय पासवान ने परियोजना पदाधिकारी मनोज कुमार पाठक से पंचायत क्षेत्र में जर्जर पोल व तार को जल्द से जल्द दुरुस्त करने की मांग की है। वहीं पीओ मनोज पाठक ने मामले को गंभीरता पूर्वक लेते हुए समस्या का जल्द समाधान करने की बात कही है। साथ ही पीओ मनोज पाठक ने मुखिया अजय पासवान से कहा कि कुछ लोग सीसीएल के बिजली का दुरूपयोग कर रहे हैं। वैसे लोगों को चिन्हित कर अपने पंचायत क्षेत्र में जागरूक करें ताकि ट्रांसफॉर्मर पर अधिक लोड न पड़े। और सुचारू से विद्युत आपूर्ति हो सके। खासकर सीसीएल के बिजली को कमर्शियल रूप में उपयोग नहीं करें। पिला बल्ब हीटर डबल कनेक्शन नहीं रखें।इस जागरूकता अभियान में सीसीएल परिवार आपके साथ है।

तेलियातु में नये ट्रांसफार्मर का उद्घाटन

रामगढ़ (आजाद सिपाही)। नगर परिषद के तेलियातु में नये ट्रांसफार्मर का उद्घाटन बड़कागांव विधानसभा प्रभारी रोशनलाल चौधरी और नगर परिषद उपाध्यक्ष मनोज कुमार महतो ने विधिवत पूजा अर्चना व फीताकाटकर किया। मौके पर रोशनलाल चौधरी ने बताया कि पिछले कई दिनों से बिजली की समस्या से परेशान थे। बहुत से ऐसे कार्य है जो विद्युत के बिना संभव नहीं है, ऐसे में बिजली नहीं रहने से ग्रामीणों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। बच्चों की पढ़ाई भी अवरुद्ध हो गयी थी। विद्युत व्यवस्था बहाल हो जाने से तेलियातु के लगभग सैकड़ों की आबादी लाभांवित होंगे।गांव में बिजली आने से ग्रामीणों ने रोशनलाल चौधरी और मनोज कुमार महतो के प्रति आभार प्रकट किया। मौके पर अखिलेश महतो, विशेश्वर महतो, धर्मवीर महतो, संजय करमाली, कौलेश्वर महतो, गोकुल महतो, सुरेश महतो, राजेश महतो, पंकज मोदी, ओमप्रकाश महतो, झालो देवी, मूलो देवी, पातो देवी, गालों देवी, कदमी देवी, कविता देवी आदि अन्य लोग उपस्थित थे।

पीवीयूएन पतरातू में भारतीय अंगदान दिवस मना

पतरातू (आजाद सिपाही)। आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में 3 अगस्त 2023 को अंगदान महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। यह भारत में पहले सफल मृतक हृदय प्रत्यारोपण की याद दिलाता है। यह मृतक दाताओं और उनके परिवारों द्वारा समाज में किए गए योगदान का जश्न मनाता है। इस दिन को चिह्नित करने और जागरूकता फैलाने के लिए पीवीयूएन के चिकित्सा विभाग द्वारा एडमिन बिल्डिंग के कॉन्फ्रेंस हॉल में एक प्रतिज्ञा समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके सीइओ (पीवीयूएन) वीरेंद्र कुमार सहित कई अधिकारी उपस्थित थे।

घोर निंदनीय है विधायक इरफान अंसारी की टिप्पणी: सतीश मोहन मिश्रा

भुरकुंडा (आजाद सिपाही)। कांग्रेस विधायक इरफान अंसारी द्वारा बुधवार को विधानसभा में आदिवासी समाज और भाजपा के झारखंड प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी के ऊपर आपत्तिजनक टिप्पणी किए जाने की भाजपा भुरकुंडा मंडल अध्यक्ष सतीश मोहन मिश्रा ने कड़े शब्दों में निदा की है। उन्होंने कहा कि इरफान अंसारी द्वारा आदिवासी समाज को बुड़बक कहा गया और आदिवासियों का मजाक उड़ाया जो काफी शर्मनाक बात है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी आदिवासियों के कितनी हितैषी हैं यह इरफान अंसारी के टिप्पणी से पता चलता है। जहां एक और भाजपा द्वारा आदिवासी महिला को भारत का राष्ट्रपति बनाया जाता है वहीं कांग्रेस पार्टी के विधायक द्वारा ऐसे मानसिकता का परिचय दिया जाता है जो समझ से परे है। उन्होंने कांग्रेस विधायक इरफान अंसारी द्वारा आपत्तिजनक टिप्पणी किए जाने का भाजपा भुरकुंडा मंडल की ओर से घोर निंदा की है।

वाहन के धक्के से मवेशी की मौत

गोला (आजाद सिपाही)। रामगढ़ बोकारो एन एच 23 धमना टांड़ गांव के समीप गुरुवार को एक वाहन के धक्के से किसान शिवचरण महतो के मवेशी की मौत हो गई।

पवन यादव हत्याकांड का रामगढ़ पुलिस ने किया खुलासा

पैसे की लेनदेन में दो भाइयों ने दोस्त को उतारा मौत के घाट

मामले में दो भाई, मां और एक अन्य साक्ष्य छुपाने के आरोप में गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। पवन यादव हत्याकांड मामले में रामगढ़ थाना पुलिस ने महज 24 घंटे के अंदर कांड में संलिप्त दो सगे भाई, उसकी मां एवं अन्य आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। इस मामले खुलासा गुरुवार को एसडीपीओ किशोर कुमार रजक ने रामगढ़ थाना में प्रेस कांन्फ्रेंस के दौरान पत्रकारों को दी। एसडीपीओ किशोर कुमार रजक ने बताया कि हत्या के बाद एसपी के द्वारा गठित एसआइटी छापेमारी दल का गठन किया गया। छापेमारी दल ने कांड में वैज्ञानिक विधि के साथ संग्रह करते हुए दो आरोपियों को पकड़ा। पकड़े गये आरोपियों से गहन पूछताछ के दौरान हत्या में संलिप्त एक महिला व अन्य युवक को गिरफ्तारी किया गया। इनके निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त चाकू, कपड़ा, मोटरसाइकिल, मृतक का मोबाइल को बरामद किया गया। एसडीपीओ ने बताया कि पकड़े गए आरोपी और मृतक पवन यादव आपस में मित्र हैं। जिनके बीच बकाया पैसे को लेकर विवाद हुआ और 1 अगस्त की रात्रि सुनियोजित योजना के अनुसार जारा टोला स्थित राधा गोविंद स्कूल के पास सुनसान मैदान में पवन यादव को बेरहमी से चाकू मारकर गंभीर रूप से जख्मी कर दिया गया। जिसे पुलिस और स्थानीय लोगों की मदद से जख्मी हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान पवन यादव की मौत हो गई। इस संबंध में मृतक के परिजन ने रामगढ़ थाने में प्राथमिकी दर्ज कराया है।

इन लोगों को किया गया गिरफ्तार

पुलिस ने हत्या में प्राथमिकी अभियुक्त विकास नगर राज होटल के नजदीक निवासी मो हमास उर्फ मोटा, मो आजाद उर्फ सूर्या, अप्राथमिकी अभियुक्त कौशर जहां व सोनू यादव शामिल है।

गिरफ्तार अभियुक्तों के पास से की गयी जब्त सामान

गिरफ्तार अभियुक्तों के पास से कांड में प्रयुक्त खून लगा चाकू, मो हमास का खून लगा कपड़ा, एक मोटरसाइकिल संख्या जेएच 02ए एन 7631 व मृतक पवन यादव का मोबाइल को जब्त किया गया।

छापामारी टीम में ये थे शामिल

छापामारी दल में में एसडीपीओ रामगढ़ किशोर कुमार रजक, रामगढ़ थाना प्रभारी सह इंस्पेक्टर रोहित कुमार, सब इंस्पेक्टर सैनिक समद, प्यारे हसन, नवीन कुमार, प्रभात कुमार, सुरेंद्र सिंह कुंतिया, रौशन कुमार, मंटू चौधरी, श्यामनंदन सिंह सहित रामगढ़ थाना के सशस्त्र बल शामिल थे।

लायंस क्लब ऑफ भुरकुंडा में धूमधाम से मना पदस्थापना समारोह

आजाद सिपाही संवाददाता

भुरकुंडा। भुरकुंडा एयर टेल टॉवर स्थित उत्सव मैरेज हॉल में बुधवार की रात्रि लायंस क्लब ऑफ भुरकुंडा का 16वां पद स्थापना समारोह धूमधाम से मनाया गया। समारोह का उद्घाटन डिस्ट्रिक्ट गवर्नर कमल जैन, माधव लखोटिया, राहुल वर्मा, सीमा बाजपाई, संजय कुमार, क्लब की अध्यक्ष माला शर्मा, सचिव रेखा वर्णवाल, कोषाध्यक्ष अंजू देवी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया। समारोह में सत्र 2022-23 के क्लब अध्यक्ष एमजेएफ लायन राजेंद्र महतो, सचिव विजयंत कुमार व कोषाध्यक्ष अशोक सिन्हा ने क्लब के कार्यो की रिपोर्ट प्रस्तुत की। साथ ही नए सत्र के पदाधिकारियों को कार्यभार सौंपा गया। और क्लब का बैच लगाया गया। मौके पर कमल जैन ने कहा की लायंस क्लब पूरे विश्व की सबसे बड़ी सामाजिक संस्थाओं में से एक है। इस बार क्लब की जिम्मेवारी महिलाओं के कंधे पर है जो गौरव की बात है। वहीं नये सत्र की अध्यक्ष माला शर्मा व सचिव रेखा वर्णवाल व कोषाध्यक्ष अंजू देवी ने कहा कि पूर्व की तरह इस बार भी पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वरोजगार के क्षेत्र में क्लब कई प्रोजेक्ट चलाया जायेगा। समारोह में 7 नये सदस्य शिवा प्रसाद, रेणु जयसवाल, अनिता कुमारी, रेणु सिंह, बबनी देवी, शिवम कुमार और प्रशांत यादव ने समाज व क्लबहित कार्य करते हुए इसे और बुंलदियों पर ले जाने का शपथ लिया। वहीं सोनाराम मांझी व संजय कुमार नये मेंबर एमजेएफ बने हैं। राष्ट्रीय गान के साथ समारोह का समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन एचएन यादव ने किया। मौके पर राजेश अग्रवाल, निर्मल अग्रवाल, प्रमोद शर्मा, विमल प्रसाद, अखिलेश शर्मा, अजय सिंह, संजय सिंह, सोनाराम मांझी, संजय कुमार, शिवा प्रसाद, शोभा राय, शीला देवी, सरिता देवी, विभा रानी, आशा अग्रवाल, अनीता देवी, रामगढ़ लायंस क्लब के प्रेसिडेंट विजय हरलालका, सचिव एसएन सोंधी, रमन मेहरा, रामगढ़ चेंबर के अध्यक्ष विनय अग्रवाल, सचिव मानु चतुवेर्दी, उपाध्यक्ष मंजीत साहनी, रोटरी क्लब भुरकुंडा के अध्यक्ष अशोक शर्मा, परमजीत सिंह धामी, भुपेन्द्र सिंह सैनी उर्फ जीबू सहित दर्जनों लोग मौजूद थें। मौके पर संजय कुमार, राजीव आनंद, राजेश अग्रवाल, निर्मल अग्रवाल, प्रमोद शर्मा, विमल प्रसाद, हेमंत शरण, अखिलेश शर्मा, एचएन यादव, अजय सिंह, संजय सिंह, संजय चैधरी, शिवा प्रसाद, सुनील प्रसाद, जिबू सिंह सैनी, विजय वर्णवाल, सोनाराम मांझी, शोभा राय, शीला देवी, सरिता देवी, विभा रानी, आशा अग्रवाल, अनीता देवी, शिवम कुमार रोटरी क्लब के परमजीत सिंह धामी, अशोक शर्मा उपस्थित थे।

बैगा बिरहोर परिवारों के बीच चलाया जागरूकता अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

हंटरगंज/चतरा। जिला विधिक सेवा प्राधिकार की सचिव प्रज्ञा वाजपेयी के निर्देश पर हंटरगंज के चकला और पिपरा गांव में बिरहोर, बैगा परिवार के बीच विधिक जागरूकता अभियान चलाया गया। जागरूकता अभियान हंटरगंज प्रखंड कार्यालय के पीएलबी कुमार विवेक रंजन और सरयू यादव ने संयुक्त रूप से चलाया। इस दौरान बिरहोर और बैगा परिवार को सरकार के द्वारा चलाए जाने वाले योजनाओं का लाभ उठाने के साथ ही बैगा बिरहोर परिवार को अपने बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए उत्प्रेरित किया गया। इस दौरान बिरहोर द्वारा कई समस्याओं को रखा गया। जिसे पीएलबी द्वारा समस्याओं को संबंधित पदाधिकारियों तक पहुंचाने का आश्वासन दिया गया। वही उरैली पंचायत सचिवालय में आयोजित अंगदान शपथ कार्यक्रम में दोनों पीएलबी ने संयुक्त रुप से अंगदान के महत्व से लोगों को अवगत कराया। साथ ही किसी को नया जीवन देने के लिए अंगदान को आवश्यक बताते हुए मृत्यु के पश्चात अंगदान को एक महान कार्य बताया गया। इस मौके पर काफी संख्या में लोग मौजूद थे।

भाजयुमो ने बेरोजगारों को रोजगार देने की मांग को लेकर दिया धरना

सत्ता मिलते ही चुनावी वादों को भूली हेमंत सरकार: अविनाश

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। भारतीय जनता युवा मोर्चा के तत्वावधान में गुरुवार को स्थानीय नीति, नियोजन नीति और सीटेट में उत्तीर्ण झारखंड के आदिवासी-मूलवासी मेधावी बेरोजगार छात्रों को रोजगार देने की मांग को लेकर रामगढ़ अनुमंडल कार्यालय के समक्ष एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष ने किया। मौके पर झारखंड प्रदेश के प्रमंडलीय प्रभारी अविनाश आर्या ने कहा कि झारखंड सरकार ने चुनावी बिगुल में युवाओं को 5 लाख नौकरी देने का वादा किया था। साथ ही बेरोजगारी भत्ता 6000 से 7000 देंगे। लेकिन सत्ता मिलते ही हेमंत सरकार अपना वादें को भूल गई। युवाओं को सिर्फ ठगने का काम किया गया है। इसके अलावा झारखंड सरकार केवल खनिज संपदा को लूटने में व्यस्त है।

धरना में ये थे उपस्थित

भाजयुमो के झारखंड प्रदेश के प्रमंडलीय प्रभारी अविनाश आर्या चंद्रवंशी, प्रदेश उपाध्यक्ष भूपेंद्र सिंह, प्रदेश मंत्री पूजा सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण मेहता, विधायक प्रत्याशी और सांसद प्रतिनिधि रणंजय कुमार उर्फ कुंटू बाबू, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य नीरज झा, प्रदेश खेल कला प्रकोष्ठ कीर्ति गौरव, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजू चतुवेर्दी, मंत्री वसुध तिवारी, कोषाध्यक्ष दीनदयाल, भाजयुमो उपाध्यक्ष प्रहलाद पांडे, मंत्री धीरेंद्र साव, नीतीश कुमार, संजय अग्रवाल, मुकेश ठाकुर, रवि साहू, ऋषिकेश सिंह, सूरज कुमार, उमेश प्रसाद, महेंद्र प्रजापति, राजेश सोनी, नरोत्तम सिंह, अनिल ठाकुर, अमित ठाकुर, आकाश साहू सहित अन्य नेता व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

बाल विद्या मंदिर में स्वास्थ्य शिविर आयोजित

कुजू (आजाद सिपाही)। बाल विद्या मंदिर आरा में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। आयोजित शिविर में पारा हेल्थ केयर, सारूबेडा के डॉ गौतम कुमार (शिशु रोग विशेषज्ञ, भूतपूर्व चिकित्सक नई दिल्ली) द्वारा बच्चों को चिकन पॉक्स और आइ फ्लू से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां दी गयी। साथ ही, बीमारियों से जुड़े लक्षण, बचाव और सावधानियों के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। मौके पर आरके श्रीवास्तव, एसटीओ जमील अख्तर मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन हिंदी शिक्षिका सुनीता कुमारी ने की। मौके पर प्राचार्य रंजीत कुमार सिंह ने चिकित्सक को धन्यवाद देते हुये कहा कि सभी को इनके द्वारा बताये गए महत्वपूर्ण जानकारियों पर अवश्य अमल करें। मौके पर शिक्षक-शिक्षकेतर और छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

सड़क दुर्घटना में युवक की मौत

बरकाकाना (आजाद सिपाही)। रामगढ़ पतरातू मुख्य मार्ग टेलियातु मोड़ में बुधवार को कार व स्कूटी की टक्कर में घायल युवक साहील कुमार पिता संजय राम का इलाज के दौरान मौत हो गई है। मौत की खबर के बाद मुहल्ले में मातम का माहौल है। परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है। बरकाकाना ओपी ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

जिला में कानून व्यवस्था ठप, घटनाओं पर लगे विराम: हीरा गोप

बरकाकाना (आजाद सिपाही)। अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा रामगढ़ के जिलाध्यक्ष हीरा गोप ने प्रेस बयान जारी कर कहा कि रामगढ़ शहर के विकास नगर निवासी पवन यादव की निर्मम हत्या पर अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा रामगढ़ गहरा दु:ख व्यक्त करता है। उन्होंने कहा कि रामगढ़ शहर के व्यस्त इलाकों में पवन यादव की हत्या की घटना इस बात का स्पष्ट उदाहरण है कि रामगढ़ जिले में कानून व्यवस्था पूरी तरह से फैल है। आये दिन रामगढ़ जिले के विभिन्न क्षेत्रों में आपराधिक घटनायें हो रही है। शहर में चोरी, छिनतई, लूट, हत्या, गोली चलने जैसी घटनायें आम बात हो गयी है। जिले में कानून व्यवस्था ठप है जिसके कारण आम जनता असुरक्षित महसूस कर रही है। अपराधियों के हौसले बुलंद है जिसके कारण नित नए घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। गोप ने चेतावनी देते हुए कहा है कि जिले में आपराधिक घटनाओं पर जल्द से जल्द विराम लगे, जिससे आम नागरिक सुरक्षित महसूस करे, नहीं तो यादव समाज आंदोलन के लिए बाध्य होगा।

विधायक अंबा प्रसाद के प्रयासों से कई सड़क निर्माण की मिली स्वीकृति

पतरातू (आजाद सिपाही)। पतरातू प्रखंड क्षेत्र के तालाटांड़ मेन रोड से भुईयां टोली तक लगभग 2 किलोमीटर पथ का निर्माण यथाशीघ्र शुरू होगा और इस संबंध में ग्रामीण कार्य विभाग प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान हो गई हैं। उक्त सड़क के निर्माण के लिए विधायक अंबा प्रसाद की पहल और अनुशंसा पर लगभग दो करोड़ 19 लाख की लागत आयेगी। विधायक अंबा प्रसाद ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि सड़क निर्माण के लिए सभी प्रक्रिया पूरा कर ली गई है और बहुत जल्द सड़क निर्माण कार्य शुरू होगा। विधायक के पहल पर पतरातू प्रखंड क्षेत्र के बारूघुटु से मलानी तक की 1.2 किलोमीटर पथ, घुटवा से उरलौंग तक की 2.5 किमी, भंडरा से घाघरा तक की 1.4 किमी पथ, चिकोर से किन्नी तक की 11.8 किमी, चेतमा से लेम तक की 1.9 किमी पथ की भी विशेष मरम्मती कार्य कराया जायेगा और इस संदर्भ में प्राक्कलन बनाकर स्वीकृति हेतु विभाग को भेज दिया गया है जल्द ही इन सभी सड़कों का निर्माण कराने की स्वीकृति प्रदान की जायेगी जिसमें लगभग 8 करोड की लागत आयेगी। इन सड़कों के निर्माण के लिए स्वीकृति मिलने से प्रखंड अध्यक्ष सुजीत पटेल, विधायक प्रतिनिधि कृष्णा सिंह, असगर अली, अंजन प्रसाद, राजू पांडे, प्रदीप साहू, अमित साव समेत कई ग्रामीणों ने स्थानीय विधायक को बधाई दी है।

रैयतों की नौकरी और मुआवजा के लिए एजेकेएसएस ने लिखा प्रबंधन को पत्र

उरीमारी (आजाद सिपाही)। बरका सयाल श्रेत्र के सयाल डी खुली खदान वर्तमान में चल रहा है। जिसके मुल रैयतों ने अखिल झारखंड कोयला श्रमिक संघ के महासचिव सतीश सिन्हा के साथ बैठक किया। रैयतों ने बताया कि सीसीएल प्रबंधन ने सयाल डी खुली खदान में 35 .56 एकड़ जमीन अधिग्रहण किया है। जिसमें केवल तीन लोगों को ही नौकरी मिला है। इसके उपरांत न तो नौकरी मिला है और न ही मुआवजा और न सेल समिति में भागीदारी सुनिश्चित किया जा रहा है। वहीं रैयतों की सभी बातों को सुनकर एजेकेएसएस के महासचिव सतीश सिन्हा ने सीसीएल प्रबंधन को पत्र लिखा है। पत्र के माध्यम से कहा गया है कि रैयतों की मांगों पर विचार कर प्रबंधन जल्द से जल्द समस्या का समाधान करें। अन्यथा रैयतों के समर्थन में अखिल झारखंड कोयला श्रमिक संघ आंदोलन करेगी। बैठक में रणधीर साव, विनोद सिंह, रामदेव सिंह, गोवर्धन सिंह, हीरालाल सिंह, वीरु सिंह, संतोष सिंह, राजू सिंह, जटल सिंह, कमलेश कुमार, सनी सिंह, बबलू हेंब्रोम मौजूद थे।

खतियानी रैयत परिवार की बिरसा पीओ के साथ वार्ता

उरीमारी (आजाद सिपाही)। खतियानी रैयत परिवार उरीमारी के द्वारा बिरसा परियोजना को पिछले दिनों पांच सूत्री मांग पत्र सौंपा गया था। जिसके उपरांत बिरसा परियोजना पदाधिकारी डी शिवादास ने गुरुवार को खतियानी रैयत परिवार के पदाधिकारियों को वार्ता के लिए बुलाया। वहीं खतियानी रैयत परिवार के द्वारा पांच सूत्री मांग पत्र में बताया गया जिसमें डिपार्टमेंटल कार्य जब तक हो तब तक बिरसा परियोजना में उत्खनन कार्य बढ़ाने के लिए नई मशीन उपलब्ध कराई जाए, उरीमारी में दिनेश करमाली के घर से पीला क्वार्टर जाने वाले मार्ग की कालीकरण किया जाय, प्रेम नगर में नवनिर्माण चेकडैम का सुंदरीकरण किया जाये, सरना स्थल जाने वाले मार्ग का यथाशीघ्र निर्माण कराया जाये, उरीमारी बस्ती के देवस्थल (मांझी थान) की रंग-रोगन करायी जाये तथा लाइट की व्यवस्था दिया जाये। इन सभी मांगों पर सीसीएल प्रबंधन बिरसा परियोजना पदाधिकारी के द्वारा जल्द ही समस्याओं का निष्पादन करने की बात कही गई। वार्ता में प्रबंधन की ओर से पीओ डी शिवादास, खान प्रबंधक रामेश्वर मुंडा, कार्मिक प्रबंधक विकास रंजन, सिविल अभियंता अनिल सिंह वहीं खतियानी रैयत परिवार के संरक्षक दसई मांझी, अध्यक्ष शनिचर मांझी, उपाध्यक्ष दिनेश करमाली, सचिव कार्तिक मांझी, सुखू मांझी, रैना टुडू, खेपन मांझी, सुरेश मुर्मू, नकुल प्रजापति, तालो हांसदा, परमेश्वर सोरेन, शिकारी टुडू, भादो करमाली, जितेंद्र यादव, भवानी शंकर प्रसाद, जलेश करमाली, सुवितराम किस्कू, विनोद सोरेन, राजू टुडू, देवा उरांव, दीपक मरांडी सहित कई लोग मौजूद थे।

पतरातू के नये प्रखंड विकास पदाधिकारी बने मनोज कुमार गुप्ता

पतरातू (आजाद सिपाही)। पतरातू प्रखंड के नये प्रखंड विकास पदाधिकारी मनोज कुमार गुप्ता बने। बुधवार को देर शाम पतरातू कार्यालय पहुंचकर उन्होंने अपना पद ग्रहण कर लिया है। उनका पदभार अंचल अधिकारी शिव शंकर पांडे के द्वारा दिया गया। बताया जाता है कि मनोज कुमार गुप्ता गिरिडीह जिला के बगोदर प्रखंड के प्रखंड विकास पदाधिकारी के रूप में कार्यरत थे।

कितना गंभीर है प्रस्ताव

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ ने कहा है कि वह भारत के साथ सभी गंभीर मसलों पर बातचीत करना चाहते हैं क्योंकि युद्ध कोई विकल्प नहीं रह गया है। उनकी इस बात में असहमति की कोई गुंजाइश नहीं कि दोनों परमाणु शक्ति संपन्न पड़ोसी देशों के बीच युद्ध कोई विकल्प नहीं रह गया है, लेकिन शाहबाज शरीफ कोई पहली बार बातचीत की पेशकश नहीं कर रहे। इसी साल जनवरी में भी उन्होंने ऐसा प्रस्ताव दिया था। अगर उस प्रस्ताव के बाद हालात में कोई बदलाव नहीं आया, तो उसकी भी ठोस वजहें मौजूद हैं। ध्यान रहे, पिछले बरसों में भारत की तरफ से द्विपक्षीय रिश्तों को मजबूती देने की कम कोशिशें नहीं हुईं। साल 2014 में सत्ता में आने के साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐसे प्रयास शुरू कर दिये थे। उन प्रयासों का फल भी दिख रहा था। बात बिगड़नी शुरू हुई तब, जब भारत की लाख कोशिशों के बावजूद सीमा पार से आतंकी गतिविधियों पर लगाम लगाने की कोई सार्थक कोशिश नहीं दिखी। मजबूरन भारत को इन आतंकी हमलों पर रोक लगाने की पहल खुद करनी पड़ी। इसके साथ ही भारत ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि आतंकवाद और बातचीत दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते। दोनों देशों के रिश्तों में दूसरा बड़ा फैक्टर कश्मीर का सवाल है। पाकिस्तान भारत के अपने क्षेत्र में किये गये अनुच्छेद 370 से जुड़े बदलावों को तो मुद्दा बनाता है, हालांकि वह पूरी तरह भारत का आंतरिक मामला है, लेकिन यह नहीं देखता कि दोनों देश शिमला समझौते के तहत यह मान चुके हैं कि कश्मीर एक द्विपक्षीय मसला है। वह मौके-बेमौके इसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उठाता रहता है। ऐसे में यह कैसे माना जा सकता है कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री सचमुच रिश्तों को बेहतर बनाने की इच्छा रखते हैं? अगर वह संदेश दें कि पाकिस्तान में कट्टरपंथी और आतंकी तत्वों को फलने-फूलने नहीं दिया जायेगा तो असंभव नहीं कि दोनों देशों के बीच सार्थक बातचीत की प्रक्रिया शुरू हो जाये, लेकिन इन संभावनाओं के बीच इस सचाई को नहीं भुलाया जा सकता कि पाकिस्तान में चुनी हुई सरकारें भी आर्मी के इशारों पर ही काम करती आयी हैं और, शाहबाज सरकार तो चुनी हुई भी नहीं है। इधर पाकिस्तान अंदरूनी राजनीतिक संकट से भी गुजर रहा है, जहां हटाये गये प्रधानमंत्री इमरान खान और आर्मी के बीच टकराव बना हुआ है। दूसरी ओर, इमरान जनता के बीच लोकप्रिय बने हुए हैं। पाकिस्तान में आने वाले समय में संसदीय चुनाव भी प्रस्तावित हैं। इसके बाद यह स्पष्ट होगा कि इमरान या उनके विरोधियों में से जनता किसके साथ है। असल में, दोनों देशों के बीच कोई सार्थक बातचीत तभी हो सकती है, जब पाकिस्तान में सत्ता के अलग-अलग केंद्रों की इस पर एक राय हो। साथ ही, उसे सीमापार से आतंकवाद का खेल भी बंद करना होगा।

पाकिस्तान अंदरूनी राजनीतिक संकट से भी गुजर रहा है, जहां हटाये गये प्रधानमंत्री इमरान खान और आर्मी के बीच टकराव बना हुआ है। दूसरी ओर, इमरान जनता के बीच लोकप्रिय बने हुए हैं।

कोयले का निष्कर्षण एक महत्वपूर्ण उप-उत्पाद के साथ होता है, जिसे ओवरबर्डन के नाम से जाना जाता है। कोयले के खुले खनन के दौरान, कोयले की परत के ऊपर स्थित परत को ओवरबर्डन के रूप में जाना जाता है, जिसमें प्रचुर मात्रा में सिलिका सामग्री के साथ मिट्टी, जलोढ़ रेत और बलुआ पत्थर शामिल होते हैं। नीचे से कोयला निकालने के लिए ओवरबर्डन को हटा दिया जाता है। बाद में, कोयला निष्कर्षण पूरा होने पर, भूमि को उसका मूल आकार प्रदान करने के लिए ओवरबर्डन का उपयोग बैकफिलिंग के लिए किया जाता है।

ओवरबर्डन से रेत का उत्पादन : कचरे से कंचन

राजीव आर मिश्रा

भले ही अपने उपभोक्ताओं के लिए कोयला/ लिग्नाइट का उत्पादन और वितरण करने का ही शासनादेश हो, फिर भी कोयला मंत्रालय के मार्गदर्शन में कोयला और लिग्नाइट सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) ने लीक से हट कर ओवरबर्डन से बहुत कम कीमत पर रेत का उत्पादन करने वाली एक अनोखी पहल की है। इस पहल से न केवल ओवरबर्डन के कारण रेत गाद से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में मदद मिल रही है, बल्कि निर्माण के लिए सस्ती रेत प्राप्त करने का विकल्प भी मिल रहा है। कोयला सार्वजनिक उपक्रमों में रेत का उत्पादन पहले ही शुरू हो चुका है और अगले पांच वर्षों के दौरान कोल इंडिया लिमिटेड (सीआइएल), नैवेली लिग्नाइट कॉरपोरेशन लिमिटेड (एनएलसीआइएल) और सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड (एससीसीएल) में रेत के उत्पादन को अधिकतम करने के लिए रोडमैप तैयार किया जा चुका है।

कोयले का निष्कर्षण एक महत्वपूर्ण उप-उत्पाद के साथ होता है, जिसे ओवरबर्डन के नाम से जाना जाता है।

कोयले के खुले खनन के दौरान, कोयले की परत के ऊपर स्थित परत को ओवरबर्डन के रूप में जाना जाता है, जिसमें प्रचुर मात्रा में सिलिका सामग्री के साथ मिट्टी, जलोढ़ रेत और बलुआ पत्थर शामिल होते हैं। नीचे से कोयला निकालने के लिए ओवरबर्डन को हटा दिया जाता है। बाद में, कोयला निष्कर्षण पूरा होने पर, भूमि को उसका मूल आकार प्रदान करने के लिए ओवरबर्डन का उपयोग बैकफिलिंग के लिए किया जाता है। ऊपर से ओवरबर्डन निकालते समय, मात्रा का स्वेल फैक्टर 20-25 प्रतिशत होता है।

कोयला मंत्रालय के तहत कोयला एवं लिग्नाइट सार्वजनिक उपक्रमों द्वारा एक अनूठी पहल

अगले कुछ वर्षों में, प्रौद्योगिकी की प्रगति और हमारे देश में विभिन्न स्थानों में भारी मात्रा में होने वाले रेत उत्पादन के साथ, रेत के प्रति घन मीटर कीमत में काफी कमी आएगी, जिससे आम आदमी को निर्माण उद्देश्य के लिए सस्ती रेत उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी।

इस ओवरबर्डन को परंपरागत रूप से अपशिष्ट या बोझ माना जाता है और अक्सर इसके संभावित मूल्य को पहचाने बिना इसे ऐसे ही छोड़ दिया जाता है। हालांकि, सतत अभ्यास और सर्कुलर इकोनॉमी पर बढ़ते फोकस के साथ, ओवरबर्डन के लिए वैकल्पिक उपयोग की खोज करने और इसे कचरे से कंचन में बदलने की दिशा में बदलाव आया है।

प्रथम पहल : इस तरह के रूपांतरण की पहली व्यावसायिक पहल सीआइएल की सहायक कंपनी वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (डब्ल्यूसीएल) ने 2016-17 के दौरान अपनी खदान में की थी। महाराष्ट्र के नागपुर जिले के भानेगांव खदान में एक पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया गया था, जहां विभाग की ओर से स्थापित की गई मशीनों के जरिए रेत निकाली जाती थी। इस मशीन की क्षमता 300 घन मीटर प्रतिदिन थी। निकाली गयी रेत का गहन परीक्षण किया गया और अंततः उसे नदी तल से मिलने वाली रेत से बेहतर पाया गया। इसकी कीमत लगभग 160 रुपये प्रति घन मीटर थी, जो बाजार की तत्कालीन कीमत का लगभग 10 प्रतिशत थी। यह रेत प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाइ) के तहत कम लागत वाले घर बनाने के लिए नागपुर इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट को दी गयी थी। इसके अलावा दो और विभागीय पहल भी शुरू की गयी।

पायलट परियोजनाओं की सफलता पर, डब्ल्यूसीएल ने नागपुर के पास गोंडेगांव खदान में देश के सबसे बड़े रेत उत्पादन संयंत्र को चालू करके रेत का व्यावसायिक उत्पादन शुरू किया। यह इकाई बाजार मूल्य से लगभग आधी कीमत पर प्रतिदिन 2500 घन मीटर रेत का उत्पादन करती है।

सरकारी इकाइयों के साथ साझेदारी और स्थानीय बिक्री : नागपुर के सबसे बड़े रेत उत्पादक संयंत्र से उत्पादित रेत का बड़ा हिस्सा बाजार मूल्य के एक तिहाई पर एनएचएआई, एमओआईएल, महा जेनको जैसी सरकारी इकाइयों और अन्य छोटी इकाइयों को दिया जा रहा है। बाकी रेत को बाजार में खुली नीलामी के माध्यम से बेचा जा रहा है, जिससे स्थानीय लोगों को काफी सस्ती कीमत पर रेत मिल रही है।

कचरे से कंचन: एक आदर्श बदलाव : ओवरबर्डन, जिसे कभी अपशिष्ट या बेकार पदार्थ समझा जाता था, अब उसे एक मूल्यवान संसाधन माना जा रहा है। रेत प्रसंस्करण इकाइयां भी जबरदस्त रोजगार के अवसर पैदा कर रही हैं, क्योंकि बड़ी संख्या में स्थानीय आबादी न केवल उत्पादन इकाई में, बल्कि ट्रकों के माध्यम से उपभोक्ताओं तक रेत को ले जाने के लिए उसकी लोडिंग और आपूर्ति जैसी कार्यों में शामिल हो रही है।

विस्तार की योजनाएं और समाज पर प्रभाव : इस सकारात्मक दृष्टिकोण और ओवरबर्डन के वैकल्पिक उपयोग की खोज के एक भाग के रूप में, सीआइएल ने देश के पूर्वी और मध्य भाग में अपनी सहायक कंपनियों में कई ओवरबर्डन प्रसंस्करण संयंत्र और रेत उत्पादन संयंत्र चालू किए हैं।

इस स्थायी प्रयास के हिस्से के रूप में, कोयला सार्वजनिक उपक्रम में ओवरबर्डन से नौ रेत उत्पादन/ प्रसंस्करण संयंत्र पहले से ही उत्पादन में हैं, जिनमें से चार एससीसीएल में, तीन डब्ल्यूसीएल में और एक-एक एनसीएल और ईसीएल में हैं। इन रेत उत्पादन/ प्रसंस्करण संयंत्रों की कुल वार्षिक क्षमता लगभग 5.5 मिलियन क्यूबिक मीटर प्रति वर्ष है। इसके अलावा, सीआईएल की विभिन्न सहायक कंपनियों में ओवरबर्डन से रेत उत्पादक चार संयंत्र निविदा के विभिन्न चरणों में हैं। लिग्नाइट उत्पादक कंपनी एनएलसीआईएल भी दो रेत उत्पादक संयंत्र लगा रही है। इन सभी नए आगामी संयंत्रों की कुल वार्षिक रेत उत्पादन क्षमता लगभग 1.5 मिलियन क्यूबिक मीटर प्रति वर्ष होगी।

भविष्य का मार्ग : अग्रणी पहलों के माध्यम से, कोयला/ लिग्नाइट सार्वजनिक उपक्रम रेत उत्पादन और खपत के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण का नेतृत्व कर रहे हैं, जो पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक कल्याण में योगदान दे रहा है। कोयला मंत्रालय किफायती मूल्य पर ओवरबर्डन से और भी अधिक मात्रा में रेत का उत्पादन करने के लिए कोयला/ लिग्नाइट सार्वजनिक उपक्रम को लीक से हटकर इस पहल को शुरू करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है।

अगले कुछ वर्षों में, प्रौद्योगिकी की प्रगति और हमारे देश में विभिन्न स्थानों में भारी मात्रा में होने वाले रेत उत्पादन के साथ, रेत के प्रति घन मीटर कीमत में काफी कमी आएगी, जिससे आम आदमी को निर्माण उद्देश्य के लिए सस्ती रेत उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। साथ ही इससे नदी तल की रेत के इस्तेमाल को भी कम करने में मदद मिलेगी, जो बदले में पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद होगा।

(लेखक : वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के पूर्व सीएमडी हैं।)

जमशेदपुर की खबरें

लोडेट पिस्टल के साथ दो गिरफ्तार, जांच में जुटी पुलिस

सरायकेला (आजाद सिपाही)। सरायकेला खरसावां जिला के चांडिल थाना अंतर्गत एनएच-33 के फदलूगोड़ा काली मंदिर के समीप हथियार का भय दिखाकर छेड़खानी करने के मामले में दो युवकों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपियो में पुरुषोत्तम पांडे उर्फ रवि पांडे व लोकेश पांडे शामिल है। एसपी डॉ विमल कुमार ने बताया बुधवार रात्रि लगभग 9:20 बजे फदलूगोड़ा काली मंदिर के पास दो युवक पिस्तौल के आड़ में आसपास के दुकान आते- जाते पुरुष व महिलाओं को भय दिखाकर छेड़खानी करने की जानकारी मिली। जिसके बाद एसडीपीओ के नेतृत्व में एक टीम का गठन कर त्वरित कार्रवाई का निर्देश दिया गया। टीम ने कार्रवाई करते हुए काली मंदिर के पास घेराबंदी कर दो संदिग्ध व्यक्ति को भागते देखा खदेड़ कर पकड़ा लिया। जिनकी तलाशी लेने पर पुरुषोत्तम पांडे उर्फ रवि पांडे के पास से एक लोडेड पिस्तौल, एक मोबाइल बरामद कर लिया। वही दूसरे युवक लोकेश पांडे के पास से एक मोबाइल बरामद किया गया। एक युवती ने बताया कुछ देर पहले दोनों पकड़ाए व्यक्तियों के द्वारा अभद्र टिप्पणी एवं छेड़खानी किया गया। पिस्तौल का भय दिखाकर डराया गया। जिसके बाद पुलिस पदाधिकारी द्वारा दोनों युवकों को गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ के बाद गुरुवार को दोनो आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। एसपी ने बताया जिले में ऐसे किसी भी अपराधियों को पनपने नहीं दिया जायेगा। उन्होंने बताया पकड़ाए दोनों युवकों का आपराधिक इतिहास पता लगाया जा रहा है। हजारीबाग से सरायकेला आने का क्या कारण हो सकता है, इस पर गहराई से जांच किया जा रही है। उन्होंने आशंका जताई किसी आपराधिक गिरोह के लिए दोनों युवक काम करते हैं।

होमगार्ड एक्ट में संशोधन करने का आग्रह

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। होमगार्ड एक्ट के संशोधन की मांग को लेकर देश भर के लगभग 8 लाख होमगार्ड जवान एकत्रित होने लगे हैं। गुरुवार को इसकी जानकारी गृहरक्षा वाहिनी लोक सेवा संघ के प्रदेश प्रवक्ता कमल शर्मा ने दी। उन्होंने बताया इसको लेकर विगत वर्षों से अभियान चलाया जा रहा है। लेकिन अभी तक सिर्फ आश्वासन ही मिल रहा है। लौहनगरी जमशेदपुर से गृह रक्षा वाहिनी लोक सेवा संघ के प्रदेश प्रवक्ता कमल शर्मा ने बताया होमगार्ड एक्ट में संशोधन की मांग वर्षों पुरानी है। इसको लेकर देश के प्रधानमंत्री,गृहमंत्री को ट्विटर ग्रुप के माध्यम से जानकारी दी गई है। इससे पूर्व राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास, सांसद विद्युत वरण महतो के नाम मांग पत्र सौंपा गया। राज्य के दोनों वरीय नेताओं ने गृह मंत्री के नाम पत्र लिखे हैं। लेकिन अभी तक कोई जवाब प्राप्त नही हुआ। श्री शर्मा ने कहा गृहरक्षकों को जागृत करने के लिए भारतीय राष्ट्रीय मजदूर संघ के अध्यक्ष सांता प्रकाश जाटव के नेतृत्व में अभियान चलाया जा रहा है। ताकि पूरे भारतवर्ष के गृहरक्षकों को उचित न्याय मिल सके। श्री शर्मा ने देश के प्रधानमंत्री व गृह मंत्री से होमगार्ड एक्ट में संशोधन के लिए आग्रह किया गया।

उपायुक्त ने जिला स्तरीय आपदा प्रबंधन समिति के साथ की बैठक

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रो में विशेष निगरानी रखने और अफसरों को एक्टिव मोड में रहने का निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

सरायकेला। सरायकेला खरसावां जिले के डीसी रविशंकर शुक्ला ने गूगल मीट के माध्यम से जिला स्तरीय आपदा प्रबंधन समिति के साथ बैठक की। गुरुवार को बैठक में दिए गये दिशा निदेर्शों का समीक्षा किया। गया। उपायुक्त ने लगातार हो रही बारिश से स्वर्णरिखा व खरकाई नदी मे जल स्तर बढ़ने से प्रभावित क्षेत्रो मे राहत कार्य की जानकारी ली।सभी वरीय पदाधिकारी व क्षेत्रीय पदाधिकारी को प्रभावित क्षेत्र में विशेष निगरानी रखने का निदेश दिए। बैठक में स्वर्णरिखा व खरकई के कार्यपालक अभियंता ने बताया वर्तमान में जल स्तर खतरे के निशान से नीचे है। वही आदित्यपुर नगर निगम के अपर नगर आयुक्त ने बताया नगर निगम

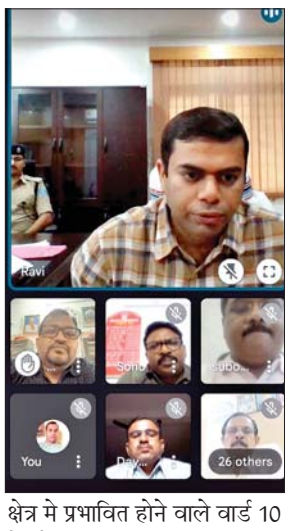

क्षेत्र मे प्रभावित होने वाले वार्ड 10 में शेल्टर हाउस का चयन कर लिया गया। साथ ही लोगो को विभिन्न माध्यम से जागरूक भी किया जा रहा। वही अनुमंडल पदाधिकारी चांडिल ने बताया चांडिल अनुमंडल क्षेत्र के प्रभावित क्षेत्रों के लिए सेंटर हाउस का चयन किया गया। प्रभावित क्षेत्रों में लोगों की सहायता के लिए 4 वोट की व्यवस्था कर ली गई। डीसी ने सभी अनुमंडल पदाधिकारी को अनुमंडल स्तर पर सूची तैयार करने, गोताखोरों के साथ बैठक कर आवश्यकतानुसार उपलब्धता सुनिश्चित करने का निर्देश दिए।

वही नगर निकाय क्षेत्र के सिटी मैनेजर व अंचलाधिकारी को मछुआरों के साथ बैठक कर आवश्यकतानुसार उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। साथ ही आदित्यपुर नगर निगम क्षेत्र में गोताखो, सेफ्टी कीट व अन्य जरूरत की सुनिश्चित करने के निदेश दिए। उपायुक्त ने कहा बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में बनाए गए शेल्टर हाउस में रह रहे लोगों के लिए भोजन-पानी बच्चों के लिए दूध-बिस्किट, ब्रेड तथा मेडिकल किट की व्यवस्था सुनिश्चित करें। बैठक में डीसी के साथ उप विकास आयुक्त प्रवीण कुमार गागराई, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी हरविंदर सिंह,अपर उपायुक्त सुबोध कुमार, अपर नगर आयुक्त, अनुमंडल पदाधिकारी सरायकेला-चांडिल, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी सहित सभी नगर निकाय क्षेत्र के कार्यपालक पदाधिकारी व कार्यपालक अभियंता उपस्थित रहें।

आवश्यकतानुसार प्रभावित क्षेत्रो मे गोताखोर, मोटर बोट, सेफ्टी जैकेट एवं मेडिकल किट की उपलब्धता सुनिश्चित करने के दिए निर्देश।

कृषकों की द्वितीय किस्त की राशि का मामला विधायक मंगल कालिंदी ने सदन में रखा

आजाद सिपाही सवांददाता

जमशेदपुर। झारखंड विधानसभा मॉनसून सत्र के के दौरान जुगसलाई विधायक मंगल कालिंदी ने अपनी बात रखते हुए कहा जुगसलाई विधान सभा क्षेत्र के पटमदा व बोड़ाम लैम्पसों में कृषकों के द्वारा अपनी उपज धान को न्यूनतम समर्थन मूल्य में सरकार को दिया गया। पटमदा लैम्पस में 164, बांगुरदा लैम्पस में 219, गोबरघुसी लैम्पस में 104, बोड़ाम लैम्पस में 48 कृषकों को उनका द्वितीय किस्त की राशि आज तक नहीं मिला। जिस कारण कृषकों की स्थिति काफी दयनीय हो गयी है।

कालिंदी ने आसन के माध्यम से लोकहित व जनहित में यथाशीघ्र कृषकों का द्वितीय किस्त की राशि देने हेतु सरकार से आग्रह किया।

राष्ट्रीय महिला इंटक की अध्यक्ष बनी देविका सिंह, भव्य स्वागत

आजाद सिपाही सवांददाता

जमशेदपुर। पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस कमिटी के तत्वावधान में स्वागत सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। गुरुवार को जिलाध्यक्ष आनन्द बिहारी दुबे के नेतृत में आयोजित सम्मान समारोह में नव नियुक्त इंटक के राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष श्रीमती देविका सिंह को बुके के कर व शॉल प्रदान कर वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने स्वागत सह सम्मान किया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष श्री दुबे ने कहा जमशेदपुर वासियों व कांग्रेस कार्यकत्ताओं के लिए यह गर्व की बात है। प्रथम बार जमशेदपुर का एक महिला नेत्री मजदूर क्षेत्र में सेवा प्रदान कर इंटक के राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष बनी है। जिला कांग्रेस कमिटी के तरफ से उनके सफला की कामना करते है। आशा है श्रीमती देविका सिंह राष्ट्र स्तर पर मजदुर हित में आवाज बनेगी। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष आनन्द बिहारी दुबे, एल बी सिंह, प्रदेश सचिव खगेनचन्द्र महतो, राकेश तिवारी, सामंता कुमार, जिला उपाध्यक्ष ब्रजेन्द्र तिवारी, राजकिशोर यादव, संजय सिंह आजाद, जिला महामंत्री अशोक सिंह क्रांतिकारी, रंजीत सिंह, उदय कुमार सिंह, ज्योति मिश्र, सलीम खान कोषाध्यक्ष, जिला सचिव रानी राव, वरीय नेत्री ऊषा सिंह, गायत्री दास, पुनीता चौधरी, सीताराम चौधरी, चौबेजी, जिला महामंत्री युवा सन्नी सिंह, एनएसयुआई अध्यक्ष सचिन कुमार सिंह सहित सैकड़ो कांग्रेसी शामिल रहे।

स्व. मनमोहन चौधरी और स्व.जय नारायण सिंह के शोक संतप्त परिजनों से मिले अर्जुन मुंडा

श्रद्धांजलि अर्पित कर बंधाया ढांढ़स

आजाद सिही संवाददाता

जमशेदपुर। भाजपा के वरिष्ठ नेता मनमोहन चौधरी व जय नारायण सिंह के निधन पर केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने शोकाकुल परिजनों से मिलकर शोक व्यक्त किया। गुरुवार को केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने बारीडीह विद्यापति नगर स्थित स्व. मनमोहन चौधरी के आवास एवं बिरसानगर स्थित स्व. जय नारायण सिंह के घर जाकर दिवंगत आत्मा की शांति की

प्रार्थना कर श्रद्धाजंलि अर्पित की। उन्होंने दिंवगत नेताओं के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करते हुए शोकाकुल परिजनों का ढाँढस बंधाया। इस दौरान पूर्व जिलाध्यक्ष बिनोद सिंह, जिला मंत्री जितेंद्र राय, भाजपा बारीडीह मंडल अध्यक्ष संतोष ठाकुर, बिरसानगर मंडल अध्यक्ष बबलू गोप, सत्यप्रकाश सिंह, अनिल सिंह, निर्मल सिंह, संजय शर्मा व अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

महत्वपूर्ण न्यूज

डीसी-एसपी ने संयुक्त रूप से मंडल कारा गढ़वा में कैदी सेल का किया औचक निरीक्षण

गढ़वा (आजाद सिपाही)। उपायुक्त शेखर जमुआर की अगुआई में पुलिस अधीक्षक गढ़वा के साथ संयुक्त रूप से बुधवार दो अगस्त की रात्रि में मंडल कारा गढ़वा में कैदी सेल का औचक निरीक्षण किया गया। इसके लिए उपायुक्त के द्वारा अलग-अलग दल गठित कर छापेमारी के लिए दंडाधिकारी प्रतिनियुक्त किया गया था। जिसमें राज महेश्वरम अनुमंडल पदाधिकारी गढ़वा, कुमार मयंक भूषण अंचल अधिकारी गढ़वा अरुणा कार्यपालक दंडाधिकारी गढ़वा निकिता बाला, कार्यपालक दंडाधिकारी गढ़वा नितेश भास्कर, प्रखंड विकास पदाधिकारी मझिआंव और फणीश्वर रजवार, प्रखंड विकास पदाधिकारी डंडा ने अलग-अलग सेल में पुलिस पदाधिकारी और सुरक्षा बल के साथ उपस्थित होकर छापेमारी की है। छापेमारी के दौरान किसी भी खेल से कोई आपत्तिजनक सामग्री प्राप्त नहीं हुई। उपायुक्त के द्वारा जेलर से कैदियों की सुविधा से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई, जिसमें बताया गया कि सभी कैदियों को समय पर चाय/भोजनादि उपलब्ध कराया जाता है। स्वास्थ जांच के लिए स्वास्थ्य विभाग के कर्मी प्रतिनियुक्त हैं, जो जेल के कैदियों की नियमित रूप से स्वास्थ्य जांच करते हैं। निरीक्षण के समय कैदी सेल/शौचालय, रसोईघर सहित जेल परिसर का साफ-सफाई संतोषजनक पाया गया।

गोपीनाथ सिंह महिला महाविद्यालय प्रांगण में मनाया गया ग्रीन डे

गढ़वा (आजाद सिपाही)। पर्यावरण संवर्धन व संरक्षण के उद्देश्य से गोपीनाथ सिंह महिला महाविद्यालय प्रांगण में, महाविद्यालय एनएसएस यूनिट की सहभागिता से बुधवार को ग्रीन डे मनाया गया। ग्रीन थीम पर आधारित आज के इस कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ संजुक्ता सिंह ने अध्यापक एवं छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया कि सुखद जीवन के लिए समृद्ध पर्यावरण की आवश्यकता है। जिसके लिए हम सभी को पहल करने की जरूरत है। उन्होंने छात्राओं और उपस्थित अन्य लोगों से अपील की कि अपने घर के आसपास में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाएं और उसके संवर्धन की पूरी जिम्मेवारी लें। आज के इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण से संबंधित है और हम यह संकल्प लें कि पर्यावरण की सुरक्षा में हमारी सहभागिता हो। कार्यक्रम में महाविद्यालय प्राध्यापक शीशम साहू, एसएन राय, अनीता तूफानी, डॉ कविता, रंजीत कुमार, महिपाल सिंह, राज अखौरी, सुनीता प्रीति सिंह, अशोक कुमार पाठक, नीता सिंह, राकेश कुमार पाल साथ ही महाविद्यालय के अन्य अध्यापक गण व शिक्षकेतर कर्मचारी उपस्थित थे।

सड़क के दोनों किनारे युद्धस्तर पर किया जा रहा है पौधरोपण

केतार (आजाद सिपाही)। गढ़वा उत्तरी वन प्रमंडल के द्वारा केतार प्रखंड क्षेत्र के चांदडीह से हरिहरपुर मुख्य पथ के दोनों किनारे पौधरोपण कराया जा रहा है। जानकारी देते हुए फोरेस्टर ओमप्रकाश उरांव ने बताया कि सड़क के दोनों किनारे अशोक, आसन, महोगनी, शीशम, अर्जुन, करंज, नीम, जामुन सहित अन्य प्रजाति का छायादार वृक्ष युद्धस्तर पर लगाया जा रहा है। पौधरोपण के बाद उसे बांस से घेर दिया जा रहा है ताकि नुकसान होने से बचाया जा सके। साथ ही समय समय पर देखभाल किया जाएगा। इस मौके पर दिलीप यादव, बीरबल राम सहित मजदूर उपस्थित थे।

रंकाकला में बारिश से गिरा मिट्टी का घर

रंका (आजाद सिपाही)। रंका अनुमंडल के रंकाकला गांव निवासी पेंटर चंदन कुमार का राष्ट्रीय राजमार्ग 343 के बगल में स्थित मिट्टी का पुराना घर बुधवार को संध्या सात बजे बारिश से गिर गया है। घर गिरने से किसी प्रकार की जान माल की क्षति नहीं हुई। चंदन कुमार का पूरा परिवार चपेट में आने से बाल-बाल बच गया। किंतु मिट्टी का घर गिरने से उनकी मोटरसाइकिल, पानी सप्लाई का मोटर सहित अन्य जरूरी सामान मिट्टी में दब कर खराब हो गया। जिससे चंदन कुमार के परिवार जनों को काफी नुकसान पहुंचा है और कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। भुक्तभोगी चंदन कुमार एक गरीब व्यक्ति हैं। उन्होंने रंकाकला पंचायत की मुखिया सविता कुमारी एवं मुखिया प्रतिनिधि राजेश कुमार मद्धेशिया से प्रधानमंत्री आवास मुहैया कराने की मांग की है।

प्रदर्शन : जिला मुख्यालय पर भाजयुमो के महाधरना कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष रितेश चौबे ने कहा

झामुमो सरकार ने युवाओं को रोजगार देने के नाम पर ठगा है

- झामुमो सरकार में युवा त्रस्त और मंत्री विधायक मस्त हैं : ओम प्रकाश केशरी
- झामुमो सरकार में बैठे मंत्री विधायक सिर्फ अपनी झोली भरने में लगे हुए हैं : रघुराज पांडेय

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। भाजयुमो जिलाध्यक्ष रितेश चौबे की अध्यक्षता में जिला मुख्यालय पर महाधरना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान विषय प्रवेश कराते हुए भाजयुमो जिलाध्यक्ष रितेश चौबे ने कहा कि झामुमो सरकार ने युवाओं को रोजगार देने के नाम पर ठगने का काम किया है। अबतक नियोजन नीति व स्थानीय नीति बनाने में हेमंत सरकार फेल साबित हो चुकी है।

भाजपा जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश केशरी ने कहा कि झामुमो सरकार में युवा त्रस्त और मंत्री विधायक मस्त हैं। युवाओं को रोजगार के लिए भटकना पड़ रहा है। झामुमो सरकार में युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा है। गढ़वा जिले से युवाओं को पलायन करना पड़ रहा है।

प्रदेश कार्यसमिति सदस्य रघुराज पाण्डेय ने कहा कि झामुमो सरकार में बैठे मंत्री विधायक सिर्फ अपनी झोली भरने में लगे हुए हैं। जनता त्राहि त्राहि कर रही है। झामुमो सरकार ने जनहित में एक भी योजना नहीं बनायी। झामुमो सरकार सिर्फ पोस्टर मास्टर बन चुकी है, लेकिन वर्तमान में सत्तासीन झामुमो का चाल चरित्र जनता देख रही है। आनेवाले दिनों में झामुमो सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए जनता संकल्प ले चुकी है। उन्होंने कहा कि झामुमो सरकार में बैठे मंत्री विधायक गढ़वा का विकास नहीं बल्कि विनाश कर रहे हैं।

भाजपा जिला महामंत्री संतोष दूबे ने कहा कि झामुमो सरकार नियोजन नीति स्थानीय नीति बनाने के नाम पर सिर्फ दिखावा करती है। जनता की समस्या से झामुमो के लोगों को कोई मतलब नहीं है। बिजली कटौती मामले में झामुमो के जनप्रतिनिधि मौन साधे हुए हैं। आयुष्मान भारत योजना जिला में बंद है। इससे गरीब जनता का इलाज नहीं हो रहा है। झामुमो विधायक मंत्री मौन हैं। वर्तमान सरकार में भ्रष्टाचार चरम पर है। चारों तरफ लूट मचा हुआ है।

कार्यक्रम को संबोधित करने वालों में मुख्य रूप से भाजपा नेता मुरली श्याम तिवारी, बिनोद तिवारी, उदय कुशवाहा, संजीत तिवारी, राजीव रंजन पासवान, मनोज पाठक, लक्ष्मीकांत पाण्डेय सहित अन्य कई लोगों ने कार्यक्रम को संबोधित किया।

कार्यक्रम का संचालन भाजयुमो जिला महामंत्री विकास तिवारी एवं धन्यवाद ज्ञापन भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष उमेश कश्यप ने किया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से भाजपा जिला मीडिया प्रभारी विवेकानंद तिवारी, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष अनिता गुप्ता, अल्पसंख्यक मोर्चा जिलाध्यक्ष नशरुद्दीन अंसारी, अरविंद धर दूबे, नवीन जायसवाल, ओमप्रकाश पासवान, भाजयुमो गोवावल मंडल अध्यक्ष विकास तिवारी, प्रिंस तिवारी, शिवनारायण चंद्रा, खुर्शीद आलम, रामसरेश तिवारी, आयुष दुबे, प्रताप जायसवाल, ज्ञान रंजन चौबे, अभिषेक तिवारी, हरेंद्र तिवारी, ब्रजेश धर दुबे, भीम खान, बिपिन तिवारी, सुजीत ठाकुर, सुभाष दीक्षित, कंचन पाण्डेय, जुगुल दुबे, विश्वनाथ राम, अरविंद उपाध्याय, मनौवर खान, चंदन मेहता सहित अन्य कई लोग मौजूद थे।

28 सदस्यीय गढ़वा टेबल टेनिस टीम साहिबगंज रवाना

आजाद सिपाही संवाददाता

- भारतीय टीम में गढ़वा के खिलाड़ी हों शामिल : अलखनाथ पांडेय
- आप बेहतर प्रदर्शन करते हुए अपना और जिला का नाम रौशन करें : अध्यक्ष

गढ़वा। साहेबगंज में चार अगस्त से आयोजित झारखंड स्टेट रैंकिंग टेबल टेनिस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए गढ़वा जिला की 28 सदस्यीय टीम गुरुवार को चोपन-रांची एक्स्प्रेस से रवाना हो गई। 28 सदस्यीय टीम को संघ के संरक्षक अलखनाथ पांडे, अध्यक्ष मदन प्रसाद केशरी, उपाध्यक्ष नंद कुमार गुप्ता, अशोक कुमार दुबे, सचिव आनंद सिन्हा, सदस्य अजय ठाकुर और पंकज सोनी ने जीत की शुभकामनाए देते हुए रवाना किया। इस मौके पर संघ के संरक्षक अलखनाथ पांडेय ने कहा कि आप अपने लक्ष्य को पाने के लिए जो मेहनत कर रहे हैं उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए आप जा रहे हैं। आप प्रतियोगिता में जिला को चैम्पियन बनाने के साथ साथ चैम्पियन बनकर आयें। आप अपने खेल का शत प्रतिशत लगा दें तो आपको जीत से कोई रोक नहीं सकता है। अभिभावक और संघ आपके बेहतरी के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। उनका सपना है भारतीय टीम में गढ़वा का खिलाड़ी शामिल हों। आप खेल के दौरान अपने खान पान पर विशेष ध्यान देंगे।

अध्यक्ष मदन प्रसाद केशरी ने कहा कि आप बेहतर प्रदर्शन करते हुए अपना और जिला का नाम रौशन करें, संघ आपको हरसंभव मदद करने को तैयार है। नंद कुमार गुप्ता ने कहा कि आप बेहतर खेलते हुए राज्य में पहला स्थान प्राप्त करें ताकि गढ़वा का नाम रोशन हो सके।

सचिव आनंद सिन्हा ने कहा कि शुक्रवार से साहेबगंज में आयोजित प्रतियोगिता में 28 सदस्यीय टीम भाग लेने जा रही है। टीम के खिलाड़ी बेहतर खेल का प्रदर्शन कर जिला का नाम रोशन करेंगे। 28 सदस्यीय टीम में अमल कुमार ठाकुर, अमन कुमार पाल, अनिमेष कुमार पाण्डेय, कार्तिक पाल, नितीश कुमार मेहता, अनिल कुमार मेहता, हर्षित कुमार पाण्डेय, सचिन कुमार, रोहन पाल, हिमांशु पाल, उज्ज्वला कुमार, रिशु तिवारी, सक्षम राज, प्रवीण मिश्रा, अनुप कुमार, आशा रानी, मयंक राज, अंजली कुमारी, आयुषी कुमारी, आयुषी कुमारी पाण्डेय, अभिजीत यादव, आयुषी कुमारी, अनुष्का शर्मा, अनिका सिंह को शामिल किया गया है।

बालक टीम का कोच संघ के कोषाध्यक्ष कमलेश कुमार दुबे को एवं मैनेजर नागेन्द्र चौधरी को और बालिका टीम का कोच मिस माया को एवं मैनेजर संदीप मिश्रा को बनाया गया है।

अरगोड़ा पुलिस ने चिटफंट मामले में फरार आरोपी के घर इश्तेहार चिपकाया

- फरार आरोपी फैजान अंसारी पर झारखंड के विभिन्न थानों में अरबों रुपये की ठगी का मामला दर्ज है

आजाद सिपाही संवाददाता

विशुनपुरा। रांची स्थित अरगोड़ा थाना के एएसआई सुबोध कुमार स्थानीय विशुनपुरा थाना के एएसआई निरंजन राम के सहयोग से चिटफंड के मामले में छह वर्षों से फरार चल रहा विशुनपुरा निवासी फैजान अंसारी पिता उष्मान अंसारी के मकान पर इश्तेहार चिपकाया है। पुलिस की गिरफ्त से छह वर्षों से फरार आरोपी फैजान अंसारी पर झारखंड के विभिन्न थानों में अरबो रुपये की ठगी का मामला दर्ज है। केस अनुसंधानकर्ता अरगोड़ा थाना एएसआई सुबोध कुमार ने बताया कि अरगोड़ा थाना कांड संख्या 202/16 धारा 406, 420 भादवि आईपीसी के तहत प्राथमिकी अभियुक्त फैजान अंसारी के ऊपर मामला दर्ज है।

उन्होंने बताया कि फैजान अंसारी अपने सहयोगी शहाबुदीन अंसारी, नजरुल मियां, हशीना बीबी के साथ मिल कर चिटफंड आयाम मल्टी ट्रेड कंपनी के नाम पर लोगों से तीन वर्षों में पैसे को दोगुना कर देने के नाम पर पैसा जमा करवाता था। उन्होंने बताया कि कंपनी के नाम पर असहाय गरीब लोगों से लगभग 22 लाख रुपये की ठगी कर फरार है। अरगोड़ा थाना में राजू गुप्ता के द्वारा 22 लाख रुपये की ठगी का मामला दर्ज कराया गया है। उन्होंने बताया कि अभियुक्त फैजान अंसारी के ऊपर राज्य के विभिन्न थानों में चिटफंड में अरबों रुपये की ठगी के मामले दर्ज हैं।

इस मामले में मुख्य अभियुक्त फैजान अंसारी लगभग छह वर्षों से पुलिस की गिरफ्त से फरार चल रहा है, जिसको लेकर अभियुक्त के मकान पर इश्तेहार चिपकाया गया है। अगर आरोपी ने सरेंडर नहीं किया तो जल्द ही न्यायालय के आदेशानुसार मकान की कुर्की की जाएगी।

मालूम हो कि चिटफंड के मामले में ही छह माह पूर्व रामगढ़ एवं बरियातू पुलिस के द्वारा फैजान अंसारी के मकान पर इश्तेहार चिपकाया गया था। उसके बाद मकान की कुर्की भी की गई थी।

अरबों रुपये की ठगी कर फरार आरोपी फैजान अंसारी को झारखंड के रामगढ़, बरियातू एवं अरगोड़ा थाना की पुलिस छह वर्षों से गिरफ्तार करने में लगी हुई है, लेकिन तीन थाना के पुलिस फैजान को पकड़ने में नाकाम साबित हो रही है।

आरकेपीएस में निबंध व पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। अमृत भारत स्टेशन स्कीम (एबीएसएस) धनबाद रेल मंडल के द्वारा आरकेभीएस के सभागार में आरकेपीएस के कक्षा 7वीं से कक्षा 12वीं के छात्र-छात्राओं के बीच पेंटिंग और निबंध प्रतियोगिता आयोजित हुई। इस प्रतियोगिता का विषय 'देश और रेलवे में क्या अच्छा हो रहा है' था। जिसमें स्कूल के छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। इस अवसर पर स्कूल के निदेशक सह शिक्षाविद् अलखनाथ पाण्डेय ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए भारतीय रेलवे व देश में हो रहे विकास कार्यों पर प्रकाश डाला। सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। पेंटिंग में 44 और निबंध प्रतियोगिता में 49 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। निबंध प्रतियोगिता में कक्षा 9ए की खुशी कुमारी, कक्षा 10ए की रीतिका केशरी व कक्षा 8ए की श्वैता शर्मा क्रमशः पहला, दूसरा व तीसरा स्थान हासिल किया। वहीं पेंटिंग प्रतियोगिता में कक्षा 7ए की शाव्या सिंह, कक्षा 7ए की ही सिमरन गुप्ता व कक्षा 8डी की सुहानी कुमारी क्रमशः पहला, दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त किया।

प्रतियोगिता में सफल रहे सभी प्रतिभागियों को 6 अगस्त को रेलवे अधिकारियों के द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रमोद कुमार झा, अनुप कुमार पाण्डेय, राजकुमार और इम्तियाज खान ने सराहनीय भूमिका निभाई।

बारिश से घर ध्वस्त

केतार (आजाद सिपाही)। केतार पंचायत अंतर्गरत नावाडीह गांव निवासी जबराइल अंसारी का विगत रात्रि बुधवार को खपरैल घर गिर गया। जानकारी के अनुसार जबराइल अंसारी सपरिवार घर में सो रहे थे कि अचानक वर्षा के पानी घर में प्रवेश कर गया जिससे मिट्टी का घर गिर गया। आनन फानन में घर में प्रवेश किया पानी को निकाला गया। घर में पानी जाने से खाने-पीने की सामग्री समेत कुछ कागजात भींग गए। घटना की जानकारी मिलते ही मुखिया प्रमोद कुमार ने पहुंच कर भुक्तभोगी जुबरैल अंसारी को सरकारी प्रावधान के तहत लाभ दिलाने की बात कही।

उपायुक्त का कार्यालय, कोडरमा
(समाज कल्याण शाखा)

सूचना

विज्ञापन PR No– 303018 दिनांक 22–07–2023 एव कार्यालय ज्ञापांक–753/स0क0 दिनांक 20.07.2023 द्वारा वित्तीय वर्ष 2023–24 में आंगनबाडी केन्द्रों में उपस्थित होने वाले 03 से 06 वर्ष तक के बच्चों के लिए गर्म पोशाक स्वेटर (Hoodie) (Winter Uniform) आपूर्ति हेतु प्रकाशित अति अल्पकालीन निविदा अपरिहार्य कारणों से रद्द किया जाता है।

नोटः–उक्त के संबंध में विस्तृत जानकारी जिले के बेवसाईट www.koderma.nic.in पर देखा जा सकता है।

जिला समाज कल्याण पदाधिकारी,
कोडरमा
PR 303948 Social Welfare, Women and Child Development(23-24)#D

उपायुक्त का कार्यालय, कोडरमा
(समाज कल्याण शाखा)

सूचना

विज्ञापन PR No– 303308 दिनांक 26–07–2023 एव कार्यालय ज्ञापांक–780/स0क0 दिनांक 25.07.2023 द्वारा वित्तीय वर्ष 2023–24 में दिव्यांगों के लिए विशेष यंत्र आपूर्ति हेतु प्रकाशित अति अल्पकालीन निविदा अपरिहार्य कारणों से रद्द किया जाता है।

नोटः– उक्त के संबंध में विस्तृत जानकारी जिले के बेवसाईट www.koderma.nic.in पर देखा जा सकता है।

जिला समाज कल्याण पदाधिकारी,
कोडरमा
PR303949 (Social Welfare,Women and Child Development)23-24*D

JHARKHAND STATE POLLUTION CONTROL BOARD
TOWNSHIP ADMINISTRATION BUILDING, HEC COMPLEX, DHURWA, RANCHI 834004
Telephone: 0651-2400850 (Fax)/ 2400851/2400852/2401847/2400979/240013
Advertisement No.: B-1919 Dated:02.08.2023

Applications are invited for Consulting Executive (SRF) only for Schedule Caste (SC) candidates on Contract in Jharkhand State Pollution Control Board (JSPCB) as per detail given below:

Name of the Post	Consulting Executive (SRF)
Position Available	1 nos. (Category- Schedule Caste) (This is subject to revision as per requirement). If any selected candidates do not join on time then his seat will be automatically filled by the other candidates of the same category from waiting list.
Type of engagement	Year to Year basis on CONTRACT, initially for a period of one year only from the date of joining and may be extended on case-to-case basis depending upon the performance as per Board's requirements
Monthly Emolument	SRF- No. of posts -1(Category- Schedule Caste) (42,000+HRA+Medical -allowances, Travelling and Allowances as per Rules)
Age Limit	32 years (as on closing date of advertisement) and 05 years relaxable for SC/ST/OBC/differently -abled persons and female candidates
Minimum Education Qualification	Post Graduate (P.G) Degree in Basic Sciences/ Environmental Science (other allied subjects) or B Tech in Environment Engineering/ Civil Engineering/ Chemical Engineering.
Mode of selection	Interview Weightage would be given for work experie nce in relevant field. Educational qualification and marks obtained in P.G /B-Tech
Place of posting	JSPCB Head Office, Ranchi and JSPCB Regional Offices or any other place as decided by the Competent Authority
Enclosers with application	Self-attested copies of the following documents to be submitted along with the application: 1. Proof of Date of Birth 2. Mark Sheets and Degree 3. Certificate for educational qualification 4. Experience Certificate from the Employers (if any) 5. Cast Certificate from Jharkhand Government.
Last date for receipt of application.	Not later than 21 days from the date of publication of the advertisement in the newspapers 5:00 P.M
Address for sending the application form	Jharkhand State Pollution Control Board TA Division Building (Ground Floor) HEC Campus, Dhurwa, Ranchi- 834004 Application form may be downloaded from JSPCB website www.jspcb.nic.in. Incomplete application form shall not be considered. For clarifications please send your queries on email- ranchijspcb@gmail.com.

PR 303899 Jharkhand State Pollution Control Board(23-24)D (Yatindra Kumar Das) Member Secretary

विरोध : सिंचाई के लिए बने पोखरा की रूपरेखा बदलकर छठ घाट बनाने का ग्रामीणों ने जताया विरोध, कहा

अगर स्थानीय पदाधिकारी से न्याय नहीं मिला तो हम सभी हाइकोर्ट में भी करेंगे अपील

- ग्रामीणों का आरोप है कि कुछ व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए छठ घाट के निर्माण का कर रहे हैं प्रयास

आजाद सिपाही संवाददाता

मंझिआंव। नगर पंचायत क्षेत्र अंतर्गत वार्ड नंबर 9 ग्राम में स्थित पोखरा जो सिंचाई के लिए वर्षों से उपयोग में होता आया है तथा लगभग 42 एकड़ भूमि उससे सिंचित होती है, जिसकी रूपरेखा बदलकर छठ घाट बनाने के दुष्परिणाम को लेकर स्थानीय ग्रामीणों ने जमकर विरोध किया। बताते चलें कि वहीं के स्थानीय ग्रामीणों ने आरोप लगाते हुए कहा कि कुछ व्यक्तियों के द्वारा अपने व्यक्तिगत निजी लाभ के लिए छठ घाट के निर्माण का प्रयास किया जा रहा है। जिसको लेकर यहां के ग्रामीणों के द्वारा विरोध पहले भी किया गया था तथा कार्यपालक पदाधिकारी को दो बार आवेदन भी दिया जा चुका है। ग्रामीणों ने प्रतिवेदन के माध्यम से कहा कि इसके बाद भी कार्यपालक पदाधिकारी द्वारा अपने एवं संवेदक के व्यक्तिगत लाभ के लिए उक्त कार्य कराने का प्रयास किया जा रहा है जो जनहित में नहीं है तथा तुरंत इस कार्य में हस्तक्षेप कर निरस्त करने की मांग की। साथ ही वहां पर उपस्थित ग्रामीणों ने पोखरा के सीमांकन को लेकर भी आरोप लगाते हुए कहा कि गांव के राजिंद्र पांडे के द्वारा पोखरा का जमीन का अतिक्रमण कर रोड का जमीन पोखरा में डलवा दिया गया। वहीं इस निर्माण कार्य को लेकर आक्रोशित ग्रामीणों ने कहा कि अगर हमें यहां के स्थानीय पदाधिकारी से न्याय नहीं मिलता है तो हम सभी ग्रामीण हाई कोर्ट में भी अपील करेंगे। वहीं निर्माण कार्य का विरोध करने वालों में अशोक विश्वकर्मा, सुनरदेव राम, सरजु राम, पप्पू राम, प्रदुमन कुमार, विकाश कुमार चंद्रवंशी, मंटू कुमार, संदीप कुमार, सोनू कुमार, ओम प्रकाश कुमार, बिपिन कुमार, सत्यम कुमार, मिथुन कुमार सहित अन्य ग्रामीण उपस्थित थे।

पुलिस निरीक्षक सीएम हांसदा की पत्नी का निधन, शोक की लहर

लोहरदगा(आजाद सिपाही)। पुलिस निरीक्षक लोहरदगा चंद्रमोहन हांसदा की धर्म पत्नी का देहांत हो गया। कुछ दिन से उनकी तबीयत खराब चल रहा था। वही इंस्पेक्टर सीएम हांसदा का भी तबीयत ज्यादा खराब है वह भी रिम्स में भर्ती हैं। उनके निधन पर पुलिस प्रशासन के अधिकारियों और कर्मचारियों, जवानों ने दुख व्यक्त किया है। लोहरदगा जिला पुलिस कप्तान आर रामकुमार ने कहा कि इस दुख की घड़ी में पुलिस परिवार हमेशा उनके परिवार के साथ है। हमारे पुलिस टीम तत्पर हैं और रहेंगे। दुख व्यक्त करने वालो में किसको अंचल पुलिस निरीक्षक मंटू कुमार लोहरदगा थाना प्रभारी अनिल उरांव कैरो थाना प्रभारी शंख नाथ उंराव सेन्हा थाना प्रभारी अभिनव कुमार कुरु थाना प्रभारी विश्वजीत कुमार सिंह बगडु थाना प्रभारी पंकज शर्मा कैरो थाना के एसआई ऋषि कांत शर्मा संतोष कुमार यादव पेशरार थाना प्रभारी अली अख्तर, एएसआई संजय राय एस आई हरि औध करमाली समस्त लोहरदगा जिला पुलिस के जवान शामिल हैं।

उग्रवादी संगठन के नाम पर किस्को में विकास कार्य में की गयी थी लेवी की मांग

लोहरदगा में जेपीसी के दो उग्रवादी गिरफ्तार, मोबाइल और सिम बरामद

आजाद सिपाहील संवाददाता

लोहरदगा। जिले के किस्को थाना क्षेत्र अंतर्गत किस्को और खरकी में बीते दिनों निमार्णाधीन सड़क और एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय में झारखंड प्रस्तुति कमेटी जेपीसी के नाम से पर्चा चिपका कर लेवी की मांग करने की घटना को अंजाम देने के मामले में पुलिस ने खुलासा करते हुए दो अपराधियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। गिरफ्तार अपराधियों की पहचान पलामू के सतबरवा थाना क्षेत्र के सिंदुरिया लहलहे निवासी खुद को जेपीसी के सब जोनल कमांडर बताने वाले अभिमन्यु उर्फ आशुतोष कुमार तिवारी उर्फ कुंदन तिवारी पिता पुरुषोत्तम तिवारी और किस्को थाना के सेमरडीह निवासी अप्राथमिकी मुबारक अंसारी पिता रबुल अंसारी के रूप में किया गया है। अपराधियों के पास से दो स्मार्टफोन, एक कीपैड मोबाइल, सिमकार्ड बरामद किया गया। इस संदर्भ में एसडीपीओ बीएन सिंह ने पत्रकारों को बताया कि लोहरदगा पुलिस अधीक्षक आर राम कुमार एवं एसडीपीओ वशिष्ठ नारायण सिंह को मिली गुप्त सूचना के आधार पर किस्को थाना प्रभारी पॉलीकार्प टोप्पो के नेतृत्व में टीम गठित कर अलग-अलग जगह से घटना में संलिप्त उपरोक्त दोनो अपराधियों को गिरफ्तार किया गया। जिसके बाद पुलिस ने मेडिकल जांच कराते हुए दोनों अभियुक्त को लोहरदगा न्यायिक हिरासत में भेज दिया। गौरतलब है कि किस्को पुलिस पर्चा को जप्त किया था। साथ ही लिखित शिकायत के आधार पर कांड संख्या 22 / 23, धारा 387, 506 आईपीसी 17 सीएलए एक्ट के तहत मामला दर्ज कर छानबीन में जुट गयी थी। इधर छापेमारी दल में किस्को थाना प्रभारी पॉलीकार्प टोप्पो, सब इंस्पेक्टर अनंत मरांडी, एएसआई अविनाश कुमार सिंह, तकनीकी शाखा के नीरज मिश्रा और ललित उरांव शामिल थे। उपरोक्त उग्रवादियों का आपराधिक इतिहास भी रहा है।

इसके खिलाफ बालूमाथ थाना कांड सं0-15/2019, धारा-384 / 341 /506/307 / 386 / 34 भादवि और 25 (1-बी) ए/27 (1) / 35 आर्म्स एक्ट 17 सीएलए एक्ट , एसटी नंबर - 73/18, धारा-302/397/ 398 / 120बी/412/420/467/468/ 471 भादवि और 25/27 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज है।

एसआइएस सुरक्षाकर्मियों के पंजीयन के लिए शिविर सात से

लोहरदगा(आजाद सिपाही)। रमेश, जशवाल, केंद्रीय प्रशिक्षण केंद्र, गढ़वा (झारखण्ड) के पत्र के आलोक में एसआईएस द्वारा सुरक्षाकर्मियों के लिए उम्मीदवारों का लोहरदगा जिला अंतर्गत विभिन्न थाना परिसर में अलग-अलग तिथियों में पंजीयन शिविर का आयोजन इस वर्ष माह अगस्त में विभिन्न थाना परिसर में निम्नांकित तिथियों को आयोजित किया जायेगा। बगडू थाना - 07 और 08 अगस्त, किस्को थाना - 09 और 10 अगस्त, भंडरा थाना - 11 और 12 अगस्त, कैरो थाना - 13 और 14 अगस्त, कुडू थाना - 15 और 16 अगस्त, सेन्हा थाना - 17 और 18 अगस्त, लोहरदगा थाना - 19 और 20 अगस्त को शिविर आयोजित किया जायेगा। उक्त जानकारी एसआईएस भर्ती पदाधिकारी सतीश कुमार सिंह द्वारा दी गयी।

सीओ ने कर्मचारियों को दिया निर्देश

सेन्हा-लोहरदगा (आजाद सिपाही)। अंचलाधिकारी विजय कुमार ने राजस्व कर्मचारियो को निर्देश देते हुए कहा कि जाति, आय, आवासीय प्रमाण पत्र निलंबित है। उसे जल्द पूर्ण करें तथा दाखिल खारिज का कार्य समय सीमा के अनुसार जमीन भूस्वामी को प्रमाण पत्र निर्गत करें और न्यायालय का शपथ पत्र लेकर आय प्रमाण पत्र निर्गत करे तथा साथ ही कहा कि अंचल क्षेत्र के अन्तर्गत गैरमजूरवा भूमि पर खाता, प्लॉट दर्ज कर अतिक्रमण नही करने के लिये निर्देशित बोर्ड लगाये। मौके पर अंचल निरीक्षक चन्द्रप्रकाश महतो राजस्व कर्मचारी रामा महतो, बिनेश्वर भगत, सीताराम टाना भगत, विकास सोनी, रीना देवी सहित सभी उपस्थित थे।

एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन

लातेहार(आजाद सिपाही)। सदर प्रखंड के इचाक पंचायत भवन में आज दिन बृहस्पतिवार को पेयजल और स्वच्छता प्रमंडल लातेहार के अंतर्गत जल जीवन मिशन के तहत जल सहिया, सहिया, आंगनवाड़ी सेविका, वार्ड सदस्य और स्वयं सहायता समूह, से जुड़ी महिलाओं को एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण का आयोजन इचाक पंचायत के मुखिया शशि कुजुर की अध्यक्षता में किया गया। इस दौरान प्रशिक्षण का मास्टर ट्रेनर नागेंद्र मिश्रा के द्वारा जल जीवन मिशन को लेकर सभी लोगों को विस्तार पूर्वक जानकारी दिया गया, साथ ही जल का हमारे जीवन में महत्व को लेकर बताया गया। सभी जल सहिया को FTK कीट का वितरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान पंचायत के सभी जलसहिया सहिया आंगनवाड़ी सेविका वार्ड सदस्य स्वयं सहायता समूह की महिलाएं उपस्थित हुए।

लीगल लिटरेसी क्लास के तहत डालसा ने दी पोक्सो एक्ट और डायन बिसाही की जानकारी

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। झालसा रांची और जिला विधिक सेवा प्राधिकार लोहरदगा के अध्यक्ष राजेंद्र बहादुर पाल के दिशा निर्देश पर किस्को इंटर कॉलेज, किस्को में उपस्थित छात्र-छात्राओं के बीच विधिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव राजेश कुमार, एलएडीसीएस के अधिवक्ता इंद्राणी कुजुर, पैनल अधिवक्ता लाल धर्मेंद्र देव, पीएलबी सह छात्र उत्प्रेरक गौतम लेनीन और जितेंद राम उपस्थित रहे। जिला विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा किसको इंटर महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के बीच पोक्सो एक्ट, डायन बिसाही, चाइल्ड लाइन और डालसा के विभिन्न कार्यों के बारे में जानकारी दी गयी। चाइल्ड लाइन संबंधित 1098 नंबर कैसे काम करता है इसका बच्चों के बीच डेमो देकर प्रस्तुतीकरण किया गया। इंटर कॉलेज के बच्चों ने पेंटिंग प्रतियोगिता और भाषण प्रतियोगिता में भी हिस्सा लिया। उत्कृष्ट आये छात्राओं को डालसा द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किया जायेगा। इस संबंध में जानकारी देते हुए डालसा सचिव राजेश कुमार ने बताया कि जिला शिक्षा अधिकारी के सहयोग से 54 ऐसे विद्यालयों को चिन्हित किया गया है जिसमें गहन लीगल लिटरेसी कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इसी के तहत हर सप्ताह लिगल लिटरेसी कार्यक्रम आयोजित कियेजा रहे हैं।

युवक ने फांसी लगा कर की आत्महत्या

बरवाडीह(आजाद सिपाही)। बरवाडीह प्रखंड के छिपादोहर थाना क्षेत्र के केड पंचायत में बीते रात्रि एक युवक ने आत्महत्या कर लिया। मृत युवक की पहचान केड पंचायत के 30 वर्षीय मुन्ना भुइयां के रूप में की गयी। जानकारी के अनुसार मुन्ना भुइयां का शव घर से कुछ दूरी पर जंगल मे पेड़ पर गमछा के सहारे फांसी पर लटका पाया गया। इस संबंध में ग्रामीणों ने बताया कि मृतक की दो पत्निया थी घर में अक्सर इसी बात को लेकर विवाद होते रहता था। घटना की सूचना ग्रामीणों द्वारा मिलने पर अहले सुबह छिपादोहर थाना प्रभारी अभिषेक कुमार दलबल के साथ घटनास्थल पहुंच जांच पड़ताल में जुट गये। थाना प्रभारी ने बताया कि शव को देखने से प्रथम दृष्टया आत्महत्या का ही मामला लगता है। लेकिन जांच की जा रही है। जांच के बाद ही कुछ कहा जा सकता है कि हत्या है या आत्महत्या है। वहीं शव को पोस्टमार्टम के लिए लातेहार सदर अस्पताल भेज दिया गया।

आदिवासियों को कमजोर ना समझे हेमंत सरकार : मनीर उरांव

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। स्थानीय नीति, नियोजन नीति और सीटीईटी झारखंड के मेधावी आदिवासी-मूलवासी बेरोजगारों को शिक्षक नियुक्ति में अवसर देने की मांग को लेकर भाजयुमो लोहरदगा ने झारखंड सरकार की नीतियों के खिलाफ उपायुक्त कार्यालय के समक्ष धरना प्रदर्शन किया। यह धरना प्रदर्शन भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला महामंत्री सजल कुमार के अध्यक्षता में हुई। मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष मनीर उरांव ने कहा कि हेमंत सोरेन सरकार आदिवासी समुदाय को कमजोर समझने की भूल न करे। झारखंड सरकार लगातार युवाओं के साथ धोखा करती आ रही है। सरकार में आने से पूर्व हेमंत सोरेन ने 500000 नौकरी का वादा किया था पर सरकार में आते अपने वादे के खिलाफ काम कर रही है। मौके पर ओम प्रकाश सिंह, राजकिशोर महतो, राजकुमार वर्मा, समेला भगत, निधि कांत, अजय पंकज, राकेश प्रसाद, ओम प्रकाश गुप्ता, कमलेश कुशवाहा, सरजू साहू, समेत अन्य शामिल थे।

अपराधियों पर शिकंजा कसने में थाना प्रभारी निभायें अहम भूमिका: मंटू कुमार

किस्को अंचल पुलिस निरीक्षक के कार्यालय कक्ष में हुआ अपराध गोष्ठी की रोकथाम हेतु समीक्षा बैठक

आजाद सिपाही संवाददाता

किस्को/लोहरदगा। जिले के किस्को अंचल पुलिस निरीक्षक के कार्यालय कक्ष में अपराध गोष्ठी को लेकर समीक्षा बैठक इंस्पेक्टर मंटू कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। बैठक में सभी थाना प्रभारी को निर्देश देते हुए पुलिस निरीक्षक मंटू कुमार ने कहा कि क्षेत्र में अपराधियों पर शिकंजा कसने में सभी थाना प्रभारी अहम भूमिका निभाएं। इंस्पेक्टर ने कहा कि सभी थाना प्रभारी अपने-अपने क्षेत्रों में पुलिस गश्ती नियमित रूप से करें और क्षेत्र में शांति व्यवस्था बहाल करने में तत्परता दिखाते हुए अपनी जिम्मेदारी का शत प्रतिशत निर्वहन करें। अपराधी प्रवृत्ति की पहचान कर सख्त कार्रवाई करें। सभी थाना प्रभारी को निर्देश देते हुए कहा कि थाना में लंबित पड़े सभी मामले का निष्पादन में तेजी लावें और थाना की साफ सफाई बेहतर बनाये रखें। मौके पर सभी थाना प्रभारी द्वारा इंस्पेक्टर के समक्ष मामले से संबंधित पंजी को प्रस्तुत किया गया। जिसका इंस्पेक्टर के द्वारा बारीकी से समीक्षा किया गया। मौके पर कुडू थाना प्रभारी विश्वजीत कुमार सिंह, बगडू थाना प्रभारी पंकज कुमार शर्मा, कैरो थाना प्रभारी शंखनाद उरांव आदि मौजूद थे।

बागवानी योजना के तहत उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। गुरुवार को प्रखंड कैरो में मनरेगा अंतर्गत प्रखंड स्तरीय एक दिवसीय बागवानी योजना के तहत उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य रूप से पवन महतो, प्रखंड विकास पदाधिकारी कैरो, सुनीता नीलमणि मिंज, सहायक तकनीकी पदाधिकारी डीआरडीए, रघुनाथ मुंडा, प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी (मनरेगा) कैरो, विनीता तिर्की, बीपीएम जेएसएलपीएस, सहायक अभियंता, कनीय अभियंता, सभी मुखिया, सभी पंचायत सचिव, सभी ग्राम रोजगार सेवक, सभी ग्राम के बागवानी सखी/ मित्र उपस्थित रहे। कार्यक्रम के तहत जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनर के रूप में सहायक तकनीकी पदाधिकारी डीआरडीए के द्वारा बागवानी योजना के क्रियान्वयन और प्रबंधन के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गयी।

विदाई सह सम्मान समारोह कार्यक्रम का आयोजन

बरवाडीह(आजाद सिपाही)। बरवाडीह आरपीएफ पोस्ट में और सब इंस्पेक्टर के रूप में पदस्थापित आलोक आनंद के गोमो स्थानांतरण होने के साथ-साथ पोस्ट में पदस्थापित समेत चार जवानों का आर के मीणा हाजीपुर, सुरेश मीणा हजारीबाग रोड़, और ज्योति कुमार हजारीबाग स्थानांतरण किये जाने के बाद गुरुवार को आरपीएफ पोस्ट में विदाई सम्मान सह समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें आरपीएफ पोस्ट के इंस्पेक्टर ओम प्रकाश ठाकुर, स्टेशन प्रबंधक अनिल द्विवेदी समेत अन्य लोगों के द्वारा सभी को पुष्पगुच्छ और माला पहनाने के साथ-साथ उपहार भेंट करके सम्मानित करते हुए उन्हें विदाई दी गयी। विदाई कार्यक्रम के दौरान लोगों को संबोधित करते हुए सब इंस्पेक्टर आलोक आनंद ने बरवाडीह हमारी पहली पदस्थापना थी जहां से सरकारी सेवा में बहुत कुछ सीखने के साथ-साथ जीवन में बहुत कुछ पाने का भी अवसर मिला। विदाई समारोह के दौरान अन्य अधिकारी जवानों के साथ साथ अन्य लोगों के द्वारा भी उपहार भेंट करके सम्मानित करने का काम किया गया। मौके पर जे के यादव, नीतीश कुमार, लव कुमार, विनोद कुमार फिरोज अहमद समेत काफी सख्या में लोग उपस्थित थे।

भैसादोंन के प्रभारी प्रधानाध्यापक कंचन सिंह की सेवानिवृत्ति पर विदाई समारोह

बालूमाथ(आजाद सिपाही)। भैसादोंन बालूमाथ के प्रभारी प्रधानाध्यापक श्री कंचन कुमार सिंह जी की सेवानिवृति होने पर और सीआरसी भैसादोंन के सीआरपी श्री जीवन कुमार अनुपम जी का स्थानांतरण अन्य सीआरसी में होने पर राजकीयकृत मध्य विद्यालय सह सीआरसी कार्यालय भैसादोंन में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में धाधु पंचायत की मुखिया श्रीमती कुंवारी भगवती ग्राम प्रधान बिहारी यादव, सहित सैकड़ों ग्रामीण जनता के साथ साथ, प्रोजेक्ट बालिका उच्च विद्यालय बालूमाथ के शिक्षक श्री निर्मल सिन्हा जी, राजकीय कृत मध्य विद्यालय धाधु, उत्क्रमित हाई स्कूल सेमरसोत, उत्क्रमित मध्य विद्यालय मुरगांव, उत्क्रमित मध्य विद्यालय चितरपुर, उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय पिंडराही, खरटिया, हराफू गेरेंजा के शिक्षक शिक्षिकायें उपस्थित थे।

आजसू नेता पर कानूनी कार्रवाई के लिए एसपी को दिया आवेदन

जिला मुखिया संघ ने आजसू नेता के आरोप को बताया निराधार

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। जिला मुखिया संघ और प्रखंड मुखिया संघ की बैठक जिलाध्यक्ष बासुदेव उरांव की अध्यक्षता में हुई। इस दौरान संघ ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि आजसू नेता राजू गुप्ता के द्वारा लगाये गये आरोप और आवेदन बिल्कुल निराधार है। बैठक के उपरांत राजू गुप्ता के द्वारा किस्को प्रखंड के सभी मुखिया से रंगदारी मांगने और जाति सूचक शब्द का प्रयोग करने के मामले को लेकर जिला और किस्को प्रखंड मुखिया संघ ने लोहरदगा पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में कहा कि आजसू पार्टी के केंद्रीय सदस्य राजू गुप्ता के द्वारा किस्को प्रखंड के सभी मुखियाओं को आरोपित किया जाना बिल्कुल निराधार है। कहा कि वास्तविकता यह है कि 14वें और 15वें वित्त योजना के जांच के क्रम में हम सभी किस्को प्रखंड के मुखिया से राजू गुप्ता के द्वारा रंगदारी से पैसे की मांग की जाने लगी। परंतु पैसा देने से इनकार करने पर जातिसूचक शब्द बार-बार बोल कर धमकाने लगा कि पैसा नहीं दोगे तो जेल भेज देंगे। राजू गुप्ता के इस तरह के बर्ताव से हम सभी आदिवासी मुखियागण मानसिक रूप से काफी आहत हुए हैं और भयभीत भी हैं।क्योंकि राजू गुप्ता पूर्व में रेपिस्ट एवं अपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति रहा है। मुखिया संघ ने पुलिस अधीक्षक से इस मामले को गंभीरता से लेते हुए न्याय संगत कानूनी कार्रवाई की मांग की है। यह भी कहा है कि इस तरह के आदिवासी भावनाओं को प्रताड़ित किया जाता रहा तो जिला मुखिया संघ और आदिवासी संगठन के बैनर तले पुरजोर तरीके से आंदोलन करने पर बाध्य होंगे। बैठक में जिला सचिव परमेश्वर महली, उपाध्यक्ष अनिल उरांव, उपाध्यक्ष बसंत उरांव, सलाहकार समिति दिलीप कुमार उरांव, देवरिया पंचायत मुखिया कामिल टोपनो सहित अन्य मुखिया गण शामिल थे।

गूंगी-बहरी बनी बैठी है राज्य सरकार: हरे कृष्ण सिंह

जो राज्य में सरकार बैठी है वो गूंगी और बहरी है: छोटू राजा

आजाद सिपाही संवाददाता

लातेहार। लातेहार जिला मुख्यालय स्थित समाहरणालय में भारतीय जनता युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष छोटू राजा के अध्यक्षता में हेमंत सोरेन के युवा विरोधी नीतियों के खिलाफ धरना प्रदर्शन किया गया। वहीं मंच संचालन भाजयुमो जिला महामंत्री सूरज शाह ने किया। धरना प्रदर्शन को संबोधित करते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष हरि कृष्ण सिंह ने कहा कि आज जो राज्य में सरकार बैठी है वह बिल्कुल गूंगी और बहरी सरकार है राज्य में लगातार भ्रष्टाचार चोरी डकैती बलात्कार जैसे घटना आये दिन देखने को मिलता है। युवाओं के लिए और यहां के मूल वासियों के लिए अभी तक स्थानीय नीति नही बना सकी है ना नियोजन नीति बना सकी है। धरना को संबोधित करते हुए भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष निशांत कुमार ने कहा कि हमारे राज्य में ना ही स्थानीय नीति है, नाही नियोजन नीति है। जिसका खामियाजा हम नौजवान लगातार भुगत रहे हैं। हाल ही में वर्तमान में चल रही हेमंत सोरेन जी की सरकार ने शिक्षक नियुक्ति का विज्ञापन निकाला है। इस परीक्षा में झारखंड टीईटी उत्तीर्ण उम्मीदवार ही भाग ले सकते हैं। परंतु यह दुर्भाग्य है कि झारखंड में 2016 के बाद टीईटी की परीक्षा का आयोजन ही नहीं हुआ है। 2016 से अभी तक लगभग ढाई लाख झारखंडी आदिवासी मूलवासी युवा बीएड और बीटीसी की परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। इनमें बहुतायत युवा सीटीईटी की परीक्षा अपनी मेधा के बल पर उत्तीर्ण कर चुके हैं। एनसीटीई के गाइडलाइन के अनुसार यह सभी झारखंडी युवा शिक्षक बनने के योग्य हैं। पर यह दुर्भाग्य है कि वर्तमान सरकार इन सारे झारखंडी युवाओं को अयोग्य करार देते हुए शिक्षक नियुक्ति परीक्षा से वंचित कर रही है। वर्षों से इस नियुक्ति के आशा में दिन रात पढ़ाई करने वाले राज्य के नौजवानों की जिंदगी में अंधेरा छा गया है। कार्यक्रम के उपरांत डीसी महोदय को लिखित आवेदन महामहिम राज्यपाल के नाम पर सौंपा गया। मौके पर भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य राजधानी प्रसाद यादव पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष सुशील अग्रवाल भाजपा जिला महामंत्री पंकज सिंह भाजपा जिला मंत्री ध्रुव पांडे भाजयुमो प्रदेश कार्यसमिति मुकेश पांडे आशुतोष सिंह चेरो पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष सुशील अग्रवाल भाजयुमो जिला उपाध्यक्ष सुमंत कुमार भाजयुमो मंत्री अजय प्रसाद भाजपा बालूमाथ मंडल अध्यक्ष लक्ष्मण कुशवाहा भाजपा लातेहार नगर मंडल अध्यक्ष रितेश कुमार निक्कू भाजपा लातेहार ग्रामीण मंडल अध्यक्ष प्रमोद कुमार जिला मंत्री अजय प्रसाद जिला आईटी सेल प्रभारी अजय सोनी भाजपा सोशल मीडिया प्रभारी पंकज यादव राजीव रंजन समेत कई लोग उपस्थित थे।

चंपा पंचायत में जूट हैंडीक्राफ्ट प्रशिक्षण का उद्घाटन

महुआडांड़ (आजाद सिपाही)। आदिम जनजाति समुदाय के महिलाओं का कौशल विकास कर रोजगार से जोड़ने के उद्देश्य से जन सहभागी विकास केंद्र, राँची और नेशनल जूट बोर्ड कोलकाता (वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार) के संयुक्त तत्वधान में लातेहार - जिला के महुआडांड़ प्रखंड के चंपा - पंचायत में आयोजित जुट हेंडीक्राफ्ट प्रशिक्षण का उद्घाटन प्रखंड विकास पदाधिकारी श्री अमरेंद्र डांग ने दीप प्रज्वलित कर किया और कहा कि संस्था महुआडांड़ के सूदूरवर्ती क्षेत्र की आदिम जनजाति महिलाओं को प्रशिक्षित कर रही है, इसकी सराहना करता हूँ। प्रशिक्षण के बाद सामग्री को बेचने की व्यवस्था भी प्रखंड कार्यलय द्वारा किया जायेगा। मौके पर नेशनल जूट बोर्ड के संदीप चक्रवर्ती, झारखंड स्किल लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के प्रखंड कार्यक्रम प्रबंधक, तेजू कुमार सिंह समेत अन्य सदस्य शामिल थे।

प्रखंड बीआरसी भवन पर बीइइओ की अध्यक्षता में मासिक गुरुगोष्ठी में शैक्षणिक बिंदुओं पर चर्चा

कैरो (लोहरदगा)(आजाद सिपाही)। प्रखंड कैरो जिला लोहरदगा के अंतर्गत 03 जुलाई गुरुवार को प्रखंड संसाधन केंद्र भवन कैरो मे प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी जयमंगल लोहरा की अध्यक्षता मे मासिक गुरु गोष्ठी का किया गया आयोजन। उक्त गुरु गोष्ठी मे शिक्षको के बीच जवाहर नवोदय विद्यालय के फार्म और पंप्लेट का वितरण करते हुए गुरु गोष्ठी मे प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी जयमंगल लोहरा ने शिक्षको से कहा कि प्रयास कार्यक्रम का जुलाई महीने का हार्डकापी आप सभी शिक्षक प्रतिवेदन प्रस्तुत करे। गुरु गोष्ठी बैठक मे नव भारत साक्षरता कार्यक्रम, जन्म प्रमाण पत्र का सर्वे सुचि प्रतिवेदन जमा करने, ई विद्या वाहिनी मे 22-23 मे 100% बच्चो का इंट्री करने, नये नामांकित बच्चो की सुचि जमा करने, पाठय पुस्तक वितरण सुचि जमा करने इत्यादि अन्यान्य विन्दुओं पर शिक्षको को बीईईओ ने निर्देश दिया। आज के उक्त गुरु गोष्ठी बैठक मे बीपीओ ओमप्रकाश रंजन प्रभारी प्रधानाचार्य ताजमोहम्मद, अम्रेंद्र कुमार, देवनंदन नायक, शिव कुमार, समशाद आलम, अणिमा देवी, परदेशी उराँव इत्यादि शिक्षक गुरुगोष्ठी मे उपस्थित थे।

बीडीओ ने मुर्की तोड़ार पंचायत भवन का निरीक्षण किया

सेन्हा-लोहरदगा(आजाद सिपाही)। प्रखंड विकास पदाधिकारी द्वारा मुर्की तोड़ार पंचायत भवन का निरीक्षण किया गया। क्षेत्र भ्रमण के क्रम में प्रखंड विकास पदाधिकारी अशोक कुमार चोपड़ा ने मुर्की तोड़ार पंचायत भवन का निरीक्षण के क्रम में रोकड़ पंजी, योजना पंजी सहित विभिन्न योजनाओं का अभिलेख का जांच कर आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कहा कि अपूर्ण योजना को 15 दिन के अंदर पूर्ण कर अभिलेख बंद करने का निर्देश दिया गया। मौके पर मुखिया कमला देवी, पंचायत सचिव महिपाल उराँव सहित अन्य मौजूद थे।

गुमला की बेटी स्पेन के त्रिबांगो में आयोजित होनेवाले यूथ कॉमनवेल्थ गेम्स के लिए भारतीय टीम में हुई शामिल

गुमला (आजाद सिपाही)। गुमला जिला आज खेल नगरी के रूप में जाना जाता है। सबसे पहले हॉकी से ही गुमला जिले को एक पहचान मिली। अब गुमला से विभिन्न खेलों के खिलाड़ी निकल रहे हैं। गुमला में कई ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्होंने पंचायत स्तर से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक अपनी पहचान बनायी और गुमला को भी पहचान दिलाई है। इसी कड़ी में गुमला के कामडारा प्रखंड के नवाडीह के सुदूरवर्ती गांव की रहने वाली एथलीट आशा किरण बाला गांव से निकलकर स्पेन के तेरी बाहों में आयोजित होने वाले यूथ कॉमनवेल्थ गेम्स में भारतीय टीम में शामिल की गई है। 4 से 13 अगस्त तक होने वाली इस प्रतियोगिता में आशा 800 मीटर दौड़ के अलावा 4 गुना 400 मीटर मिक्सड रिले प्रतियोगिता में भी भाग लेगी। आशा वर्तमान में भारतीय एथलेटिक्स अकादमी बोकारो में ट्रेनिंग ले रही है। आशा के चयन पर कोच आशू भाटिया सहित अन्य प्रशिक्षक एवं प्रशासकों ने बेहतर प्रदर्शन करने की शुभकामनाएं देते हुए बधाई दी है।

पिस्टल की बट से मारकर घायल करने और पांच लाख रंगदारी मांगने की प्राथमिकी दर्ज

सिसई (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के मेन रोड सिसई भदौली निवासी शुभम विश्वकर्मा ने पिस्टल की बट से मारकर गंभीर रूप से घायल करने, पांच लाख रंगदारी मांगने और नहीं देने पर जान से मारने की धमकी देने के मामले में केस दर्ज कराते हुए अपनी सुरक्षा की गुहार लगाई है। शुभम ने रहमत नगर सिसई निवासी राजा अंसारी उर्फ शाहबाज अंसारी सहित दो युवक और दो महिला को आरोपी बनाया है। दर्ज केस में कहा है कि मैं करीब तीन बजे दिन में बैंक ऑफ इंडिया के निकट अपने विश्वकर्मा प्लाईवुड की दुकान में बैठा था। इसी दौरान राजा अंसारी फोन कर अपने रहमत नगर स्थित जिम में बुलाया। निखिल सोनी से लेनदेन को लेकर पहले भी राजा कई बार शुभम को धमकी दे चुका था। जिसके डर से मैं जिम के पास नहीं गया। करीब आधा घण्टा बाद राजा एक कार से दो महिला और दो युवक को लेकर मेरी दुकान पहुंचा। कार से उतरकर सभी दुकान के अंदर घुसे और मुझे गाली गलौज करते हुए पांच लाख रुपये की मांग करने लगे। भय से मैं फोन कर अपने पिता अर्जुन विश्वकर्मा व मां सरिता देवी को जानकारी देते हुए दुकान में बुलाया। माता-पिता के पहुंचते ही महिलाएं मेरे पिता के साथ धक्का-मुक्की करते हुए भाग जाने के लिए कहने लगी, राजा भी पिस्टल निकालकर अर्जुन को नहीं भागने पर चीर देने की धमकी देने लगा। इसी दौरान राजा पिस्टल की बट से अचानक मुझे मारने लगा। जिससे मेरी आंख के ऊपर गंभीर चोट आई और खून बहने लगा और मैं गिरकर बेहोश हो गया। जिसके बाद राजा अंसारी ने अर्जुन को पांच लाख रंगदारी देकर मामला मैनेज करने और पांच लाख नहीं देने पर घर से उठवाकर जान से मार देने की धमकी देते हुए सभी को लेकर वहां से चला गया। होश में आने पर मैं अपने माता-पिता के साथ थाना आया। आवेदन देकर प्राथमिकी दर्ज कराते हुए आरोपियों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करने व अपनी सुरक्षा की गुहार लगाई है।

सर्पदंश से इलाज के क्रम में ग्रामीण की मौत

गुमला (आजाद सिपाही)। थाना अंतर्गत सीलम निवासी 37 वर्षीय बासीर खेस को रात्रि 11:30 बजे करैत सांप ने डंस लिया। जिसे परिजन तत्काल रात्रि सदर अस्पताल में भर्ती कराये, जहां आज सुबह इलाज के क्रम में मौत हो गई। घटना की जानकारी देते हुए परिजन ने बताया कि रात में खाना पीना खाकर अपने रूम में सो रहे थे तभी सांप ने डंस लिया जिसको लेकर सदर अस्पताल आए और सुबह में उसका इलाज के क्रम में मौत हो गई। वहीं घटना की सूचना पर पुलिस सदर अस्पताल पहुंची।

जुआ खेल रहे छह जुआरियों को पुलिस ने दबोचा, 42720 रुपये बरामद, सभी को भेजा गया जेल

गुमला (आजाद सिपाही)। पुलिस अधीक्षक डॉ एहतेशाम वकारीब के निर्देश पर गुमला पुलिस की टीम ने अवैध रूप से जुआ खेलने वालों के खिलाफ कार्रवाई की है। गुमला शहरी क्षेत्र के लक्ष्मण नगर स्थित धनंजय गिरी के घर के पास सेनवार पेड़ के नीचे जुआ खेल रहे 6 जुआरियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया। इनके पास से ?42720 बरामद किया गया है। गुरुवार की दोपहर गुमला थाना में प्रेस वार्ता का आयोजन कर थाना प्रभारी मनोज कुमार ने पूरे मामले का खुलासा किया। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार अभियुक्तों में धनंजय गिरी, समलेश शर्मा, जितेंद्र सिंह, रोहित केसरी, मकसूदन दास और शैलेश उरांव (सभी लक्ष्मण नगर निवासी) शामिल है। छापामारी दल में सअनि बिरबल नपांडे के अलावा गुमला पुलिस के जवान शामिल थे। उन्होंने आगे बताया कि अवैध नशापान और जुआ के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी रहेगी। वही, मीडिया के समक्ष प्रस्तुत करने के बाद सभी अभियुक्तों को जेल भेज दिया गया।

निरीक्षण : उपायुक्त ने चार घंटे तक किया सदर अस्पताल का निरीक्षण

अस्पताल की समस्याओं से हुए अवगत आम जनों से भी लिया फीडबैक

उपायुक्त ने जन्म एवं मृत्यु प्रमाण पत्र को लेकर कर्मियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने सदर अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। चार घंटे के निरीक्षण के क्रम में उपायुक्त ने पूरे अस्पताल का भ्रमण कर 11 से अधिक विभाग कार्यालय जिसमें ओपीडी, जांच केंद्र , महिला एवं पुरुष वार्ड, एमटीसी सेंटर, इमरजेंसी वार्ड, दवा केंद्र, आयुष्मान केंद्र, आई चेकअप ओपीडी, ब्लड बैंक, मेंटल हेल्थ सेंटर जैसे कई विभाग, वार्ड, कार्यालय शामिल थे। इस दौरान उन्होंने एक-एक कर पूरे अस्पताल की व्यवस्थाओं की जांच की। डॉक्टरों से प्रतिदिन के कार्यों की जानकारी ली, साथ ही डॉक्टर्स द्वारा किए गए मरीजों के इलाज से जुड़े डाटा एंट्री पंजी को भी ध्यानपूर्वक मिलान एवं जांच की। डॉक्टरों ने भी अपनी समस्याओं से उपायुक्त को अवगत कराया। साथ ही जांच हेतु नए इक्विपमेंट्स की भी उपायुक्त से मांग की। उपायुक्त ने सभी इक्विपमेंट की सूची को नोट किया एवं जल्द ही सामग्रियों को उपलब्ध कराने की बात कही।

उपायुक्त ने जन्म एवं मृत्यु प्रमाण पत्र को लेकर कर्मियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए कहा मृतक के परिजनों को जन्म या मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने को लेकर अस्पताल का चक्कर न लगाना पड़े , इसलिए जरूरी दस्तावेजों की सूची काउंटर के बाहर बड़े अक्षरों में लिखने का निर्देश दिया एवं अविलंब जन्म अथवा मृत्यु प्रमाण पत्र परिजनों को निर्गत करवाने की बात कही। इस दौरान शिशु केंद्र में उपस्थित डॉक्टर से प्रतिदिन के केस के बारे में जानकारी ली एवं बच्चों को दी जाने वाली दवाओं की भी सूची देखी। उपायुक्त ने सिकल सेल एनीमिया, थैलेसिमिया के मरीजों को लेकर गंभीरता व्यक्त की। उन्होंने एसीएमओ को इससे संबंधित अभियान चलाने हेतु नोडल पदाधिकारी बनाया। इसके अलावा उपायुक्त ने अस्पताल में बन रहे सीटी स्कैन रूम और एक्सरे रूम का भी निरीक्षण किये और आवश्यक दिशा निर्देश दिये। उन्होंने सभी प्रक्रियाओं को एक माह के अंदर पूर्ण करते हुए उक्त मशीनों का अस्पताल में अधिष्ठापन करने का निर्देश दिया।

इस दौरान उपायुक्त ने महिला वार्ड, पुरुष वार्ड, शिशु वार्ड, इमरजेंसी वार्ड तथा आईसीयू का भी निरीक्षण किया। उन्होंने इस दौरान वहां आए मरीजों से बातचीत के दौरान ये भी सुनिश्चित किया कि एंबुलेंस से लेकर अस्पताल में मिलने वाले सुविधाओं एवं निः शुल्क मिलने वाली दवाओं के लिए कोई अवैध रूप से पैसे तो नहीं ले रहे। उपायुक्त ने मरीजों से ही वहां मिलने वाली सभी सुविधाओं की जानकारी। इस दौरान उपायुक्त ने अस्पताल परिसर अंतर्गत निमार्णाधीन सेप्टिक टैंक का भी निरीक्षण किया गुणवत्ता के खराब होने पर उपायुक्त ने नाराजगी व्यक्त की एवं अविलंब इसमें सुधार करते हुए सेप्टिक टैंक का पुनः निर्माण करने का निर्देश दिया।

निरीक्षण के दौरान एसडीओ सदर, सिविल सर्जन, एसीएमओ, सदर अस्पताल उपाधीक्षक, प्रभारी एचएम सहित डॉक्टर्स एवं कर्मी मौजूद रहे।

तस्करी के लिए ले जाये जा रहे 13 मवेशी जब्त, तस्कर और चालक फरार

गुप्त सूचना पर रायडीह पुलिस ने की कार्रवाई

सभी पशुओं को ग्रामीणों को जिम्मेनामा पर सौंप दिया गया

आजाद सिपाही संवाददाता

रायडीह। रायडीह पुलिस ने बुधवार रात्रि को एक बोलेरो पिकअप वाहन में लदे 13 गोवंशीय पशु को जब्त किया। वहीं तस्कर व चालक अधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गये।

जानकारी थानेदार अमित कुमार ने देते हुए बताया कि गुप्त सूचना प्राप्त हुई थी कि छतीसगढ़ की ओर से एक पिकअप वाहन में गोवंशीय पशु को लादकर तस्कर मुरगु सिसई गांव निवासी हमीद मीर व चालक सह साई टंगराटोली निवासी महबूब आलम छतीसगढ़ निवासी बूचड़खाना में वध करने व तस्करी करने के लिए रांची की ओर लेकर जा रहे हैं।

सूचना मिलते ही वरीय पदाधिकारियों को सूचित करते हुए रायडीह थाना के गेट के सामने वाहन जांच अभियान शुरू कर दिया गया। तभी कुछ देर में देखा गया कि छतीसगढ़ की ओर से एक पिकअप वाहन आ रहा है। पुलिस द्वारा वाहन को रोकने का इशारा किया गया परंतु चालक बैरिकेट को तोड़ते हुए तेजी से वाहन को भगाने लगा व मरदा सदाशिव मंदिर की ओर जाने वाले रास्ते में घुस गया। पुलिस द्वारा उक्त वाहन का पीछा किया जाने लगा।

भागने के क्रम में लसड़ा बरटोली वाली घाटी पर वाहन नियंत्रित होकर पलट गया। जहां से चालक व तस्कर अधेरे का फायदा उठाकर जंगल में फरार हो गये। वाहन में देखा गया कि गोवंशीय पशु ठूंस ठूंस कर भरे हुए थे।

सभी पशुओं को निकालकर थाना लाया गया। तस्कर, चालक व वाहन मालिक के ऊपर केस दर्ज किया गया। वहीं सभी पशुओं को ग्रामीणों के बीच जिम्मेनामा पर सौंप दिया गया।

कांग्रेस नेताओं ने उपायुक्त से मिलकर केओ कॉलेज की समस्याओं से कराया अवगत

शिक्षा विभाग एवं कॉलेज प्रशासन के समन्वय के अभाव में छात्रों का भविष्य अंधकार हो रहा है : चैतु उरांव

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चैतु उरांव, जिला कमेटी के सदस्य एवं छात्र नेताओं के साथ जिला अंतर्गत केओ कॉलेज गुमला में इंटर के नामांकन के संबंध में उपायुक्त को मांग पत्र सौंप कर इंटर संकाय में नामांकन नहीं होने संबंधीत सभी समस्याओं से अवगत कराया।

चैतु उरांव ने कहा कि विगत दिनों कॉलेज में नामांकन नहीं होने से जिला के सभी छात्र-छात्राओं के द्वारा कॉलेज में तालाबंदी की गयी। साथ ही रोड जाम भी किया गया जो दुर्भाग्यपूर्ण है।

इस संबंध में उपायुक्त को कॉलेज प्रशासन के साथ हुई वार्ता के संबंध में पूरी जानकारी दी गई। वस्तु स्थिति से अवगत होने से बातचीत से स्पष्ट है कि विभाग एवं कॉलेज प्रशासन के समन्वय के अभाव में छात्रों का भविष्य अंधकार हो रहा है। शिक्षा विभाग एवं कॉलेज प्रशासन द्वारा एक-दूसरे पर दोषारोपण कर मामले को उलझाने की कोशिश की जा रही है।

कहा कि सरकार के द्वारा इंटर में नामांकन हेतु समाचार पत्रों में आदेश निर्गत किया गया था। परंतु अब तक कॉलेज प्रशासन को कोई अधिकारिक पत्र नहीं मिल पाया है।

इस संबंध में शिक्षा विभाग को कॉलेज प्रशासन के द्वारा स्पष्ट निर्देश देने की मांग की गई है किंतु इस पर विभाग मौन है। इससे स्पष्ट है कि विभागीय लापरवाही की वजह से छात्र-छात्राओं का भविष्य पर असर पड़ रहा है। सभी समस्याओं से अवगत होते हुए जिला उपायुक्त महोदय ने कहा कि विभाग एवं कॉलेज प्रशासन के द्वारा अब तक की गयी कार्यवाही के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के उपरांत निर्देश दिया गया कि अविलंब जितने भी पत्राचार हुए हैं उसकी कॉपी उपलब्ध कराएं जिससे कि अग्रेतर कार्यवाही की जा सके।

उपायुक्त ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ नहीं किया जाएगा। इंटर संकाय में नामांकन हेतु आवश्यक रूप से कार्रवाई की जाएगी।

मौके पर फिरोज आलम, तरुण गोप, रूपेश कुमार सन्नी, बिंदेश्वर साहू,राजु उरॉव विनोद उरांव सुबोध उरावं,रमेश उरांव सुधीर उराव अनुपा कुमारी नमिता कुमारी मुशायरा उराव शंकर मुंडा जगदीश उराव उपस्थित थे।

बैठक : केओ कॉलेज में नामांकन शुरू कराने को लेकर पूर्व शिक्षा मंत्री गीताश्री उरांव ने प्राचार्य के साथ किया विचार-विमर्श, कहा

जैक अध्यक्ष, रांची विवि और मुख्यमंत्री से बातचीत कर समस्या के समाधान का करूंगी प्रयास

इस संबंध में छात्र नेताओं ने पूर्व में कॉलेज में तालाबंदी कर आंदोलन किया था

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। जिले में माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद नामांकन के लिए कई विद्यार्थियों को कॉलेज दर कॉलेज भटकते हुए देखा जा रहा है। गुमला आदिवासी बहुत क्षेत्र होने के कारण गांव देहात में गरीब छात्र को शहर के कॉलेजों में पढ़ना मुश्किल हो गया है। प्रायः सभी कॉलेजों में सीट फुल होने की बात कही जा रही है। वहीं निजी कॉलेजों में अत्यधिक फीस के कारण ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी नहीं पढ़ पा रहे हैं। जिससे उनका कैरियर बर्बाद हो रहा है। इस संबंध में छात्र नेताओं ने पूर्व में कॉलेज में तालाबंदी कर आंदोलन किया था। जिसके बाद गुरुवार को पूर्व शिक्षा मंत्री गीताश्री उरांव को मामले की जानकारी दी। वहीं गीताश्री उरांव ने कार्तिक उरांव कॉलेज में नामांकन की समस्या को लेकर कॉलेज के प्राचार्य के साथ कार्यालय में बैठक कर मामले को लेकर विचार विमर्श किया। वहीं कॉलेज के प्राचार्य ने बताया कि तकनीकी कारणों के कारण और फंडिंग की समस्या को लेकर कॉलेज में इंटर की पढ़ाई नहीं शुरू की जा रही है। बताया कॉलेज यूजीसी से संबंधित है और पिछले वर्ष ही कॉलेज में इंटर की पढ़ाई बंद कर दी गई है। वहीं बताया कि कॉलेज में इंटर की फीस 144 रुपये प्रति छात्र तय है। जिसमें डेवलपमेंट फीस के रूप में शिक्षकों को वेतन के रूप में नहीं दिया जा सकता है। छात्रों के नामांकन के बाद कॉलेज में फंडिंग की समस्या है। वहीं कॉलेज में नामांकन को लेकर विश्वविद्यालय की ओर से किसी प्रकार का कोई पत्र भी प्राप्त नहीं हुआ है।

वहीं उपस्थित छात्र नेताओं ने कहा कि अन्य कॉलेजों में जो यूजीसी की तर्ज पर हैं, उन कॉलेजों में इंटर की पढ़ाई हो रही है लेकिन कार्तिक उरांव कॉलेज में इंटर की पढ़ाई शुरू नहीं की जा रही है।

इस बात को लेकर पूर्व शिक्षा मंत्री गीताश्री उरांव ने मामले को लेकर जैक के अध्यक्ष, रांची यूनिवर्सिटी और मुख्यमंत्री से बातचीत कर समस्या के समाधान का प्रयास करने की बात कही।

कुएं से युवक का शव बरामद, हत्या की आशंका

सिसई (आजाद सिपाही)। करंज थाना क्षेत्र के कुंजाली तिर्राडीह निवासी हरिराम मुंडा (30) की सिसई थाना क्षेत्र के नगर दशईटोली के फेकला मुंडा की कुएं में डूबने से गुरुवार को मौत हो गई। सूचना पर सिसई पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए गुमला भेज दिया। इस बाबत मृतक के भाई बुधराम मुंडा ने बताया कि बुधवार को हरिराम मुंडा की पत्नी सुमन देवी ने करंज थाना में उसके गुमशुदगी को लेकर सन्हा दर्ज कराया था। हरिराम के सिर, मुंह, आंख व छाती में चोट के निशान थे। शरीर में कई जगह चोट के निशान को देख परिजनों ने आशंका जताई कि हरिराम मुंडा की हत्या कर शव को छुपाने की नियत से कुंए में फेंका गया है।

महत्वपूर्ण न्यूज

अवैध शराब बिक्री के खिलाफ चला छापामारी अभियान, भारी मात्रा में शराब की गयी नष्ट

डुमरी (आजाद सिपाही)। डुमरी पुलिस के द्वारा गुरुवार को नशीले व मादक पदार्थ के खिलाफ छापामारी अभियान चलाया गया। इस दौरान भारी संख्या में जावा महुआ जब्त कर पुलिस के द्वारा नष्ट किया गया। डुमरी पुलिस ने कार्रवाई करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में छापामारी अभियान चलाया। जिसमें थाना प्रभारी रवि कुमार के नेतृत्व में प्रखंड क्षेत्र के जैरागी बस्ती में कई लोगों के घर में छापा मारकर अवैध शराब बरामद किया गया, जिसको तत्काल नष्ट किया गया। वहीं पुलिस को आते देख जावा महुआ का शराब बनाकर बेचने वालों में हड़कंप मच गया। लोग पुलिस को देखते ही भागने लगे। डुमरी पुलिस ने क्षेत्र को नशामुक्त बनाने के लिए गांव के विभिन्न घरों में भी तलाशी ली। इस दौरान कई घरों से भारी मात्रा में शराब बनाने वाले जावा महुआ व बनी हुई शराब बरामद की गयी। जिसे पुलिस ने तत्काल नष्ट कर दिया। वहीं ग्रामीणों को सख्त लहजे में चेतावनी दी कि दोबारा शराब बनाते या बेचते पाए जाने पर उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। मौके पर थाना प्रभारी रवि कुमार सहित पुलिस के जवान मौजुद थे।

शशि भूषण बने भाजयुमो प्रखंड अध्यक्ष

चैनपुर (आजाद सिपाही)। चैनपुर प्रखंड निवासी शशि भूषण बैगा को भाजपा युवा मोर्चा का प्रखंड अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। इससे पहले शशि भूषण बैगा चैनपुर मंडल के महामंत्री के पद पर रहते हुए पार्टी संगठन में बेहतर कार्य किए हैं। युवा मोर्चा के प्रखंड अध्यक्ष बनाए जाने पर चैनपुर सांसद प्रतिनिधि निरज शर्मा, चैनपुर मंडल अध्यक्ष मनोहर बड़ाईक, अमित किशोर पांडेय, विक्की साहू, बसंत बैगा, बुधराम नायक सहित कई पार्टी कार्यकर्ता एवं ग्रामीणों ने बधाई दी।

थाना दिवस पर जमीन संबंधित तीन मामलों का हुआ निष्पादन

बिशुनपुर (आजाद सिपाही)। सीओ धनंजय पाठक की अध्यक्षता में गुरुवार को थाना परिसर में थाना दिवस का आयोजन किया गया। इस मौके पर सीओ धनंजय पाठक ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि महीने के हर प्रथम सप्ताह में थाना दिवस का आयोजन किया जाता है। जहां पर जमीन संबंधित विवादित मामलों का निपटारा आप सभी करा सकते हैं। सीओ ने कहा कि जमीन संबंधित मामला को लेकर आप सभी कोर्ट में जाते हैं तो पैसा व समय दोनों बर्बाद होता है। बेहतर है कि एक बार थाना दिवस के मौके पर आकर अपनी समस्याओं को रखें। जिससे आपकी समस्याओं का समाधान हो सके। इस मौके पर विभिन्न गांव के जमीन संबंधित पांच मामले आये। जहां पर सीओ धनंजय पाठक ने दोनों पक्षों को समझाते हुए तीन मामले का निष्पादन किया। वहीं दो मामले का निष्पादन नहीं हो सका। इस मौके पर एसआई दशरथ कुमार दास, एसआई बीरू देव सिंह सहित कई ग्रामीण मौजूद थे।

विस घेराव कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रखंड के स्वयंसेवक रांची रवाना

सिसई (आजाद सिपाही)। पांच सूत्री मांगों को लेकर गुरुवार को राज्य स्तरीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा आहुत विधानसभा घेराव कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रखंड के स्वयंसेवक रांची रवाना हुए। रांची रवाना होने वालों में सुनील कुमार साहू, रोहिताश्व साहू, दिपेयर साहू, रविराम उरांव, हुसैन अंसारी, संजय प्रधान, प्रताप गोप, संतोष साहू, अनिल उरांव, सकलु गोप, गोकुल महली, रामकेश्वर महली, शिवराज साहू, रविन्द्र साहू, कलिन्द्र उरांव, अजीजुर रहमान अंसारी, महावीर महली, निरंजन उरांव सहित कई स्वयंसेवक शामिल थे।

चैनपुर मंडल भाजपा पदाधिकारियों ने वज्रपात से मृत लोगों के परिजनों से मिलकर हरसंभव मदद दिलाने का दिया आश्वासन

चैनपुर (आजाद सिपाही)। भाजपा मंडल के पदाधिकारियों ने गुरुवार को शाम पांच बजे नवाटोली कोलोनी में बीते शनिवार वज्रपात से मृत लोगों के परिजनों से मुलाकात कर उनका हालचाल जाना और पीड़ित परिवारों के प्रति शोक व्यक्त की। मौके पर उपस्थित सांसद प्रतिनिधि नीरज शर्मा ने बताया कि इस दुख की घड़ी में पूरा भाजपा परिवार पीड़ित परिवार के साथ है। वज्रपात से हुई मृत्यु पर मिलने वाले मुआवजे की जो भी प्रक्रिया है उसे जल्द से जल्द पूरा कर पीड़ित परिवारों को मुआवजा दिलाया जाएगा। वहीं सरकार के द्वारा इस गांव में बने कोलोनी की हालत अत्यंत दयनीय है पूरा कोलोनी जर्जर हो चुका है। जिसको लेकर सांसद को इस मामले से अवगत कराया जाएगा और कालोनी की मरम्मत कराने का कार्य किया जाएगा। वहीं भाजपा के पदाधिकारियों के द्वारा नवाटोली कालोनी में विभिन्न प्रकार की समस्याओं की जानकारी ली गई और हरसंभव मदद दिलाने का आश्वासन दिया गया। इस मौके पर मुख्य रूप से भाजपा मंडल अध्यक्ष मनोहर बड़ाईक, भाजपा युवा मोर्चा अध्यक्ष भूषण बैगा, जिला महामंत्री अवधेश प्रताप शाहदेव, अमित पांडेय, युवा मोर्चा के रवि रंजन गुप्ता, निखिल सिंह, सुदर्शन रौतिया, बसंत रौतिया, रोहित कुमार सहित गांव के लोग मौजूद थे।

डीसी ने कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय की सभी वार्डनों के साथ की समीक्षा बैठक

वार्डन सुनिश्चित करें, बालिकाओं की पढ़ाई किसी हाल में बाधित ना हो : डीसी

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू डीसी शशि रंजन ने गुरुवार को जिले के कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय के सभी वार्डन के साथ बैठक की। उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की समीक्षा की एवं कई महत्वपूर्ण निर्देश दिये। समीक्षा के दौरान डीसी ने जिला शिक्षा पदाधिकारी को सभी वार्डन से प्रतिदिन उनका अटेंडेंस रिपोर्ट लेने का निर्देश दिया। साथ ही विद्यालयों में मूलभूत सुविधाएं यथा शौचालय, बिजली, पानी, बेंच, कुर्सी आदि की व्यवस्था को दुरुस्त रखने की बात कही। डीसी ने कहा कि बालिकाओं की पढ़ाई किसी भी स्थिति में बाधित नहीं होनी चाहिए यह सभी वार्डन को सुनिश्चित करना है। उन्होंने कहा कि पढ़ाई के दौरान स्थानीय जनप्रतिनिधि या जिला प्रशासन का कोई भी अधिकारी निरीक्षण के लिए जाएं तो भी उस स्थिति में शिक्षिकाएं पढ़ाई को बाधित नहीं करें यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए। ऐसे परिस्थिति में कक्षा के बाद उनको एंटरटेन किया जाना चाहिए। उन्होंने कक्षा 11 व 12 में अध्ययनरत बालिकाओं की शत-प्रतिशत बालिकाओं की उपस्थिति सुनिश्चित कराने की बात कही। इस दौरान कई वार्डन ने कहा कि जब बालिकाओं का स्वास्थ्य खराब होता है तो कई बालिकाएं विद्यालय से अपने घर को चली जाती है इस पर डीसी ने मेडिकल टीम से सभी का जांच करवाने पर बल दिया। उन्होंने पाठ्यक्रम को ससमय पूर्ण कराने पर बल दिया।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय के वार्डन के साथ बैठक करते डीसी शशि रंजन।

कस्तूरबा विद्यालयों में ओपन डाउट सेशन कराने का निर्देश

डीसी ने कहा कि आने वाले समय में सभी विद्यालयों में ओपन डाउट सेशन का आयोजन किया जायेगा। जिसमें जिला प्रशासन के वरीय पदाधिकारी बालिकाओं संग संवाद कर पढ़ाई से संबंधित उनके डाउट्स को क्लियर करने का प्रयास करेंगे। इसके लिए उन्होंने जिला शिक्षा पदाधिकारी को समन्वय बनाते हुए कार्य करने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने सभी वार्डन को विद्यालयों में उच्चतम साफ-सफाई रखने का भी निर्देश दिया। इसके अतिरिक्त उपायुक्त ने कई अन्य निर्देश दिए। इस मौके पर डीडीसी, प्रशिक्षु आईएएस रवि कुमार,जिला शिक्षा अधीक्षक मनोज कुमार व जिला शिक्षा पदाधिकारी अनिल चौधरी समेत अन्य उपस्थित रहे।

गहमागहमी के बीच संपन्न हुई बीस सूत्री की बैठक

आजाद सिपाही संवाददाता

छतरपुर/पलामू। प्रखंड कार्यालय सभागार में गुरुवार को बीस सूत्री की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता बीस सूत्री अध्यक्ष गोपाल प्रसाद सिंह ने की। बैठक में क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों को लेकर गहमागहमी रही। वहीं छतरपुर एमओ निर्मल सिंह के खिलाफ कार्रवाई के लिए विभाग एवं सरकार को लिखने का निर्णय लिया गया। ज्ञात हो कि पहले बैठक में निर्मल सिंह द्वारा आम जनता को अनपढ़ गवार एवं दूसरी बैठक में सरकार द्वारा भ्रष्टाचार को बढ़ाने का बयान दिया था । इसकी जानकारी बीस सूत्री उपाध्यक्ष चंदन प्रकाश सिन्हा ने दिया। साथ ही तीसरी बैठक में बिना कारण बताए अनुपस्थित रहने एवं सही रिपोर्टिंग नहीं देने के कारण ऐसा निर्णय लिया गया। खेती बारी का समय रहने के कारण प्रखंड कृषि पदाधिकारी को यह निर्देश दिया गया की वह किसी भी हालत में किसानों को सरकारी मूल्य पर यूरिया दे। इसके लिए कृषि मित्रों को हरेक खाद बीज दुकानों पर नियुक्त करने का आदेश दिया गया है। मनरेगा के तहत वर्ष 2021 से लेकर अब तक के सभी कुओं की जांच कर वस्तु स्थिति बीस दिनों के अंदर अवगत कराने का आदेश दिया गया। सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्ध योजना के तहत कुछ ऐसे आवेदक थे जिनकी उम्र आवेदन करते समय 19 वर्ष से कम थी लेकिन सरकार को रिपोर्ट भेजते वक्त 19 वर्ष से अधिक हो गयी। जिससे संबंधित कार्रवाई के लि एसीडीपीओ को आदेश देते हुए भुगतान सुनिश्चित करने का निर्णय लिया गया। उपाध्यक्ष चंदन प्रकाश सिन्हा ने कहा कि किसी भी हालत में जनता को सरकार द्वारा दिए जाने वाले सुविधाओं में किसी भ्रकार की असुविधा नहीं होने की बात कही। छात्र-छात्राओं को पोशाक का पैसा नहीं दिया जाना अति गंभीर मामला है। इससे संबंधित कार्रवाई से संबंधित पदाधिकारी को निर्देश दिया गया। मौके में बीडीओ अशोक कुमार, सांसद प्रतिनिधि जितेंद्र कुमार, बीस सूत्री सदस्य, फिरदोस आलम आदि उपस्थित थे।

कांग्रेसी नेताओं ने पलामू डीसी शशि रंजन के साथ की शिष्टाचार मुलाकात

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। पलामू के नव पदस्थापित डीसी शशि रंजन से कार्यालय में जाकर गुरुवार को झारखंड प्रदेश कांग्रेस के महासचिव सत्यनारायण सिंह व सचिव धनंजय कुमार तिवारी ने शिष्टाचार मुलाकात की। उन्हें बुके देकर स्वागत किया। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि नए डीसी से क्षेत्र के विकास कार्य में तेजी आने की अपेक्षा है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के समुचित विकास के लिए सरकार द्वारा संचालित विकास योजनाओं को धरातल पर उतारने में प्रशासनिक पदाधिकारियों का योगदान महत्वपूर्ण रहता है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि नए डीसी की सकारात्मक प्रशासनिक व्यवस्था से हुसैनाबाद समेत पलामू जिले का समूचित विकास होगा।

नहर पर ओपेन पुलिया निर्माण को लेकर किसानों ने दिया छह घंटे धरना

15 दिनों की मोहलत पर किसानों ने रोका धरना प्रदर्शन

आजाद सिपाही संवाददाता

हरिहरगंज/पलामू। हजारों एकड़ भूमि की सिंचाई के मुख्य साधन पर ही पुल की जगह शिवालया ने होम पाइप डालकर उपर से फ्लाई ओवर ब्रिज का निर्माण कर दी। उक्त बातें गुरुवार को झारखण्ड और बिहार से पहुंचे एक हजार किसानों ने शिवालया के मुख्य गेट पर धरना प्रदर्शन के दौरान कही गई। किसानों ने कहा कि बटाने डेम के लेफ्ट केनाल सरसोत मोड़ के समीप एनएच 98 के नीचे से मुख्य नहर गुजरी है। जिससे बिहार और झारखण्ड के सैकड़ो किसानों की हजारों एकड़ जमीन की सिंचाई होती है। जिस पर पुलिया निर्माण न कर करीब ढाई सौ फीट तक होम पाइप लगा दिया गया, जो भविष्य के लिए ठीक नहीं है। किसानों द्वारा दुबटिया मोड़ के समीप शिवालया कंपनी के मुख्य गेट पर टेंट लगार कर धरना

प्रदर्शन किए जाने से करीब छह घंटे कार्य बाधित रहा। वहीं, पुलिस चौकी करती रही। इस दौरान एनएचआई के परियोजना निदेशक मनोज कुमार पांडे ने धरना स्थल पर पहुंच कर किसानों की समस्या को सुना और समाधान के लिए 15 दिनों की मोहलत मांगी। जिसके बाद किसानों ने बेमियादी धरना प्रदर्शन को रोकते हुए ओपेन पुलिया का निर्माण का समाधान नहीं होने पर पुनः बेमियादी धरना प्रदर्शन के साथ सभी कार्य बाधित करने की चेतावनी दी है। वहीं किसानों ने ओपेन पुलिया निर्माण को लेकर परियोजना निदेशक को मांग पत्र शौंपा। इस दौरान कार्यक्रम की अध्यक्षता वीरेंद्र यादव और संचाल इंजिनियर संजय कुमार यादव की ओर से किया गया। सुरक्षा की दृष्टि से अंचलाधिकारी बांसुदेव राय, पुनि सह थाना प्रभारी सुदामा कुमार दास, एसआइ नितीश कुमार, अभय आनंद, धुमा किस्कु, रेणुका टुडू, एएसआई संजय कुमार सिंह मौजूद थे। जबकि धरना प्रदर्शन में मुकुंद मिश्रा, राजकुमार मेहता, प्रमोद यादव, सतेंद्र भुइंया, मथुरा रजक, पूनम यादव, नन्हक बैठा, दीपक कुमार यादव, ललेंद्र यादव, अमरेश मेहता सहित हरिहरगंज प्रखण्ड और औरंगाबाद जिले के टंडवा, नबीनगर के करीब एक हजार किसान शामिल थे।

सावन के महीने में मेहंदी का है अपना पारंपरिक महत्वः एके सिंह

ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल में अंतर सदन मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल के प्रांगण में गुरुवार को छात्रों द्वारा अंतर सदन मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। मेंहदी प्रतियोगिता का शुभारंभ प्राचार्य डॉ एके सिंह एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा दीप प्रज्जवलन कर किया गया। सभी सदन बायरन, इलियट, शेक्सपीयर एवं कीट्स के छात्र तथा छात्राओं ने विषय आधारित मेहंदी कौशल का हाथ पर प्रदर्शन किया। कक्षा पांचवीं से 12वीं तक के छात्रों को दो समूहों में विभाजित किया गया। समूह ए में कक्षा पांचवीं से आठवीं तक और समूह बी में कक्षा 9वीं से 12वीं तक की छात्राएं थी। सभी प्रतिभागियों ने काफी सुंदर और मनमोहक मेंहदी प्रदर्शन किया। जिसके बाद निर्णायक दल ने परिणाम घोषित किया, जिसमें समूह ए में बायरन सदन से वेद परी कक्षा 6ठीं प्रथम, इलियट सदन से सौम्या श्रुति कक्षा आठवीं द्वितीय, रहमत फातिमा कक्षा आठवीं एवं तनु कुमारी कक्षा सातवीं बायरन सदन से संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहे। इसी तरह प्रकार समूह बी में इलियट सदन से क्रमशः रानी वर्षा कक्षा नवीं प्रथम, जिया तिवारी कक्षा 11वीं द्वितीय में रही। शेक्सपीयर सदन से श्रेया कुमारी कक्षा नवीं, कीट्स सदन से नायशा मुकेश सिंह कक्षा नवीं, जबकि इलियट सदन से समीक्षा सिंह कक्षा दसवीं, संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहे। प्राचार्य डॉ एके सिंह ने सभी छात्रों को अंतर सदन मेहंदी प्रतियोगिता की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सावन महीने में मेहंदी का अपना पारंपरिक महत्व है। मेहंदी के प्रयोग से त्वचा की अनेक बीमारियों का इलाज स्वतः हो जाता है। इसके माध्यम से बालकों में श्रृजन क्षमता का भी विकास होता है। उन्होंने सभी शिक्षकों की सराहना करते हुए विद्यालय के छात्रों को अनुशासन, सदाचार एवं सुविचार की भावना को अपने हृदय में जगाए रखने का संदेश दिया। कहा कि ऐसे कार्यक्रम में भाग लेने से छात्रों की मानसिक क्षमता एवं उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। चाहे नृत्य, खेलकूद हो या अन्य कोई प्रतियोगिता, इससे जीवन में सुख-दुख या उतार-चढ़ाव को सहने की क्षमता में वृद्धि होती है।

कृषि विभाग की ओर से नुक्कड़ नाटक कर किसानों को किया गया जागरूक

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। लिश्रामपुर कृषि विभाग के आत्मा की ओर से बघमनवा व गुरहा कला पंचायत में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से किसानों को योजनाओं व फसलों के बारे में जागरूक किया गया। नुक्कड़ नाटक का आयोजन मेदिनीनगर के मनीषा कला दल द्वारा किया गया। नुक्कड़ नाटक व गीत कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को अच्छी खेती, मोटे अनाज, श्री अन्न, कृषि ऋण माफी, पीएम किसान, पीएम कुसुम सहित विभाग द्वारा संचालित कई योजनाओं के बारे में जानकारी दी गयी। एटीएम शशि रंजन ने बताया कि किसानों को जागरूक करने के उद्देश्य से विश्रामपुर प्रखंड के सभी पंचायतो में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया जा रहा है। इस दनि बघमनवा व गुरहा कला पंचायत में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। इस मौके पर युवा समाजसेवी मनीष कुमार सहित कई लोग मौजूद थे।

आठ दिन से युवक लापता, थाना में गुमशुदगी का सनहा दर्ज

आजाद सिपाही संवाददाता

बिश्रामपुर/पलामू। नावा बाजार थाना क्षेत्र के चेचरिया गांव निवासी मनजीत कुमार तिवारी उर्फ गोदन (18) पिछले आठ दिनों से लापता है। परिजनों ने सगे संबंधी सहित सभी संभावित जगहों पर उसकी तलाश की, लेकिन अभी तक उसका कोई सुराग नहीं मिला है। इस संबंध में परिजनों ने नावा बाजार थाने में गुमसुदागी का सनहा भी दर्ज कराया है। लापता युवक मंजीत की मां ने बताया कि प्रत्येक दिन वह घर से खाना खाकर ब्रहमोरिया मोड़ चला जाता था। वहीं सारा दिन घूमता रहता था। फिर शाम को वह वापस घर लौट आता था। लेकिन 26 जुलाई को बाहर गया, पर शाम होने के बाद भी वह घर नहीं लौटा। जिसके बाद उसकी तलास शुरू हुई जो आज तक चल रही है। यहां बताते चलें कि लापता युवक मनजीत उर्फ गोदन मानसिक रूप से विक्षिप्त है, लेकिन वह अपना नाम-पता सहित अपने बारे में सब कुछ बताता है। परिजनों से आम लोगों से भी अपील की कि है कि कहीं किसी को उसका सुराग मिले तो जरूर जानकारी दें।

बीनू प्रसाद गुप्ता का निधन, मेदांता अस्पताल में ली अंतिम सांस

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। मेयर प्रतिनिधि सुनील गुप्ता के बड़े भाई बीनू प्रसाद गुप्ता का रांची के मेदांता हॉस्पिटल में निधन हो गया। वे कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका अंतिम संस्कार बेलवाटीका श्मशान घाट में शुक्रवार की सुबह करने का निर्णय लिया गया है। उधर, निधन की खबर सुनकर काफी लोग सुनील गुप्ता के आवास पर पहुंचे और परिजनों से मिलकर सहानुभूति प्रकट की। चेंबर अध्यक्ष आनंद शंकर ने दुख प्रकट करते हुए कहा कि बीनू प्रसाद गुप्ता काफी मृदुभाषी, मिलनसार और सामाजिक व्यक्ति थे। वहीं, प्रथम महापौर अरुणा शंकर ने भी गहरा दुख प्रकट किया है। चेंबर उपाध्यक्ष कृष्णा अग्रवाल, राजदेव उपाध्याय, रंजीत मिश्रा, राकेश कुमार, भूपेंद्र सिंह, अरविंद अग्रवाल, अरविंद गुप्ता, निगम के कर्मी, व्यवसाई सह वैश्य समाज के प्रदेश अध्यक्ष ज्ञान शंकर, रितेश प्रसाद, आलोक माथुर, निलेश चंद्रा, सुबोध गुप्ता, फिरोजउद्दीन अंसारी आदि ने भी संवेदना प्रकट किया है।

स्पोर्ट्स

भारतीय क्रिकेटर मनोज तिवारी ने गुरुवार को क्रिकेट के सभी फॉर्मेट से सन्यास लेने की घोषणा की। बंगाल के खेलमंत्री मनोज तिवारी ने इंस्टाग्राम के जरिए सन्यास लेने की घोषणा की है।

लिखा : गुडबाय टू द गेम, धोनी की कप्तानी में किया था इंटरनेशनल डेब्यू

मनोज तिवारी ने क्रिकेट के सभी फॉर्मेट से लिया संन्यास

आजाद सिपाही संवाददाता

कोलकाता। भारतीय क्रिकेटर मनोज तिवारी ने गुरुवार को क्रिकेट के सभी फॉर्मेट से संन्यास ले लिया। मनोज तिवारी ने साल 2008 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ इंटरनेशनल डेब्यू किया था। 37 साल के तिवारी ने टीम इंडिया के लिए अपना आखिरी मैच साल 2015 में खेला था। पश्चिम बंगाल के खेल मंत्री का पद संभालने वाले तिवारी ने बंगाल को रणजी ट्रॉफी 2022-23 के फाइनल में भी पहुंचाया। मनोज तिवारी ने इंस्टाग्राम पर लिखा, क्रिकेट के खेल को अलविदा। इस खेल ने मुझे सबकुछ दिया। मेरा मतलब है कि हर एक चीज, जिसका मैंने कभी सपना भी नहीं

देखा था, उस समय की शुरूआत से जब मेरी जिंदगी कई चुनौतियों से जूझ रही थी। हमेशा इस खेल का आभारी रहूंगा और भगवान का भी, जिन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया। तिवारी ने आगे लिखा कि इस मौके पर उन लोगों का धन्यवाद करना चाहूंगा, जिन्होंने मेरी क्रिकेट जर्नी में भूमिका निभाई। मेरे बचपन से लेकर आखिरी कोच तक सभी को धन्यवाद देना चाहूंगा, जिन्होंने मेरी क्रिकेट उपलब्धियों में भूमिका निभाई। पिता समान मेरे कोच मानवेंद्र घोष, जो मेरी क्रिकेट यात्रा के पिलर रहे। अगर वो नहीं होते तो मैं क्रिकेट जगत में कहीं नहीं पहुंच पाता। धन्यवाद सर और आपके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूं क्योंकि पिछले कुछ दिनों से आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मनोज तिवारी ने आगे लिखा, मेरे माता-पिता दोनों का धन्यवाद, जिन्होंने कभी मुझ पर पढ़ाई का दबाव नहीं डाला और क्रिकेट पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित किया। मेरी पत्नी सुष्मिता रॉय का धन्यवाद, जो मेरी जिंदगी में आने के बाद से हमेशा साथ खड़ी रही। उनके समर्थन के बिना शायद मैं आप इस मुकाम पर नहीं पहुंच पाता, जहां खड़ा हूं।

मनोज तिवारी का अंतरराष्ट्रीय करियर

मनोज तिवारी ने 2008 में एमएस धोनी की कप्तानी में अपना इंटरनेशनल डेब्यू किया था। भारत के लिए तिवारी ने 12 वनडे और तीन टी-20 इंटरनेशनल मैच खेले। वनडे में उन्होंने 26.09 की औसत से 287 रन बनाए है। जिसमें 1 शतक और एक अर्धशतक शामिल है। वहीं, बंगाल के लिए क्रिकेट खेलने वाले तिवारी ने फर्स्ट क्लास करियर में 141 मैच खेले, जिसमें 29 शतक और 45 अर्धशतकों की मदद से 9908 रन बनाए और 32 विकेट लिए।

कनाडा में बजा झारखंड पुलिस के जवान का डंका, जीते दो गोल्ड मेडल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड पुलिस के संतोष कुमार बोबेंगा ने दो स्वर्ण पदक जीता है। बोबेंगा ने झारखंड सहित पूरे देश का परचम विश्वपटल पर लहराया है। बता दें कि उन्होंने दोनों स्वर्ण पदक बॉडी बिल्डिंग की प्रतियोगिता में जीते हैं। 28 जुलाई से 6 अगस्त चलने वाले कनाडा के विन्नीपेग शहर में वर्ल्ड पुलिस एंड फायर गेम्स 2023 का आयोजन हो रहा है।

संतोष कुमार बोबेंगा राज्य औद्योगिक सुरक्षा बल में कार्यरत हैं और वर्तमान में बोकारो में पदस्थापित हैं। उनकी इस उपलब्धि से झारखंड पुलिस के सड़ी सिपाही गौरवान्वित हुए हैं। वे संतोष का बेसब्री से इंतजार कर

रहे हैं। जानकारी के अनुसार संतोष शुक्रवार को रांची लौट रहे हैं। वह सुबह के 10 बजे रांची एयरपोर्ट पहुंच जायेंगे।

युवा समाजसेवी ने अपने खर्च से श्रद्धालुओं को भेजा तीर्थाटन पर

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। विश्रामपुर प्रखंड के बरिगावां गांव से गुरुवार को कांवरियों का जत्था देवघर बाबा धाम के लिए रवाना हुआ। इसके पूर्व गांव के शिव मंदिर में सभी कांवरियों ने पूजा अर्चना की। इसके बाद कांवरियों ने कुल देवता व ग्राम देवता की पूजा अर्चना करते हुए पूरे पंचायत का भ्रमण किया। इस दौरान भगवान शिव के जयकारे से पूरा क्षेत्र गुंजायमान रहा। यहां बताते चलें कि युवा समाजसेवी सह पंजरी कला पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि प्रवीण मिश्रा अपने निजी खर्च से बस के माध्यम से श्रद्धालुओं को तीर्थाटन पर भेजा हैं। तीर्थाटन के दौरान श्रद्धालु और कांवरिया देवघर बाबा धाम सहित कई तीर्थ स्थलों पर जायेंगे। प्रवीण मिश्रा ने रवानगी से पहले कांवरियों और श्रद्धालुओं को भगवा अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। जिसके बाद वे खुद भी कांवरियों और श्रद्धालुओं के साथ तीर्थाटन के लिए रवाना हुए। उन्होंने कहा कि बाबा भोले नाथ की भक्ति से शक्ति मिलती है। भक्ति से मिले शक्ति का सदुपयोग करते हुए समाज व राष्ट्र का भला करने का प्रयास करना चाहिए। प्रवीन मिश्रा ने कहा कि भगवान भोले से क्षेत्र में अमन शांति के साथ हरियाली और खुशहाली की दुआ मांगेंगे। मौके पर डबल पांडेय, पिंटू पांडेय, विक्की दुबे, दीपक दुबे,यश दुबे सहित कई लोग मौजूद थे।

सिजुआ एरिया के जीएम अनूप राय ने की रैयतों से वार्ता, आज समाधान निकलने की संभावना

किसी भी तालाब को भरा नहीं जा रहा, ऐसा करनेवालों पर होगी कार्रवाई : एसडीओ

तालाब भराई को लेकर दूसरे दिन भी प्रदर्शन, काम प्रभावित

आजाद सिपाही संवाददाता

लोयाबाद। किसी भी तालाब को भर कर उसका अस्तित्व खत्म नहीं किया जा सकता है। अगर ऐसा हो रहा है तो कार्रवाई होगी। उक्त बातें धनबाद एसडीओ ने कही। वे कनकनी तालाब भरे जाने के पत्रकारों के सवाल का जवाब दे रहे थे। उन्होंने बताया कि सीओ को मामले की देखरेख की जिम्मेदारी सौंपी गयी है। बतातें चलें कि मामला कनकनी के सेंद्रा में स्थित तालाब का है। जहां जमीन को लेकर बीसीसीएल और रैयत अलग-अलग दावे कर रहे हैं। सिजुआ क्षेत्र के कनकनी कोलियरी के सेंद्रा मौजा में तालाब भरने को लेकर उपजे विवाद पर सेंद्रा मौजा की ग्रामीण रैयती महिलाएं विरोध प्रदर्शन भी कर रही है। इस कारण बुधवार से ही आउटसोर्सिंग कंपनी का काम बंद है। बारिश में छाता लेकर महिलाओं ने प्रदर्शन किया। इसके 24 घंटे बाद यानी गुरुवार को बीसीसीएल सिजुआ एरिया के जीएम अनूप राय रैयतों से वार्ता करने पहुंचे। जहां रैयतों ने तालाब का दावा करते हुए जमीन का खतियान भी दिखाए। जीएम ने कागजात देखकर कहा कि इसकी जांच करवाते हैं। तब तक काम चालू करने दिया जाए। हालांकि इस पर रैयतों ने कहा कि 24 घंटे का समय दीजिए। रैयत आपस में बैठक कर शुक्रवार को इसी जगह अपना पक्ष रखेंगे। इस पर जीएम ने कहा अब जांच के बाद ही कुछ कहा जा सकता है। अगर जमीन रैयतों की साबित हुई तो, बीसीसीएल उस जमीन को खरीदने करने के लिए कदम उठाएगी। हालांकि जीएम ने तालाब भरे जाने के सवाल पर चुप्पी साध ली। गौरतलब हो कि नियमतः तालाब की जमीन बीसीसीएल की हो या रैयतों की, उसके अस्तित्व को मिटाया नहीं जा सकता। तालाब में छठपूजा, दशकर्म, मूर्ति विसर्जन सहित ग्रामीण मछली पालन भी किया करते थे। ग्रामीण रैयत धनबाद डीसी सहित राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्य के मुख्यमंत्री के अलावे संबंधित आला अधिकारियों को लिखित पत्र देकर तीन एकड़ 68 डिसमिल में बने पुराने तालाब को भरने की शिकायत भी कर चुके हैं। रैयतों का दावा है कि जमीन हमारी है। बीसीसीएल और रैयतों के बीच न्यायालय में केस चल रहा है। एक बार बीसीसीएल केस हार गई। अब दोबारा केस किया है। बीसीसीएल एक साजिश के तहत रैयतों का हक मार रहा है। रात में तालाब को भरा जा रहा है। रैयतों का विरोध दिन में होता है, जब रैयत घर चले जाते हैं, तो रात 11 बजे से लेकर तीन बजे सुबह तक तालाब को भरने का काम किया जा रहा है। महिलाओं ने दोषी अधिकारियों पर एफआईआर दर्ज करने की मांग की है। इस मौके पर सुगिया देवी, तारणी देवी, द्रौपदी देवी, टूसिया महताईन, कौशल्या देवी, अनिता देवी, तारा देवी रीता देवी, शामिल थी। वहीं जीएम के साथ एजीएम बलदेव महतो, पीओ अनिल सिंह, प्रबंधक गोपाल, एरिया सर्वेयर आशुतोष कुमार, कोलियरी सर्वेयर अभय सिंह, रामअवतार कंपनी के आदित्य सिंह, अंकित सिंह, सुनील सिंह आदि मौजूद थे।

रैयतों से कागजातों की जांच करते सिजुआ एरिया के जीएम अनूप राय व अन्य।

मरने के बाद भी किसी को दे जायेंगे जीवनदान : शिवनाथ

महेशलुंडी पंचायत सचिवालय भवन में अंगदान महोत्सव का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

गिरिडीह। भारतीय अंगदान दिवस के अवसर पर गुरुवार को केंद्रीय पंचायती राज मंत्रालय के आदेशा के आलोक में झारखंड सरकार पंचायती राज विभाग के आदेशानुसार महेशलुंडी ग्राम पंचायत सचिवालय भवन में अंगदान महोत्सव का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देकर ऑर्गन ट्रांसप्लांट की मांग को घटाना है। इसके अतिरिक्त इन मामलों में आम जनमानस में जागरूकता को भी बढ़ावा दिया जाना है। कार्यक्रम में मुखिया शिवनाथ साव, पंचायत सचिव बशारत अली और जनसेवक रंजीत कुमार ने लोगों को अंगदान करने के लिए जागरूक किया। मुखिया ने कहा कि मनुष्य की मृत्यु के बाद शरीर मिट्टी के समान हो जाता है। अगर हमारे द्वारा अंग दान किया जाए और लोगों को अंग दान करने के लिऐ जागरूक किया जाए तो मृत्यु के बाद भी हम इस धरती से जाते-जाते किसी को जीवन दान दे जाएंगे। पंचायत स्तर पर अंगदान करने को इच्छुक लोगों को सम्मानित किया जाएगा और अंगदान करने के लिए व्यापक रूप से ग्राम पंचायत में प्रचार प्रसार किया गया। साथ ही मुखिया शिवनाथ साव ने उपस्थिति ग्रामीणों को अंगदान की प्रतिज्ञा कराई। इस मौके पर वासुदेव दास, देवानंद दस, सागर कुमार, राहुल साव, बजरंगी मंडल, रविंद्र साव, अमेरिका मंडल, अनूप साव, जगदीश दास, कैशर तोहिद, और एसएचजी ग्रुप की महिलाएं उपस्थित थीं।

सीटेट पास अभ्यार्थियों को भी नौकरी देने की मांग को लेकर भाजयुमों ने निकाला मशाल जुलूस

चिरकुंडा (आजाद सिपाही)। स्थानीय नीति, नियोजन नीति और सीटेट पास झारखंडी युवाओं को भी राज्य सरकार शिक्षक बहाली में अवसर। उक्त मांग को लेकर बुधवार की रात भाजयुमो धनबाद ग्रामीण जिला की ओर से जिला अध्यक्ष बंपी चक्रवर्ती की अगुवाई में चिरकुंडा नगर परिषद से शहीद चौक तक मशाल जुलूस निकाला गया। इसमें चिरकुंडा नगर परिषद निर्वतमान अध्यक्ष डब्ल्यू बाउरी, गुड्डू सिंह, राज मिश्रा, मिट्ठू गढयान, विकास उपाध्याय, सुशील चंद्रवंशी, अभिमन्यु कुमार, पवन शर्मा, काशी साव, प्रकाश कुश, बुलन बाउरी, संतोष मिश्रा, सुनील पंडित, पप्पू सिंह, श्रीकांत कुमार, शुभम अग्रवाल, सोनू, चंदन रविदास, सिकंदर, मुदस्सर, एजाज, छोटू आदि उपस्थित थे।

झारखंड राज्य आवास बोर्ड के अध्यक्ष से विधायक डॉ लंबोदर महतो ने की मुलाकात

गोमिया (आजाद सिपाही)। विधायक डॉ लंबोदर महतो ने गुरुवार को झारखंड राज्य आवास बोर्ड के अध्यक्ष संजय पासवान से रांची स्थित आवास बोर्ड के कार्यालय में मुलाकात की। इस दौरान विधायक ने आवास बोर्ड के अध्यक्ष को बताया कि गोमिया गवर्नमेंट कॉलोनी में आवास बोर्ड द्वारा एक हजार से अधिक आवास का निर्माण काफी पहले किया गया था। इन आवासों को पहले गोमिया के एक निजी कंपनी के कर्मचारियों को उपलब्ध कराया गया था, लेकिन अब निजी कंपनी द्वारा आवास को छोड़ दिया गया। वर्तमान में सभी आवास जर्जर हालत में हैं। इन आवासों में कुछ लोग भी रहते हैं। वहीं आवास बोर्ड द्वारा इन आवासों में रह रहे लोगों को आवास अपने नाम पर आवंटित कराकर रहने का आदेश निर्गत किया गया है। लेकिन इन आवासों में ऐसे लोग भी रह रहे हैं जो आवास विभाग द्वारा निर्धारित आवंटन राशि देने में असमर्थ हैं। फिर भी कुछ लोग आवंटन करा कर रह रहे हैं। एक वर्ष पूर्व गवर्नमेंट कॉलोनी में रहने वाले लगभग 60 आवासों को विभाग द्वारा खाली करा दिया गया है। उन आवासों में रहनेवाले लोग अभी भी किसी प्रकार भाड़े के मकान व टूटे फूटे घरों में रहने को विवस हैं। कई लोगों को आवास खाली करने का नोटिस भी दिया गया है। जिससे वे काफी परेशान हैं। विधायक ने आवास बोर्ड के अध्यक्ष से कहा कि आवास काफी जर्जर हालत में है और इसकी मरम्मती भी नहीं कराई जा रही है, इसलिए इन आवासों को कम से कम किराया निर्धारित कर लोगों को आवंटन किया जाय। जिससे लोगों को सुविधा मिल सके। इस पर अध्यक्ष ने विधायक को इस बारे में आवश्यक कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

कोयला मजदूरों को मिलेगा 23 महीने का एकमुश्त एरियर: कैलाश ठाकुर

आजाद सिपाही संवाददाता

फुसरो/बेरमो। एचएमएस से संबंध कोलफिल्ड मजदूर यूनियन के ढोरी क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष कैलाश ठाकुर ने बताया कि सीसीएल के कोलकर्मियों को 23 माह का एरियर का भुगतान एकमुस्त किया जाएगा। बताया कि इस बार कोल इंडिया द्वारा एनसीडब्ल्यू 11वां वेतन समझौते के अनुसार यह भुगतान किया जाएगा। 23 माह का एरियर का भुगतान एकमुस्त करने का आदेश कोल इंडिया सहित सीसीएल कंपनी के महाप्रबंधक गौतम बनर्जी ने पत्र प्रेसित किया है। उन्होंने कहा कि कोल इंडिया के ऑन रोल कर्मियों को सितंबर माह में दिये जाने वाले अगस्त माह के वेतन के साथ 23 माहिनों का एरियर का भी एकमुस्त भुगतान सुनिश्चित करें। उन्होंने ये भी पत्र के माध्यम से कहा कि भुगतान सारे वैधानिक कटौती के साथ किया जाये। कैलाश ठाकुर ने कहा कि एरियर का एकमुस्त भुगतान होने से कोयला मजदूरों के परिवार में खुशहाली आएगी। इसके लिए सीएमयू के महामंत्री रघुनंदन राघवन (एचएमएस) सहित सभी यूनियन के नेताओं ओर कोल इंडिया प्रबंधन को बधाई दिया है।

विधायक कुमार जयमंगल ने जल जमाव के देखते हुए करायी बड़े नाले की सफाई

आजाद सिपाही संवाददाता

फुसरो/बेरमो। बेरमो विधायक कुमार जयमंगल उर्फ अनूप सिंह ने फुसरो नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत रानीबाग में बारिश के मौसम में जल जमाव की समस्या को देखते हुए बड़ा नाला की सफाई करवायी। इसके लिए फुसरो के समाजसेवी उमेश रवानी के नेतृत्व में स्थानीय लोगों ने विधायक से मिलकर समस्या से अवगत करवाया था। बताया था कि बरसात का अभी प्रारंभिक दौर है और नाला में काफी कचड़ा जमा हो गया है। अगर नाला की सफाई नहीं करायी गई तो समस्या विकट रूप ले सकती है। लोगों की मांग पर त्वरित संज्ञान लेते हुए विधायक ने नप अधिकारियों को निर्देश दिया कि जल्द से जल्द बड़ा नाला की सफाई कराए जाए। गुरुवार को विधायक के निर्देश पर नगर परिषद द्वारा युद्ध स्तर पर नाला की सफाई जेसीबी और ट्रैक्टर लगाकर शुरू कर दी गई। कई लोगों ने कहा कि कुछ लोग अपने जमीन बताकर नाले के उपर स्लैब डाल दिये है। जिस कारण नाले की सफाई नहीं हो पा रही है। इससे स्थानीय लोगों को समस्या का सामना करना पड़ रहा है। समाजसेवी उमेश रवानी ने कहा कि बड़ा नाला की सफाई कर गंदे पानी की निकासी व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाएगा। इस अवसर पर मंजूर हुसैन, बुधन सिंह, विकास कुमार, शत्रुघ्न विश्वकर्मा, पंचू यादव, बनारसी यादव, शमशेर, रूपलाल महतो, जगदीश प्रजापति, सोनू वर्मा, शुभम कुमार आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

माइंस रेस्क्यू प्रशिक्षण का समापन

धनसार (आजाद सिपाही)। माइंस रेस्क्यू स्टेशन में 18 जुलाई से चल रहा रेस्क्यू ट्रेनिंग गुरुवार को समाप्त हो गया। माइंस रेस्क्यू स्टेशन में प्रशिक्षण ले रहे 12 अभ्यर्थी को एक कार्यक्रम आयोजित कर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। साथ ही इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। बतातें चलें कि धनसार माइन्स रेस्क्यू स्टेशन में 18 जुलाई से 3 अगस्त तक 12 लोगों को रेस्क्यू ट्रेनिंग दिया जा रहा था। इसमें टाटा से पांच, सेल से तीन और बीसीसीएल से तीन रेस्क्यू सदस्य शामिल थे। सभी 12 रेस्क्यू ट्रेंड लोगों को रेस्क्यू सुपरिटेंडेट पीआर मुखर्जी ने प्रशस्ति पत्र दिया गया। मौके पर अशोक कुमार, अशोक राम, एसएन घोष, आरडी डे, रंजीत मुखर्जी, प्रदीप उरांव आदि मौजूद थे।

संकल्प महिला समिति ने कुष्ठ रोगियों के बीच बांटा सूखा राशन

कतरास (आजाद सिपाही)। अंगारपथरा स्थित कुष्ठ रोगी मोहल्ला में गुरुवार को दीक्षा महिला मंडल के निर्देश पर संकल्प महिला समिति के सदस्यों की ओर से 30 कुष्ठ रोगियों के बीच सामाजिक दायित्व के तहत सुखा राशन चावल, दाल, आलू तेल, मसाले आदि बांटा गया। समिति की उपाध्यक्ष शशि प्रसाद ने कहा कि समिति हमेशा सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है। इस मौके पर संकल्प महिला समिति, कतरास क्षेत्र की उपाध्यक्ष शशि प्रसाद, रेखा कुमार, पिंकी गुप्ता, आशा सांडिल्य, नीलू सिंह, रेणु सिंह, कंचन सिंह, श्रीमती इलियास, फरहीन खान उपस्थित थीं।

भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा ने विधायक का पुतला फूंका

बोकारो (आजाद सिपाही)। भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा की ओर से बिरसा चौक नया मोड़ में कांग्रेस विधायक इरफान अंसारी का पुतला दहन किया। भाजपा नेताओं ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि कांग्रेस विधायक के बयान से पार्टी की मानसिकता एक बार फिर सामने आ गई है। आदिवासी समाज को कांग्रेस ने हमेशा वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल किया है। कांग्रेसी विधायक ने बाबूलाल मरांडी के साथ संपूर्ण आदिवासी समाज का अपमान किया है। वहीं, भाजपा जिला मंत्री सह अनुसूचित जनजाति मोर्चा के प्रभारी जय नारायण मरांडी ने कहा कि विधायक अपना मानसिक संतुलन खो बैठे है। प्रदर्शन करने वालों में गोमिया के पूर्व भाजपा प्रत्याशी लक्ष्मण नायक, भाजपा किसान मोर्चा प्रदेश महामंत्री अर्जुन सिंह, भाजपा जिला महामंत्री संजय त्यागी, भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के प्रदेश प्रवक्ता शंकर रजक, अनिल मुर्मू, जानकी कोड़ा, रघुनाथ टुडू, रीत वरण सोरेन, अभय कुमार गोलू आदि थे।

सीटेट उत्तीर्ण युवाओं को मौका देने की मांग

झारखंडी युवाओं से छलावा कर रही सरकार : विनोद

आजाद सिपाही संवाददाता

धरने पर बैठे भाजयुमो नेता-कार्यकर्ता।

बोकारो। भाजयुमो बोकारो जिला की ओर से स्थानीय नीति, नियोजन नीति और सीटेट पास झारखंडी युवाओं के नियोजन व राज्य में निरंतर हो रही हत्या-बलात्कार को लेकर जिला समाहरणालय के समीप एकदिवसीय धरना दिया। जिसकी अध्यक्षता जिलाध्यक्ष विनोद कुमार ने किया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भाजयुमो के प्रदेश महामंत्री रूपेश सिन्हा ने आरोप लगाया कि राज्य की महागठबंधन सरकार युवाओं को केवल हसीन सपने ही दिखाती है, उसे पूरा नहीं करती है। सरकार युवाओं से छलावा कर रही है। शिक्षक नियुक्ति के नाम पर एक बार पुनः झारखंड सरकार ने राज्य के युवाओं के बड़े तबके को नजर अंदाज किया है। शिक्षक नियुक्ति के लिए सरकार ने विज्ञापन तो निकाला, पर दुर्भाग्य है कि इसमें भी लगभग ढाई लाख प्रशिक्षित एवं सीटेट उत्तीर्ण झारखंडी युवा परीक्षा में शामिल होने से वंचित रह जाएंगे। 2016 के बाद झारखंड में टेट की परीक्षा नहीं हुई है। वर्तमान में झारखंड के अनगिनत नौजवान बीएड एवं डीएलएड की डिग्री होने के बावजूद शिक्षक भर्ती परीक्षा में शामिल होने से वंचित कर दिए गए हैं। वर्ष 2016 के बाद से अब तक झारखंड में शिक्षक पात्रता परीक्षा नहीं ली गई है। सात वर्षों में लगभग ढाई लाख अभ्यर्थी बीएड एवं डीएलएड करने के बाद टेट का इंतजार कर रहे थे। इसमें झारखंड के आदिवासी- मूलवासी युवा अपनी मेधा के बल पर सीटेट उत्तीर्ण हो चुके हैं। वर्तमान में जो 26001 पदों पर शिक्षकों की नियुक्ति की प्रक्रिया का विज्ञापन निकाला गया है इससे स्पष्ट हो चुका है कि राज्य में टेट ना होने के कारण सीटेट उत्तीर्ण करने वाले मेधावी झारखंडी युवाओं को शिक्षक बनने से हेमंत सरकार रोक रही है। जबकि एनसीटीई के प्रावधान के अनुसार यह ढाई लाख झारखंड के बेरोजगार नौजवान शिक्षक बनने के योग्य है। भाजयुमो ने मुख्यमंत्री से मांग की कि अविलंब विज्ञापन में संशोधन कर सीटेट उत्तीर्ण झारखंडी युवाओं को शिक्षक नियुक्ति परीक्षा में शामिल होने का मौका दें। कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री कुलदीप माहथा व धन्यवाद ज्ञापन जितेंद्र गोस्वामी ने किया। इस मौके पर भाजपा किसान मोर्चा प्रदेश महामंत्री अर्जुन सिंह, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य कुमार अमित, जिला उपाध्यक्ष कमलेश राय, मुकेश राय, शंकर रजक, मथुर मंडल, अनिल सिंह, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य ब्रजमोहन दूबे, अविनाश सिंह, विक्की राय, मनोज पांडेय, ममता गोस्वामी, बुलेट सिंह, प्रेम गिरि, कनक कुमार, समर ठाकुर, राघव मिश्र, भानुप्रताप सिंह, विकाश मोदक, निर्भय कुमार, कृष्णा पांडेय, सनी आनंद, आलोक वर्मा, झंटू दे, ललन शर्मा, विशाल गौतम, श्रीकांत राय, सुकोमल पाल, महाराज सिंह चौधरी, अमर चौरसिया, पवन कुमार, अमित कुमार, अर्जुन कुमार, बुद्धेश्वर घोषाल आदि उपस्थित थे।

प्रधानाध्यापकों की मासिक गुरु गोष्ठी का आयोजन

चिरकुंडा (आजाद सिपाही)। शैक्षणिक अंचल निरसा-3 के सभी प्राथमिक, नया प्राथमिक, उत्क्रमित, मध्य विद्यालय के प्रधानाध्यापक की मासिक गुरु गोष्ठी एग्यारकुड प्रखंड स्थित सभागार में आयोजित हुई। जिसकी अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी विनोद कुमार कर्मकारकी ने की। उन्होंने निर्देशित किया गया कि विद्यालय में साफ सफाई, शौचालय की सफाई, मध्याह्न भोजन योजना से संबंधित साफ-सफाई, पोषण वाटिका, रसोईया का जॉब कार्ड के लिए आधार, बैंक पासबुक, जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र छात्रवृत्ति से संबंधित दस्तावेजों की जांच पर बल दिया। वहीं, प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी स्वपन कुमार मंडल ने विद्यालय में आदर्श दिनचर्या का शत-प्रतिशत अनुपालन करने, कार्यालय टेबल पर आदर्श पाठ चर्चा और वार्षिक कैलेंडर रखने, जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र प्रखंड में जमा करने, पोषण वाटिका का निर्माण करने, पोस्ट ऑफिस में खाता खुलवाने, नेतरहाट प्रवेश परीक्षा में आवेदन करवाने, बैंक खाता खुलवाने, जवाहर नवोदय विद्यालय में नामांकन के लिए अधिक से अधिक छात्र-छात्राओं के द्वारा आवेदन करने, परीक्षाफल कक्षा एक से सत्तमतक ई विद्या वाहिनी में अपलोड करने, वैच डेक्स की आवश्यकता वाले विद्यालय को सूची देने, पुस्तक वितरण का ई विद्या वाहिनी में अपलोड करने मध्याह्न भोजन योजना का दैनिक मीनिंग मीनू, बाल विवाह निषेध से संबंधित, ज्ञान सेतु का लक्ष्य शुभम सुबोध का बेसलाइन सर्वे करने, यूनिफार्म के लिए बच्चों का खाता की सूची उपलब्ध कराने, शिशु गणना आदि विषयों पर विस्तार पूर्वक चर्चा करते हुए प्रधानाध्यापकों को निर्देश दिया कि इन सब विषयों का अनुपालन विद्यालय में करना सुनिश्चित करें। बैठक में बीपीएम पवन महतो, अखिल झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ निरसा-3 के अध्यक्ष प्रमोद कुमार झा, कन्हैया सिंह, मनसूर रहमान, संदीप सिन्हा, चंदन मिश्रा, कालीचरण कुमार, मो सोहेल, मुराद हुसैन, विनोद कुमार चौधरी, हेना तावेदार मालती, कावेरी मंडल सुनील भगत, उज्जवल झाल, अशोक कुमार मिश्रा, विनीत कुमार मिश्रा, समीर कुमार दास, विष्णु लाल, उत्तम कुमार घाटी, दिलीप पासवान, राजकुमार, साधना रानी पाल, वैजयंती कुमारी, पवन कुमार कर्ण, नंद किशोर महतो, शमशेर अंसारी, कमलेश सिंह, विनोद यादव, प्रमोद कुमार झा, सुशीला सिंह, संजय सिंह आदि उपस्थित थे।

न्यूज रील्स

बंगाल में घर पर नहीं रख सकेंगे भारतीय पक्षी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में अब लोग भारतीय प्रजाति के पक्षियों को घर पर नहीं रख पायेंगे। वन विभाग घर में पक्षियों को रखने पर रोक लगाने के लिए अधिसूचना जारी करेगा। विदेशी पक्षियों को रखने के लिए वन विभाग से लाइसेंस लेना पड़ेगा। कोलकाता के मिनी चिड़ियाघर में छह अफ्रीकी शेरों को लाया जायेगा। पश्चिम बंगाल के वन मंत्री ज्योतिप्रिय मलिक ने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि लोग अब भारतीय प्रजाति के पक्षियों जैसे तोता, कोकैटू, मुनिया आदि को पिंजरे में बंद कर पालतू जानवर के रूप में घर पर नहीं रख पायेंगे।

78 साल के बुजुर्ग ने नौवीं में एडमिशन लिया

मिजोरम। पढ़ने की और सीखने की कोई उम्र नहीं होती। यह बात पूर्वी मिजोरम के 78 साल के बुजुर्ग ने सच साबित करके दिखायी है। लालरिंगथारा नाम के एक व्यक्ति ने 9वीं क्लास में एडमिशन लिया। जब वह दूसरी क्लास में थे, तो पिता की मौत हो गयी, जिसके बाद उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी। अब वह रोज तीन किमी पैदल चल कर स्कूल जाते हैं और बच्चों के साथ बैठ कर पढ़ते हैं। इसी के साथ न्यू आइकॉन चर्च में गार्ड की नौकरी भी करते हैं।

अखिलेश के साथ मिशन-2024 पर डिंपल भी

लखनऊ। मैनपुरी सांसद और सपा प्रमुख अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल भी 2024 मिशन में जुट गयीं हैं। वह पार्टी कार्यालय में 62 प्रवक्ताओं की बैठक में न सिर्फ शामिल हुईं, बल्कि अपने सुझाव भी दिये। उन्होंने सपा की महिला विंग की राष्ट्रीय अध्यक्ष जूही सिंह के साथ बात की। मौजूदा सियासी मुद्दों पर मंथन किया।

तेजस्वी को सीएम बनाने की लालू को चिंता: प्रशांत किशोर

समस्तीपुर। चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर इन दिनों जन सुराज पदयात्रा पर हैं। गुरुवार को वह समस्तीपुर के रोसरा प्रखंड क्षेत्र पहुंचे। वहां लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि देखिये लालू यादव का लड़का तेजस्वी यादव, 10वीं पास नहीं है और उसको सीएम बनना है। इसकी चिंता लालू को है और वहीं एमए करके आपका लड़का चपरासी नहीं बन पा रहा है, घर में बैठा हुआ है और आपको इसकी चिंता नहीं है। आपने जाति का झंडा उठाया है, आपको धर्म की चिंता है। आपको अपने बच्चों की गरीबी, बेरोजगारी और लाचारी नहीं दिख रही है।

डॉक्टरों, छात्रों, कर्मचारियों और आम लोगों ने अंगदान की शपथ ली

एम्स भुवनेश्वर ने उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ 13वां भारतीय अंगदान दिवस मनाया

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। एम्स भुवनेश्वर ने आज 13वां भारतीय अंग दान दिवस (आईओडीडी) उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ मनाया है। इस अवसर को चिह्नित करने के लिए कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की गयी। जिसका उद्देश्य अंग दान और अंग प्रत्यारोपण की आवश्यकता वाले रोगियों पर इसके जीवन-रक्षक प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। इस दिन कई संकाय सदस्यों और अन्य कर्मचारियों के साथ-साथ जनता ने अंग दाता बनने का संकल्प लिया, जो इस नेक काम के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दशार्ता है। इस कार्यक्रम में आकर्षक गतिविधियों की एक श्रृंखला शामिल थी, जिसमें नर्सिंग कॉलेज, एम्स भुवनेश्वर के छात्रों द्वारा प्रस्तुत एक माइम शो भी शामिल था, जिसने उपस्थित लोगों के बीच अंग दान के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाई। विचारोत्तेजक प्रदर्शन के माध्यम से, छात्रों ने अंग दाता बनने के महत्व पर प्रकाश डाला और दान प्रक्रिया से जुड़े मिथकों और गलतफहमियों को दूर किया। गतिविधियां शुरू करने के लिए, राष्ट्रीय संस्थान के ओपीडी फोयर में एक विशेष बैठक आयोजित की गयी। जिसमें डॉ. पीआर महापात्रा (ईडी-प्रभारी और डीईएएन अकादमिक), चिकित्सा अधीक्षक डॉ. डी.के. परिदा और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया और इसके महत्व और आवश्यकता पर प्रकाश डाला। अंग दान। डॉ. संजीब भोई (न्यूरोलॉजी), डॉ. आशीष पटनायक (न्यूरोसर्जरी), डॉ. संगीता साहू (ट्रॉमा और इमरजेंसी), डॉ. भागीरथी द्विवेदी (बाल रोग), डॉ. प्रभास रंजन त्रिपाठी (एनाटॉमी) सहित डॉक्टरों की टीम ने मानदंडों पर जोर दिया और मृतक दानदाताओं का महत्व, जो समय की मांग है। बैठक में डॉ. संदीप पांडा (नेफ्रोलॉजी) और डॉ. मनोज दास (यूरोलॉजी) ने एम्स भुवनेश्वर में रीनल ट्रांसप्लांट के बारे में अपने अनुभव साझा किए। नर्सिंग कॉलेज की डॉ. धात्रिरी स्वैन ने दाताओं को तैयार करने की प्रक्रिया में नर्सिंग देखभाल की भूमिका का उल्लेख किया। डॉ. बी डी पटनायक (सर्जिकल गैस्ट्रोएंटरोलॉजी) द्वारा समन्वित इस कार्यक्रम में अंग दान को बढ़ावा देने के लिए एक हस्ताक्षर अभियान भी देखा गया। एम्स भुवनेश्वर के कार्यकारी निदेशक डॉ. आशुतोष विश्वास ने क्षेत्र में अंग दान को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर देते हुए संकाय, कर्मचारियों और छात्रों की उत्साही भागीदारी के प्रति अपनी सराहना व्यक्त की। यहां यह ध्यान दिया जा सकता है कि, एम्स भुवनेश्वर ने अंग प्रत्यारोपण का समर्थन करने के लिए पहले ही महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। संस्थान ने सफलतापूर्वक किडनी प्रत्यारोपण कार्यक्रम शुरू किया है, जिसने अंतिम चरण की किडनी की बीमारी से पीड़ित रोगियों को नई आशा प्रदान की है। इसके अलावा, संस्थान जल्द ही एक मृत अंग दान कार्यक्रम और यकृत प्रत्यारोपण शुरू करने के लिए पूरी तरह तैयार है। यह कार्यक्रम निकट भविष्य में शुरू किये जाने वाले मृतक दाता कार्यक्रम को गति प्रदान करेगा।

एनटीपीसी इआर-टू मुख्यालय में विश्व अंगदान की शपथ

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। अंग दान के बारे में जागरूकता अभियान के हिस्से के रूप में और अंग दान से जुड़े मिथकों को दूर करने और कर्मचारियों को अंग दान करने के लिए प्रेरित करने के लिए, 3 अगस्त को एनटीपीसी पूर्वी क्षेत्र टू (द्वितीय) में भारतीय अंग दान दिवस मनाया गया। एनटीपीसी पूर्वी क्षेत्र टू के क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक श्री पार्थ मजूमदार ने ईआर-क्क मुख्यालय के कर्मचारियों को अंग दान की शपथ दिलाई।

गृह मंत्री अमित शाह ओड़िशा के दो दिवसीय दौरे पर आज पहुंचेंगे भुवनेश्वर

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। केंद्रीय गृह मंत्री और पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह कल ओड़िशा के दो दिवसीय दौरे पर आ रहे हैं। अमित शाह शुक्रवार रात को भुवनेश्वर हबाई अड़े पर पहुंचेंगे। अमित शाह शनिवार सुबह विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों में शामिल होंगे। इसके बाद अमित शाह दोपहर में प्रदेश कार्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं से बातचीत करेंगे।

प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल ने बताया कि अमित शाह शाम को दिल्ली लौट जायेंगे।

अंगदान से मृत्यु के बाद भी आठ लोगों की जान बचायी जा सकती है

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। अपनी 15 साल की लड़की की मौत की पुष्टि हो गयी है, यह जानने के बाद पिता और मां के पैरों के नीचे से भले ही जमीन खिसक गयी लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी, बल्कि उस पल में किसी और की जान बचाने का मन बना लिया। उनकी बेटी की मृत्यु के बाद उन्होंने 2 किडनी दान करने का फैसला किया। 17 मई 2022 को इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड सम अस्पताल में ब्रेन ट्यूमर के कारण ब्रह्मपुर क्षेत्र की इस

लड़की की मृत्यु के बाद, उसके दो गुर्दों को हटा दिया गया और अंग दान की प्रक्रिया में सफलतापूर्वक दो अन्य रोगियों के शरीर में प्रत्यारोपित किया गया। भारतीय अंग दान दिवस के अवसर पर गुरुवार को अस्पताल द्वारा आयोजित अंग दान समारोह में लड़की के पिता सपन कुमार बिंधाणी और मां डॉ. सुनीता प्रधान ने इस अनुभव को साझा किया। आईएमएस और सम अस्पताल में भारतीय अंग दान दिवस के अवसर पर आयोजित अंग दान महोत्सव में श्री बिंधाणी और डॉ. प्रधान को अस्पताल द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए राज्य अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (एसओटीओ) के संयुक्त निदेशक डॉ. विभूति भूषण नायक ने डॉक्टरों और जनता के बीच इसके बारे में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए अंग दान के महत्व के बारे में बताया। डॉ. नायक ने कहा कि एक मृत व्यक्ति से निकाले गए अंग आठ अन्य व्यक्तियों की जान बचाने में मदद कर सकते हैं। एक जीवित व्यक्ति किडनी, लीवर का एक हिस्सा या त्वचा दान कर सकता है। लेकिन मृत्यु के बाद जो अंग निकाले जा सकते हैं उनमें गुर्दे, यकृत, फेफड़े, छोटी आंत, अग्न्याशय, आंखें, हृदय, त्वचा, हड्डी और ऊतक शामिल हैं, उन्होंने कहा। प्रोफेसर (डॉ.) संघमित्रा मिश्र डीन आईएमएस और सम अस्पताल ने अंग दान के महत्व को रेखांकित किया और लोगों से जरूरत पड़ने पर इस पर विचार करने का आग्रह किया। चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर पुष्पराज सामंतसिंहार ने कहा कि अस्पताल में रोबोटिक सर्जरी शुरू करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। इस अवसर पर सुबह अस्पताल द्वारा एक वॉकथॉन का आयोजन किया गया।

एनटीपीसी को मिला उत्तरी धादु (पूर्व) कोयला ब्लॉक

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची/भुवनेश्वर। भारत की सबसे बड़ी एकीकृत बिजली कंपनी एनटीपीसी लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी एनटीपीसी माइनिंग लिमिटेड (एनएमएल) ने कोयला मंत्रालय द्वारा हाल ही में संपन्न कोयला ब्लॉक नीलामी में उत्तरी धादु (पूर्व) कोयला ब्लॉक के लिए बोली जीती। कठोर प्रयासों और रणनीतिक योजना के बाद, एनएमएल ने झारखंड में उत्तरी धादु (पूर्व) कोयला ब्लॉक से कोयला विकसित करने और निकालने का अधिकार सुरक्षित कर लिया है, जिसमें 439 मिलियन टन का भंडार है और अधिकतम क्षमता 4 मिलियन टन प्रति वर्ष है। यह एनएमएल की पहली व्यावसायिक कोयला खदान होगी. यह सफल बोली एनएमएल के लिए महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा, जो भारत की ऊर्जा सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है, और एक जिम्मेदार कॉर्पोरेट नागरिक के रूप में, एनएमएल यह सुनिश्चित करेगा कि सभी खनन गतिविधियां उच्चतम सुरक्षा और स्थिरता मानकों का पालन करते हुए, पर्यावरण की देखभाल के साथ की जाएं। कोयला ब्लॉक नीलामी में सफल बोली, एनटीपीसी की मजबूत दृष्टि, दृढ़ता और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

वेदांत एल्युमीनियम की शुभलक्ष्मी कोऑपरेटिव ने महिला उद्यमियों के लिए झाड़ू बनाने का प्रशिक्षण लांच किया

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। भारत के सबसे बड़े एल्युमीनियम उत्पादक वेदांता एल्युमीनियम ने प्रोजेक्ट सुभलक्ष्मी उद्योगिनी के तहत पेश किए गए कई उद्यमिता विकास अवसरों के एक हिस्से के रूप में झाड़ू बनाने की पहल शुरू करने के लिए प्रसिद्ध भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई) के साथ साझेदारी की है। वेदांत एल्युमीनियम द्वारा समर्थित भारत की सबसे बड़ी ग्रामीण महिला सहकारी समितियों में से एक, सुभलक्ष्मी सहकारी का दूसरा चरण। उद्यम का उद्घाटन झारसुगुड़ा के किरमिरा ब्लॉक के चेलियापाड़ा गांव में, किरमिरा

ब्लॉक की ब्लॉक अध्यक्ष कृष्णप्रिया साहू और शुभलक्ष्मी सहकारी बोर्ड के सदस्यों की उपस्थिति में किया गया। इसका उद्घाटन कोलाबीरा ग्राम पंचायत के तराईकेला गांव में ग्राम सरपंच चेतनिया नाइ की उपस्थिति में किया गया। झाड़ू बनाने वाले उद्यम में किरमिरा और कोलाबिरा ब्लॉक के 15 गांवों की 100 से अधिक महिलाएं प्राकृतिक रूप से उगने वाली झाड़ू घास को इकट्ठा करने और उसके बाद पर्यावरण के अनुकूल झाड़ू बनाने में शामिल होंगी। उद्यम की योजना अगले छह महीनों में प्रति माह लगभग 12,000 झाड़ू बनाने की है। जिसके बाद उत्पादन को और बढ़ाया जायेगा। झाड़ूओं को सुभलक्ष्मी सहकारी के सदस्यों द्वारा प्रबंधित झाड़ू संग्रह केंद्र में जमा किया जाएगा, जिसके माध्यम से झाड़ू को बिक्री के लिए थोक विक्रेताओं को वितरित किया जाएगा। सहकारी सदस्यों की उद्यमशीलता की भावना को प्रोत्साहित करते हुए, श्री सुनील गुप्ता, सीओओ, वेदांता लिमिटेड - एल्युमीनियम बिजनेस ने कहा, शुभलक्ष्मी सहकारी समिति कॉर्पोरेट और सामुदायिक सहयोग के सकारात्मक परिणामों के लिए एक उल्लेखनीय प्रमाण है, जो वास्तविक सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देती है। ग्रामीण महिलाएं. वेदांता एल्युमीनियम में हम उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित।
संपादक : हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक*** **:** विनोद कुमार, ***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**